www.navpradesh.com

दैनिक नवप्रदेश
अविरल वर्ण तमस पर प्रहार
प्रदेश के साथ पूरा देश...

अंदर के पृष्ठों पर ❖❖ 2 | अभिव्यक्ति 4 | छत्तीसगढ़ 6 | आंचलिक 7 | मनोरंजन/खेल/व्यापार

RNI NO.CHHHIN/2012/41806 रायपुर, मंगलवार 24 मई 2022, शुक्ल पक्ष अष्टमी, विक्रम संवत-2078 वर्ष-11 अंक-103 पृष्ठ-08 मूल्य-4 रुपए रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

//-- सुविचार --//

अपनी लाइफ में हमेशा दूसरों को समझने की कोशिश कीजिए, परखने की नहीं!

आज बेबाक

क्रिकेटर से कामेडियन और फिर भाजपा से सांसद बनने के बाद कांग्रेस के विधायक व पंजाब के मंत्री बनने वाले नवजोत सिंह सिद्धु अब सरकारी मेहमान बन गए है। पटियाला जेल की एक बैरक उनका नया ठिकाना है। जहां उनका खाना पीना और सोना सब हराम हो गया है। कुछ समय का कष्ट है। एक साल की सजा में एक माह का पेरोल मिल ही जाएगा। जेल डाक्टर उनकी कोई गंभीर बीमारी ढूंढ निकालेगा और चार पांच माह तक अस्पताल में रहकर ऐश कर लेंगे। तुलसी दास जी ने ऐसे ही नहीं कहा था कि समरथ को नहीं दोष गोसाई।

सूर्योदय

उदय : 5.29 प्रात:

अस्त : 7.05 संध्या

जनसंख्या

विश्व : 7,948,055,490

भारत : 1,405,976,240

बाजार

सेंसेक्स : 54288.61

निफ्टी : 16214.70

गोल्ड : 51,430 प्रति 10 ग्राम

चांदी : 62,100 प्रति किग्रा

अण्डा दर : 4.66 प्रति नग

प्रदेश का मौसम

स्थान	अधिकतम	न्यूनतम
रायपुर	41.4	27.6
बिलासपुर	41.6	25.6
जगदलपुर	38.6	26.1
अंबिकापुर	37.3	24.8

आज का दिवस

विश्व मेट्रोलॉजी दिवसः ग्रेगोरी कैलंडर के अनुसार मई 24 किसी वर्ष में दिन संख्या 144 है और यदि लीप वर्ष है तो दिन संख्या 145 है। भारत और विश्व इतिहास में 24 मई का अपना ही एक खास महत्व है, क्योंकि इस दिन कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटी जो इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए दर्ज होकर रह गईं हैं। आईये जानते हैं 24 मई की ऐसी ही कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं जिन्हे जानकर आपका सामान्य ज्ञान बढ़ेगा। एकत्रित तथ्य ऐसे होंगे जैस आज के दिन जन्मे चर्चित व्यक्ति, प्रसिद्ध व्यक्तियों के निधन, युद्ध संधि, किसी देश के आजादी, नई तकनिकी का अविष्कार, सत्ता का बदलना, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दिवस इत्यादि।

शौचालय घोटाला: किरीट सोमैया की पत्नी ने संजय राउत पर किया मानहानि केस

मुंबई। बीजेपी नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया ने शिवसेना सांसद संजय राउत के खिलाफ 100 करोड़ रुपये का मानहानि का मुकदमा दायर किया है। मेधा सोमैया का आरोप है कि संजय राउत ने बिना किसी सबूत के उनका और उनके परिवार का नाम शौचालय घोटाले में घसीटा है। संजय राउत ने मेधा और पति किरीट सोमैया पर भायंदर नगर निगम के तहत आने वाले इलाके में सार्वजनिक शौचालय के निर्माण के नाम पर 100 करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप लगाया था।

गरमा-गरम

बॉलीवुड फिल्म में मछली का जाल फेंकते नजर आएंगे सीएम भूपेश, फिल्म में भी सीएम के किरदार में

फिल्म 'मेरा संघर्ष' की शूटिंग घोटिया में भी हुई, सीएम से तालाब में जाल फेंकवाकर की गई शूटिंग

- **हीरो जब मछली पालन करके एक बड़ा आदमी बनता है तो उनके सम्मान में खुद मुख्यमंत्री उस गांव में आते हैं, इसी सीन की शूटिंग में शामिल हुए सीएम, घोटिया में निषाद समाज के अधिवेशन में पहुंचे थे सीएम**

सुप्रीत शर्मा

बालोद/नवप्रदेश। संकेत सरजन और काशी फिल्म प्रोडक्शन मुंबई के बैनर तले बनने वाली हिंदी फिल्म-मेरा संघर्ष की शूटिंग बालोद जिले में शुरू हुई है। जिसका एक सीन रविवार को डौंडी ब्लॉक के ग्राम घोटिया में भी फिल्माया गया। इसकी खास बात यह थी कि इस सीन में राज्य के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी मुख्यमंत्री के ही रूप में नजर आएंगे। सीएम से फिल्म में जाल डलवाया गया है। सीएम के तालाब में जाल डालते हुए इसकी शूटिंग हुई है।

फिल्मी कहानी में असली सीएम- दरअसल फिल्म की कहानी में हीरो जब मछली पालन करके एक बड़ा आदमी बनता है तो उनके सम्मान में खुद मुख्यमंत्री उस गांव में आते हैं और फिर हीरो के कहने पर मुख्यमंत्री तालाब में जाल डालकर उसके मछली उद्योग की ■ शेष पृष्ठ 6 पर

शूटिंग की लोगों को भनक तक नहीं

यह जानकर आपको हैरानी होगी कि इस दौरान मौजूद अधिकतर लोगों को इसकी जानकारी नहीं थी कि वहां कोई फिल्म की शूटिंग हो रही है और जो भी लोग वहां खड़े हैं वह भी फिल्म में दिखाई देंगे। लोग इसे निषाद समाज का कार्यक्रम का हिस्सा समझ रहे थे लेकिन असलियत में वह फिल्म की शूटिंग हो रही थी। इस दौरान संसदीय सचिव व गुंडरदेही के विधायक कुंवर सिंह निषाद भी मौजूद थे। जिनके संरक्षण में उक्त बॉलीवुड फिल्म निर्माणाधीन है। यह फिल्म मछली पालन के जरिए अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के संघर्ष और प्रयासों को दर्शाती है। यह फिल्म कई मायनों में जीवन को प्रेरित करेगी और राज्य के मत्स्य पालकों के हित में है। बालोद जिले में इसकी शूटिंग ग्राम मुल्ले में चालू है। इसी क्रम में घोटिया में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा तालाब में जाल फेंकने का दृश्य फिल्माया गया।

दंतेवाड़ा नेक्स्ट, अब बनेगा यूके और यूएस में बेस्ट विदेशों में बिकेंगे दंतेवाड़ा में बने कपड़े

बस्तर संभाग पहुंचे सीएम भूपेश, आदिवासी महिलाओं ने 16 महीने में किया 50 करोड़ का व्यापार, 800 लोगों को मिला रोजगार

नवप्रदेश संवाददाता

दंतेवाड़ा। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने राज्यव्यापी भेंट-मुलाकात कार्यक्रम के तहत सोमवार को फिर से बस्तर संभाग के दौरे पर पहुंचे। इस चरण के पहले दिन वे दंतेवाड़ा पहुंचे। दो गांवों में लोगों से भेंट मुलाकात के बाद आदिवासी समाज के सम्मेलन में भी शामिल हुए। वहीं मुख्यमंत्री भूपेश बघेल आज मंगलवार को दंतेश्वरी माई के मंदिर में पूजा-अर्चना कर उन्हें 11 हजार मीटर लंबी चुनरी चढ़ाने वाले हैं। दौरे के पहले दिन अपने टैक्सटाइल यूनिट की वजह से देश भर में चर्चित दंतेवाड़ा के नवाचार डेनेक्स की नई यूनिट का शुभारंभ सीएम ने कटेकल्याण में किया। यहां 100 महिलाएं गारमेंट्स बनाएंगी। इसी के साथ डेनेक्स के पांचवे यूनिट छिंदनार का एमओयू हुआ। यह एमओयू डेनेक्स एफ पीओ और एक्सपोर्ट हाउस तिरपुर के बीच हुआ जो तमिलनाडू के कोयंबटूर में होल सेल की देश की सबसे बड़ी यूनिट में से एक है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि दंतेवाड़ा में आप लोगों का नवाचार देश ■ शेष पृष्ठ 6 पर

दंतेश्वरी मंदिर में की पूजा-अर्चना

सीएम ने दंतेवाड़ा जिले के कटेकल्याण में दंतेश्वरी माता मंदिर में पूजा अर्चना कर, प्रदेश और क्षेत्रवासियों की खुशहाली की कामना की। उन्होंने मंदिर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में जिले की 67 देवगुड़ियों के कायाकल्प का लोकार्पण किया। आदिवासी संस्कृति के संरक्षण और उनके आस्था के केन्द्रों को सहेजने के उद्देश्य से राज्य शासन द्वारा 6 करोड़ 70 लाख रूपए की लागत से इन देवगुड़ियों के सौन्दर्यीकरण और परिसर के विकास का कार्य कराया गया है। इन देवगुड़ियों में कटेकल्याण विकासखण्ड की 16, दंतेवाड़ा विकासखण्ड की 27, गीदम विकासखण्ड की 19 और कुआकोंडा विकासखण्ड की 5 देवगुड़ी शामिल हैं।

16 महीने पहले हुई स्थापना

अब से लगभग 16 महीने पहले छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य दंतेवाड़ा जिले में महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन ने ग्राम पंचायत हारम में नवा दन्तेवाड़ा गारमेन्ट फैक्ट्री की स्थापना की। चूंकि कपड़े का ब्रांड नेम होना जरूरी था तो यहां बने कपड़ो को ब्रांड नाम दिया गया 'डेनेक्स'। डेनेक्स का अर्थ है 'दन्तेवाड़ा नेक्स्ट'। इस ब्रांड में दन्तेवाड़ा जिले की समृद्धि, परम्परा एवं संस्कृति की झलक दिखाई ■ शेष पृष्ठ 6 पर

मुख्यमंत्री ने लिया चापड़ा चटनी का स्वाद

बारसूर में सीएम ने रामलाल नेगी के घर भोजन ग्रहण किया। इस मौके पर उन्होंने बस्तर के हाट बाजार का सबसे चर्चित पकवान चापड़ा चटनी खाया। चापड़ा चटनी बहुत स्वादिष्ट होती है और इसमें औषधिय गुण भी होते है। चापड़ा चटनी आम के पेड़ के पत्तों में रहने वाली चीटियों से बनाई जाती है। बस्तर में आने वाले पर्यटकों का एक आकर्षण चापड़ा चटनी भी होता है। इसके साथ ही उन्होंने छिंदाड़ी भी चखी। यह छिंद की एक विशेष किस्म की चटनी होती है। पूरे बारसूर क्षेत्र में छिंद के पेड़ बहुत पाए जाते है, जिसकी चटनी काफ ी प्रचलित है। इसके साथ ही मीठे में तीखूर बर्फी परोसा ■ शेष पृष्ठ 6 पर

16 महीने में 50 करोड़ की कमाई

बीते 16 माह में ही डेनेक्स की चार यूनिट से लगभग 50 करोड़ रूपए मूल्य के 6 लाख 85 हजार कपड़ों का लॉट बंगलोर भेजे जा चुका है, जहां से इनका विक्रय पूरे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हो रहा है. दंतेवाड़ा नेक्स्ट यानि की डेनेक्स से दंतेवाड़ा के लगभग 800 लोगों को रोजगार मिला है. कभी गरीबी के साये में दिन बिताने वाली महिलाएं आज प्रतिमाह 7000/- रूपए से ज्यादा की आय अर्जित कर रही हैं। अभी तक ■ शेष पृष्ठ 6 पर

कटेकल्याण में की गई बड़ी घोषणाएं...

- कटेकल्याण में मिनी स्टेडियम के निर्माण की घोषणा।
- कटेकल्याण में बिजली की समस्या दूर करने के लिए सब स्टेशन स्थापित करने की घोषणा।
- कटेकल्याण से जुड़े आश्रित गांव मोखपाल में मंगल भवन के निर्माण की घोषणा।
- कटेकल्याण दंतेश्वरी मंदिर में तालाब के सौंदर्यीकरण की घोषणा।
- कटेकल्याण के आश्रित गांव लखारास ■ शेष पृष्ठ 6 पर

ज्ञानवापी केस: 7 मांगों पर 45 मिनट तक दलीलें, फैसला आज

नई दिल्ली। ज्ञानवापी मस्जिद विवाद मामले पर सोमवार को वाराणसी की जिला अदालत में सुनवाई हुई। दोनों पक्षों की दलीलें सुनकर कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया है। यह फैसला मंगलवार को दोपहर 2 बजे आएगा। आगे किस तरह सुनवाई होगी इसकी रूपरेखा क्या होगी यह सब भी आज ही तय होगा। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने यह मामला वाराणसी कोर्ट को ट्रांसफर किया था। सुप्रीम कोर्ट ने अदालत को 8 हफ्ते में सुनवाई पूरी करने का निर्देश दिया है।

ज्ञानवापी मामले में वाराणसी जिला जज की अदालत में आज सुनवाई पूरी हो गई है। दोनों पक्ष की दलीलें सुनने के बाद जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेस की अदालत ने फैसला सुरक्षित रखा है। ज्ञानवापी परिसर में मां श्रृंगार गौरी की दैनिक पूजा-अर्चना की इजाजत देने और अन्य देवी-देवताओं को संरक्षित करने को लेकर दायर वाद की सुनवाई सोमवार को हुई। इस दौरान कचहरी परिसर और आसपास सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था रही।

जमानत की सभी याचिकाएं हुई ट्रांसफर

जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेस की अदालत ने जमानत की सभी याचिकाओं को दूसरी अदालत में ट्रांसफर कर दिया है। जिला जज आज सिर्फज्ञानवापी के मसले पर सुनवाई करेंगे। नागरिक प्रक्रिया संहिता (सीपीसी) के आदेश 7 नियम 11 के तहत के वाद की पोषणीयता पर पहले सुनवाई होगी।

ये है मामला

बीते 18 अगस्त 2021 को नई दिल्ली की रहने वाली राखी सिंह एवं बनारस की चार महिलाओं लक्ष्मी देवी, रेखा पाठक, मंजू व्यास और सीता साहू ने ज्ञानवापी परिसर स्थित मां श्रृंगार गौरी की प्रतिदिन पूजा-अर्चना करने एवं परिसर स्थित अन्य देवी-देवताओं की विग्रहों को सुरक्षित रखने की मांग करते हुए सिविल जज (सीनियर डिवीजन) रवि कुमार दिवाकर की अदालत में वाद दायर किया था। वादी पक्ष की अपील पर सुनवाई करते हुए अदालत ने मौके की वस्तुस्थिति जानने के लिए वकील कमिश्नर नियुक्त करने का आदेश जारी किया था।

जापान के चार शीर्ष बिजनेस लीडर्स से मिले मोदी

टोक्यो (वार्ता)। जापान की दो दिन की यात्रा पर पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को यहां सबसे पहले जापान के चार शीर्ष बिजनेस लीडरों से मुलाकात करके उन्हें भारत में व्यापार एवं निवेश संभावनाओं के बारे में जानकारी दी और उनका लाभ उठाने की अपील की। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत एवं जापान के चतुष्कोणीय गठजोड़ (क्वाड) की शिखर बैठक में भाग लेने यहां आये श्री मोदी ने अपनी कारोबारी मुलाकातों की शुरूआत एनईसी कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष डॉ. नाबुहीरो एंदो से की और इसके बाद वह फास्ट रिटेलिंग कंपनी के अध्यक्ष एवं सीईओ तादाशी यानाई, सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के वरिष्ठ सलाहकार ओसामु सुजुकी तथा सॉफ्टबैंक ग्रुप कॉर्प के बोर्ड निदेशक मासायोशी सोन से भी मिले।

श्री एंदो के साथ मुलाकात में श्री मोदी ने भारत के दूरसंचार क्षेत्र में एनईसी की भूमिका की सराहना की। चेन्नई अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा कोच्चि लक्षद्वीप ऑप्टिकल फाइबर परियोजनाओं में एनईसी का योगदान अहम है। प्रधानमंत्री ने उत्पादकता लिंक इन्सेंटिव योजना को रेखांकित किया तथा भारत में कराधान एवं श्रम कानूनों में उदारीकरण की जानकारी देने के साथ ही नयी उभरती तकनीक की भी चर्चा की। श्री तादाशी यानाई से मुलाकात में श्री मोदी ने भारत में वस्त्र कारोबार में वृद्धि तथा ■ शेष पृष्ठ 6 पर

जापानी अखबार में छपा मोदी का लेख

टोक्यो ।(वार्ता)। जापान के लोकप्रिय समाचार पत्र योमिउरी शिंबुन ने भारत एवं जापान के बीते 70 वर्षों के रिश्तों और साझीदारी पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक लेख सोमवार को प्रकाशित किया है। जापानी भाषा में प्रकाशित इस लेख में प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों देशों के बीच विगत सात दशक के जीवंत संबंधों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं और दोनों देशों की साझीदारी को शांति, स्थिरता एवं समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण बताया है। मोदी ने ट्विटर पर इसकी जानकारी साझा करते हुए कहा कि इस लेख में भारत एवं जापान की विशेष मित्रता की यात्रा को रेखांकित किया है, जिसने गौरवशाली 70 वर्ष पूरे किए हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, भारत और जापान के बीच जीवंत संबंधों पर एक लेख लिखा है। शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए हमारी एक साझेदारी है। 70 गौरवशाली वर्षों को पूर्ण करने ■ शेष पृष्ठ 6 पर

ताइवान को धमकाने पर भड़के, बाइडेन, 'खतरे से खेल रहा चीन, भुगतना होगा'

टोक्यो(वार्ता)। जापान में आयोजित होने जा रहे क्वाड समिट से पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने चीन को ताइवान के मसले पर कड़ा संदेश दिया है। जो बाइडेन ने कहा कि यदि ताइवान पर चीन हमला करता है तो फिर अमेरिका उसका जवाब देगा। उन्होंने कहा कि ऐसा होने की स्थिति में अमेरिका की ओर से ताइवान को सैन्य मदद दी जाएगी। यही नहीं उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि चीन खतरे से खेलने का प्रयास कर रहा है। मीडिया से बात करते हुए जो बाइडेन ने कहा कि यह हमारा कमिटमेंट है कि ताइवान की रक्षा करेंगे। उन्होंने कहा कि वन चाइना पॉलिसी को लेकर सहमत हैं, लेकिन किसी भी क्षेत्र पर यदि चीन की ओर से जबरन कब्जा किया जाता है तो फिर उसका जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा, 'हम वन चाइना पॉलिसी से सहमत हैं। हमने उस पर हस्ताक्षर किए हैं, ■ शेष पृष्ठ 6 पर

संपादकीय

राज्यों पर बढ़ता कर्ज का बोझ

भारत के लगभग आधे प्रदेशों में मुफ्तखोरी की योजनाओं के चलते वहां की सरकारों पर कर्ज का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। इसमें सबसे आगे पंजाब है। कमोवेश यही स्थिति अन्य राज्यों की है जहां सरकार का हर साल सैकड़ों करोड़ रूपए सिर्फ ब्याज चुकाने पर व्यय हो जाता है। दरअसल सत्ता पाने के लिए राजनीतिक पार्टियां आसमानी वादे कर लेती है और फिर उन्हे अमलीजामा पहनाने के लिए उन्हे कर्ज लेना पड़ता है। कर्ज का बोझ बढ़ने लगता है तो ये राज्य केन्द्र सरकार से मदद की गुहार लगाते है। विशेष पैकेज की मांग करते है। यदि केन्द्र सरकार इन राज्यों की मदद न करें तो पंजाब, बंगाल और राजस्थान सहित कई राज्या दिवालिया घोषित हो जाएं। केन्द्र सरकार यदि मदद करने से हिल हवाला करती है तो ये राज्य केन्द्र पर उपेक्षा करने का या सौतेला व्यवहार करने का आरोप लगाते है लेकिन यह नहीं बताते की वे कर्ज में क्यों डूबे है। वोट कबाड़ने के लिए किसानों का कर्जा माफ करने लोगों को मुफ्त राशन देने, निःशुल्क बिजली और पानी देने जैसी ढेरो घोषणां कर देते है और जब सत्ता में आ जाते है तो इन वादों को पूरा करने के लिए वे कर्ज लेने लगते है। लगभग सभी राजनीतिक पार्टियां यही कर रही है। इनमें सबसे आगे आम आदमी पार्टी निकल गई है जिसने निःशुल्क बिजली पानी का वादा कर के पहले दिल्ली में सरकार बनाई और अब पंजाब में भी उसकी सरकार बन गई है। पंजाब के मुख्यमंत्री लगातार केन्द्र सरकार से मदद की गुहार लगा रहे है, क्योंकि पंजाब सरकार का खजाना खाली पड़ा है और वहां की सरकार गले तक कर्ज में डूबी हुई है। चादर से बाहर पैर फैलाने वालों का यही हश्र होता है। अब तो कायदे से यह नियम बनाया जाए कि अपने वादे राज्य सरकारें अपने बलबूते पर पूरा करें। उसके लिए केन्द्र सरकार अपनी मदद सीमित रखें। तभी वे मुफ्तखोरी को बढ़ावा देना बंद करेंगी और कंगाली की कगार पर पहुंचने से बच पाएगी। मुफ्तखोरी को बढ़ावा देना वैसे भी उचित नहीं है। आम जनता के गाढ़े खून पसीने की कमाई प्रदेशों के विकास पर लगनी चाहिए न की उन पैसों का दुरूपयोग कर मुफ्तखोरी को बढ़ावा दिया जाएं।

मंथन

राष्ट्रवाद में राहत तलाशती पार्टियां

कांग्रेस ने उदयपुर चिंतन शिविर के मंथन से जो चीजें निकाली हैं, उनमें एक राष्ट्रवाद भी है। पार्टी के नौ पेज के नवसंकल्प-पत्र में राष्ट्रवाद शब्द का इस्तेमाल चार बार किया गया है और इसे पार्टी का मूल चरित्र बताया गया है। कांग्रेस ने भले ही इस शब्द को आज अपने अतीत से धूल झाड़कर बाहर निकाला हो, लेकिन यह देश काफी लंबे समय तक ऐसे ही सोचता रहा है। स्कूलों और यहां तक कि तमाम मोहल्लों में विभिन्न अवसरों पर जब गांधी, नेहरू, सुभाष और सरदार पटेल आदि की तस्वीरें लगाकर राष्ट्रभक्ति के गीत गाए जाते थे, तो कांग्रेस वहां किसी न किसी रूप में उपस्थित रहती थी। इन सबसे जो आख्यान उभरता था, उसमें कांग्रेस के बिना राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद के बिना कांग्रेस की कल्पना नहीं की जाती थी। फिर यह शब्द अतीत के तहखानों में धूल फांकने के लिए क्यों छोड़ दिया गया?

पिछले तीन दशक की कांग्रेस की राजनीति देखें, तो पुराने कई रुझान बदलते दिखाई देते हैं। इस दौर में जो कांग्रेस हमारे सामने आती है, उसका सारा चिंतन आर्थिक बदलावों के आस-पास ही दिखता है। उसके पास देश के लिए आर्थिक उदारीकरण है, मनरेगा है, भोजन का अधिकार है, शिक्षा का अधिकार है और सूचना पाने का अधिकार भी है। गठबंधन युग के तमाम जुगाड़ साधते हुए पार्टी ने इनके लिए हरसंभव कोशिशें भी कीं, जिनसे देश ने बहुत कुछ हासिल किया और बहुत कुछ खोया भी। इन कोशिशों के बीच राष्ट्रवाद कब हाथ से फिसल गया, पता ही नहीं चला। देश की भौतिक जरूरतों के चक्कर में उस जनमानस को दरकिनार कर दिया गया, जो लोगों को राजनीति के रसायन से जोड़ता है। आज जो बदली हुई राजनीति हमारे सामने है और जो कांग्रेस को एक के बाद एक नाकामियां दे रही है, उसकी शुरुआत भी वहीं कहीं से होती है।

लेकिन थोड़ा आगे बढ़कर देखें, तो जो भारत की राजनीति में हुआ है, वह बाकी दुनिया में भी कई जगह होता दिखता है। अमेरिका के एक मशहूर उदारवादी विचारक फ्रांसिस फुकुयामा इसे लेकर काफी चिंतित रहे हैं कि जो उदारपंथ लोगों को जीवन के अधिकार और तरक्की की जमीन देता है, वह अचानक खलनायक क्यों बन गया है? क्यों उदारवादी चुनाव दर चुनाव हारते जा रहे हैं? और सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि हर जगह एक उग्र किस्म का दक्षिणपंथ क्यों पैर जमाता जा रहा है?

पिछले दिनों फुकुयामा ने एक लंबा लेख लिखा, जिसमें वह इस नतीजे पर पहुंचे कि इस दुर्गति का कारण सिर्फ यह है कि उदारपंथियों ने उस राष्ट्रवाद का दामन छोड़ दिया, जिससे उनका बैर न था। वे अंतरराष्ट्रीयता के चक्कर में पड़ गए, जबकि उन्हें जो भी करना था, वह राष्ट्र की सीमाओं के भीतर ही करना था और उन्हीं उपकरणों से करना था, जो किसी राष्ट्र की संपत्ति होते हैं। लोगों को राष्ट्रवाद चाहिए था और आप उन्हें तमाम दूसरी चीजें देकर अपना कर्तव्य पूरा मानते रहे। नतीजा यह हुआ कि दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद को लपककर मुख्यधारा पर छा गए और उदारपंथी किनारे कर दिए गए। शायद यही वह सिलसिला है, जिसने अमेरिका को ट्रंप काल दिया और रूस को पुतिन युग। आज जिस यूक्रेन से रूस युद्ध में उलझा हुआ है, वहां भी ऐसी ही राजनीति चल चुकी है। फिनलैंड में, पोलैंड में, पूरे पूर्वी यूरोप में कोई इस रुझान से बचा नहीं है। पश्चिम यूरोप में तो यूरोपीय संघ के अस्तित्व पर ही खतरा मंडरा रहा है। अगर आर्थिक अंदेशे बहुत बड़े न होते, तो कई देश कबके इससे बाहर आ गए होते। और ब्रिटेन तो खैर तमाम खतरों को मोल लेता हुआ इससे बाहर आ ही गया। इन देशों में जिस तरह की राजनीति चल रही है।

बजट में एससी, एसटी उपयोजना और इसकी प्रासंगिकता

विनोद कुमार

बजट का प्रमुख उद्देश्य है अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग के लोगों को आजीविका के साधन उपलब्ध करा कर आत्मनिर्भर बनाना है। यह बजट सिर्फअनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के परिवारो,व्यक्तियों व उनकी बसाहटों ब के लिए खर्च होना चाहिए। लेकिन ऐसा होना नहीं पाया गया है। जब बजट प्रस्ताव विधानसभा में पारित किए जाते हैं तत्पश्चात विभिन्न विभागों को संबंधित मदों में धनराशि आवंटित की जाती है। उक्त धनराशि का खर्चा करने का जिम्मा विभागों को होता है। इसके लिए व्यवस्थाएं भी है।सभी प्रदेशों की तरह हमारे छत्तीसगढ़ में भी अनुसूचित जाति व जनजाति कल्याण समितिहै। लेकिन समय-समय पर इनकी बैठक होती। यदि बजट की उपयोगिता पर बात करें तो अध्ययन पश्चात हमने पाया कि प्रत्येक वर्ष 30 से 40 प्रतिशत तक बजट की धनराशि लेप्स हो जाती है।

भारत में कई हजार वर्षो से वंचित तबकों के साथ शोषण और अत्याचार होता आया है।वंचित समुदाय में ही पैदा हुए महापुरुषों ने समय-समय पर उन्हें गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने संघर्ष किया।हमारे महानायको/ महापुरुषों की इस श्रृंखला में कई हजार वर्षो से जारी शोषण का अंत करने का जिम्मा विश्वरत्न बोधिसत्व महान बाबा साहेब डॉक्टर बी आर अंबेडकर ने उठाया ।संविधान बनने के बाद हमे कानून के समक्ष समानता मिली। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में यहां के नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय देना सुनिश्चित हुआ। बाबा साहेब डॉक्टर अंबेडकर नहीं संविधान में वो सब कुछ लिखा जो समस्त मानव जगह के कल्याण व वंचितों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए आवश्यक थे।भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 के अनुसार अनुसूचित जाति और जनजाति के शैक्षिक और आर्थिक विकास का प्रावधान है।अनुच्छेद 38 में राज्य विशिष्टया आय की असमानता को कम करने के लिए प्रयास करेगा और न केवल व्यक्तियों के बीच बल्कि बिना विभिन्न क्षेत्रों रहने वाले और विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों के समूह के बीच भी प्रतिष्ठा सुविधाओं और अवसरों की असमानता समाप्त करने का प्रयास करेगा।

सदियों से वंचितों के साथ हुए अन्याय की भरपाई अथवा मुआवजा देने के लिए संविधान में लिखित आर्थिक न्याय के तारतम्य में अनुसूचित जाति वर्ग के लिए विशेष घटक योजना (स्घ्क)और अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए अनुसूचित जनजाति उपयोजना(स्ज्ञक) पृथक बजट नामक एक अवधारणा लाई गई।1979-80के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने छठी पंचवर्षीय योजना के समय अनुसूचित जाति और जनजातियों को शैक्षिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने यह योजना शुरू की। इस योजना का लक्ष्य इन वर्गों को मुख्यधारा में जोड़ना था। लेकिन तय समय में लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो पाई और आज 42 वर्ष बीतने के बाद भी गैर बराबरी और असमानता विद्यमान है। 1980 से लेकर आज तक केंद्र सरकार व राज्य सरकार अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए क्रमशःविशेष घटक योजना व अनुसूचित जनजाति

उपयोजना के रूप में धनराशि बजट के रूप में जनकल्याण और आजीविका के लिए उपलब्ध कराती है ।बजट आवंटन समानुपातिक भागीदारी के तहत जनसंख्या के अनुपात में करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।लेकिन जनसंख्या के अनुपात में बजट आबंटन नही करना भी एक खामी है।

राज्य सरकार ने इस वर्ष कुल 104000 करोड़ के बजट में 21492 करोड़(20.67त्र) अनुसूचित जनजाति के लिए व 6746 करोड़(6.49) अनुसूचित जाति के लिए आवंटित किया है। वर्ष 2018 से लेकर 2020 तक कुल 29284 करोड़ अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के लेप्स हो गए।बजट आवंटन विस्तार में जाएंगे तो पता चलेगा कि विभागों को प्राप्त धनराशि प्रचार प्रसार व क्रियान्वयन में इच्छाशक्ति की कमी के वजह सेलैप्स हो जाती है।यदि पढ़े लिखे वर्ग जागरूक हो जाएंगे तो इतनी बड़ी धनराशि लेप्स नहीं होगी। सामाजिक न्याय के तहत उचित प्रतिनिधित्व के प्रावधानो के वजह से हम यहां तक पहुंचे हैं। अब हमारी जिम्मेदारी है कि बजट के बारे समझ विकसित करते हुए समाज में दावा दखल जांच हेतु टीम बनाकर कार्य करें और अपने आप को बजट विषय पर कार्य करने दक्ष करें। बहुत सारी योजनाएं सीधे जनकल्याण व आजीविका से जुड़ी हुई होती है। बजट के प्रति जागरूकता की कमी के कारण भारी-भरकम राशि हमारे हिस्से की लेप्स रही है।हमारे अनुसूचित जाति व जनजाती वर्ग के लाभार्थी लाभ लेने से वंचित हो जाते है।

बजट का प्रमुख उद्देश्य है अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग के लोगों को आजीविका के साधन उपलब्ध करा कर आत्मनिर्भर बनाना है। यह बजट सिर्फ अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के परिवारो,व्यक्तियों व उनकी बसाहटों ब के लिए खर्च होना चाहिए। लेकिन ऐसा होना नहीं पाया गया है।

जब बजट प्रस्ताव विधानसभा में पारित किए जाते हैं तत्पश्चात विभिन्न विभागों को संबंधित मदों में धनराशि आवंटित की जाती है। उक्त धनराशि का खर्चा करने का जिम्मा विभागों को होता है। इसके लिए व्यवस्थाएं भी है।सभी प्रदेशों की तरह हमारे छत्तीसगढ़ में भी अनुसूचित जाति व जनजाति कल्याण समितिहै। लेकिन समय-समय पर इनकी बैठक होती। यदि बजट की उपयोगिता पर बात करें तो अध्ययन पश्चात हमने पाया कि प्रत्येक वर्ष 30 से 40 प्रतिशत तक बजट की धनराशि लेप्स हो जाती है। नियमतः वित्तीय वर्ष के अंत में बचे फंड को कैरी फॉरवर्ड करते हुए अगले वित्तीय वर्ष के अनुसूचित जाति जनजाति फंड में जोड़ना चाहिए ।लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। बजट का सही तरीके से उपयोग 1980 से नहीं हो रहा है ।यह केवल आज की समस्या नहीं है। वर्क 2018-19 में अनुसूचित जाति विशेष घटक योजना में 7821.23 करोड़ आबंटित हुई थी।यह बजट प्रतिवर्ष घटते हुए 2022-23 में 6746.44करोड़ रुपए हो गई है। अर्थात लगभग 11000 करोड रुपए अनुसूचित जाति विशेष घटक योजना में कम हो गई है।अनुसूचित जाति वर्ग का फ़ंड में भारी कटौती आखिर क्यों हो गई?

ठीक इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति उपयोजना में वर्ष 2018-19 में 31526.77 करोड़ धनराशि आवंटित हुई थी ।बजट प्रावधान में घटते हुए वर्ष 2022-23 में 28238.79 करोड़ में आ गई है अर्थात लगभग 3200 करोड़ अनुसूचित जनजाति उपयोजना मे कम हो गई है।बजट की बड़ी धनराशि पुल पुलिया निर्माण में आबंटित की जाती है। अब देखने वाली बात यह है की जहां इस बजट की बड़े हिस्से पुल पुलिया निर्माण में खर्च हो रहे हैं तो क्या वहां की पूरी आबादी अनुसूचित जाति जनजाति की है?यह विचारणीय है ।बजट पर देखरेख व क्रियान्वन की जिम्मेदारी आरक्षित वर्ग के जनप्रतिनिधियों की है ।उनका दायित्व बजट पर समुचित क्रियान्वयन निगरानी व बजट संशोधन पर सुझाव देने की है।लेकिन हमारी भी जिम्मेदारी है कि बजट पर दावा,दखल व जांच करने का काम करें। हम भी अपनी जिम्मेदारियों से भाग नहीं सकते।

श्वान परीक्षण के बहाने युवा मन की पीड़ा

डॉ किशोर अग्रवाल

नये कुत्ते अब तक धैर्यपूर्वक यह जांचपड़ताल करवाते रहे व कुत्तों का मिजाज समझते रहे उन्हे लगा कि बिरादरी उतनी भी बुरी नही है। अब उन्हे नये सिरे से फिर से नही काटा जा सकता था । यह अघोषित नियम था। अतिरिक्त जानकारी के लिये अब सिर्फ सूंघा जा सकता था । विरोध स्वरूप भूंका जा सकता था । अगर ये ग्राह्य न होते तो पहली पड़ताल में ही नोंच खंसोट कर दूर तक हकाल दिये जाते। पर अब ये रोहिंग्यों की तरह शहर का हिस्सा बनने जा रहे थे। ये खुद सूंघकर यहां के इस परीक्षण दल के कमजोर कुत्तों का मुआयना करने लगे । फिर इकट्ठा हुए कुत्तों को जैसे अपने जरूरी काम याद आने लगे वे एक एक कर अपनी अपनी गली में शेर बनने लौट गये। आदमियों में भी यह प्रवृत्ति पाई जाती है।

कातिक की कुतिया का बड़ा विचित्र आकर्षण होता है। इसी लपेटे में गांव के दो युवा श्वान गांव से उसके पीछे चलते शहर आ गए। शहर कब आ गया गांव कब पीछे छूटा इन्हे ध्यान कहां रहा। ये तो बस एक सुध पकड़ कर चले आए इन्होंने और कुछ सोचा ही नही। एक सुध बड़ी चीज है। बाज दफा रचनाकार भी केवल लिखने की सुध में रहते हैं । वे नादान नही जानते कि वे क्या कर रहे हैं। मन में भाव आ जाने और उन्हें लिख लेने से ही कोई लेखक नही मान लिया जाता । मान्यता के कई प्रतिमान होते हैं । इस कसौटी पर जो खरा उतरेगा वही लेखक माना जाएगा। नही तो हो ले वह सौ दफा लेखक , उसकी साहित्य जगत में औकात क्या?

जब ये दोनो श्वान गांव की शुद्ध हवा में ग्रामीणों का पौष्टिक भोजन खाते थे। अपने मजरे व टोले के अघोषित क्षत्रप थे अतः तन व मन से स्वच्छंद होने के कारण दोनो ही अच्छे तगड़े थे। अभी अभी युवा होने के बाद यह उनका पहला कार्तिक था ।अतः स्वभावतः ही वे उम्र के तकाजे से किसी कुत्तिया के पीछे पीछे शहर आ गए। नादान नही जानते थे कि वे सीमाओं का अतिक्रमण कर रहे हैं । रास्ते में कुत्तिया तो कहीं खो गई ,पर ये दोनो शहर के किनारे पर आ गए थे । एक नॉनवेज ढाबे की भट्ठी पर लेटे एक मरियल से कुत्ते ने उन दोनो को देखा । पैरों के पास रखी हड्डी अपने नजदीक खींचकर हवा में नाक सुड सुड कर उनके नए और अजनबी होने को कंफर्म किया । शरीर का पूरा दम लगाकर वह टुकड़े टुकड़ों में भूंका और अंत में एक वाउ वाउ लगाकर विराम लगा दिया । दिखने में यह कोई पटाक्षेप सा था पर दरअसल यह शुरुवात थी । यह वाउ वाउ पूरे मोहल्ले में फॉरवर्ड होने लगी और कई कोनो से यही वाउ वाउ इको होकर लौटने लगी । पास बने बंगलों के भीतर से भी वाउ वाउ सुनी गई । पास की गली से एक टूटे कान वाला कद्दावर कुत्ता निकला और झपट कर इनके पास पहुंचा । बिना किसी परिचय के और किसी किस्म की औपचारिकता के उसने दोनो को थोड़ा थोड़ा काट खाया । इस अचानक हमले से बदहवास हो दोनो किंकीयाने लगे और जमीन पर पीठ के बल लेट कर चारों टांगे ऊपर उठा ली । उनकी पूंछो के जोड़ से कनकटे ने अपनी नाक से गहरा सैंपल लिया और अपनी लैब में विश्लेषण करने लगा । इस बीच कई कुत्ते मौके पर आ पहुंचे और एक गोल सा बनाकर उन दोनो को कब्जे में ले लिया। इन सभी कुत्तों के अपने इतिहास थे और पर्सनैलिटी थी । इनके पास नए कुत्तों के परीक्षण के लिए सिर्फ नाक ही एक साधन थी। लिहाजा सभी ने पहले सूंघकर उन्हे समझने की कोशिश की । जो केमिस्ट्री के पारंगत थे उन्होंने उन्हें काटकर चखा भी। एक दो ने पंजे भी आजमाए । तब तक नवागंतुक खड़े होकर अपने परीक्षण में कोऑपरेट करने लगे थे । उन्होंने सरेंडर करने का संकेत अपनी दुम दबाकर दे दिया था। दुम पूरी नही दबी थी तो कनकटे मुखिया कुत्ते ने अपने दांत दिखाकर, लार बहाकर और एक डरावनी गुर्राहट निकालकर उनकी पूंछें पेट तक मुड़वाकर विजयी भाव से अपना टूटा कान फड़फड़ाया । स्थापित लोगों में भी यही परंपरा है वे भी पूरा ही सरेंडर कराते हैं । सूँघकर ही नए लोगों की परख कर लेते हैं । एक कुत्ता देखने में पढ़ालिखा आगे से धंसे चेहरे वाला मिनिस्ट्री के अंडर सेक्रेटरी पद से रिटायर जैसा मालूम पड़ता था । वह एक कदम दूर खड़ा मामले की तह में जाना तो चाहता था पर खुद को असंबद्ध दिखा रहा था। यह दरअसल किसी सरकारी अफ़सर का कुत्ता था जिसके मालिक रिटायर होने पर इसे साथ नही ले गए । यह कुछ दिन अफसरी अकड़ के साथ यहां वहां भटका । आम देसी कुत्तों का खाना भी नही खाता था पर अब नजर बचाकर सब खा लेता है । इसने नवागंतुक कुत्तों को चारों तरफसे घूमकर और सूंघकर देखा । कुछ देर पूंछ हिलाता रहा, फिर एक कुत्ते की दुम पर काट लिया ।यह रिजेक्शन था। एक आवारा कुत्ता ऐसा था जिसे मुनिस्पालिटी ने पकड़कर उसके गले में पट्टा बांध दिया था । वह वहां से भाग निकला था । उस पट्टे को वह बेहयाई से मेडल की तरह दिखाता हुआ आगे आया । उन कुत्तों के मुंह से मुंह टिकाकर कुछ देर तक वह बिना वजह उन पर भौंक कर धौंस दिखाता रहा । यह प्रवृत्ति मनुष्यों में भी पाई जाती है । बदनाम और दागी लोग ही सोसायटी में ज्यादा भूंकते हैं ।ये कहीं न कहीं से ऐसी ही बेहयाई से पुरूस्कृत भी होते हैं । एक कुत्ता छोटेकद का लंबा सा डेसहाऊंड नस्ल का था जिसे किसी बंगले मे होना चाहिये था पर बुरी सोहबत के कारण वहां से निकाल दिया गया था अब वह भी इस देशी झुंड के साथ था और इन रूरल कुत्तों के नीचे से निकलकर इनके बारे में अपनी राय बना रहा था ।यह आधारभूत परीक्षण में लगा था । कुछ दबंग व स्थापित किस्म के कुत्ते थे जो ऐसे हर परीक्षण में उपस्थित रहा करते थे इन्होने इन नवागंतुकों को बड़ी बुरी बुरी जगहों पर सूंघा मुँह बनाया फिर हवा में नाक उठा कर इस बुराई का मूलस्त्रोत ढूंढने लगे।

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

गलती से एक

गलती से एक बार जनता के आवेदनों का निधन छप गया दूसरे दिन अखबार ने भूल सुधार करते आवेदनों का निदान प्रकाशित किया एक पाठक ने भूल सुधार पर अपनी टिप्पणी भेज दी प्रिय संपादक महोदय., आपका पूर्व प्रकाशित शब्द ही सही था सुधार की जरूरत नही क्योंकि लाखो आवेदन मे निदान कम निधन अधिक होता है आवेदनों का पता नही चलता कहां गायब। - **संत आर थवाईत**

अंतहीन परतों के

अंतहीन परतों के पीछे छुपा हुआ है वो जिससे मिलना चाहता हूँ परतें जिम्मेदारियां, परिस्थितियां नौकरी, तनाव, कर्ज,कर्म विचार ग्रसत,भाव हिनबेकारी, उपहास, दीन क्रमशः अब उसे भूल जाना ही बेहतर विकल्प होगा।

- **प्रवीण माटी**

खास पाती | तुमसे जुदा समझू मैं खुद को

तुमसे जुदा समझू मैं खुद को ऐसे भी हालात नहीं। तुम से ही तो हारा हूँ मैं ये तो कोई मात नहीं।। दिन कोई ऐसा नहीं होता जिसकी होती रात नहीं। होता है क्या पेड़ कोई भी जिसके पीले पात नहीं ।। जिस किस्से में तुम नहीं होते वो किस्सा कब किस्सा है, जिसमें न हो ज़िक्र तुम्हारा होते वो नगमात नहीं।। तन की सुन्दरता को छोड़ो मन का बस श्रृंगार करो, ध्यान से देखो गर जीवन को हो केवल तुम गात नहीं ।। मज़हब के तो नाम पे लड़ना धर्म युद्ध कब होता है, रब के सच्चे बाशिंदों की होती कोई ज़ात नहीं।। इश्क़ इबादत उस मालिक की सबसे कब हो पाती है, करता है तौफीक अता वो होती ये खैरात नहीं।। - **पुष्प सैनी 'पुष्प'**

प्यार एक खूबसूरत एहसास है

प्यार एक खूबसूरत एहसास है जो आपको जीना सिखाता है ज़िन्दगी के मायने बताता है और जब आपको प्यार में सारी दुनिया और ज़िन्दगी सबसे सुंदर लगने लगती है तब वही प्यार आपको बहुत गहरे से भीतर ही भीतर खोखला करने लगता है किसी दीमक की तरह खाने लगता है तब तक जब तक आप पूरी टूट न जाएं बिखर न जाएं खत्म न हो जाएं लेकिन खत्म होते होते भी प्यार के पुकार की एक आस सांसों में किसी मछली के कांटे जैसी फंसी रहती है चुभती हुई मगर न मौत आती है न जिंदगी मिलती है।- **अनामिका चक्रवर्ती**

पल पल हर पल नये ख्वाब बुनती

पल पल हर पल नये ख्वाब बुनती है जिंदगी बिते पल हर क्षण हर पल याद दिलाती है उन बीते क्षणिक पलों की जो रहना चाहती है जीवित मन के किसी कोने में और बन जाती है स्मृति पटल पर मधुर पल उफ्फये पल हर क्षण हर पल ना जाने कितने रूप दिखाती है और हमारा जिवन सुंदर मोहक और जिने लायक बनाती है। **डेजी जायसवाल**

जीभ सुधरने पर जीवन भी सुधरता

जीभ सुधरने पर जीवन भी सुधरता है और जीभ के बिगडने पर जीवन भी बिगड जाता है । सीधा - सादा भोजन करने से जीवन शुद्ध होता है। यदि आहार सादगीपूर्ण और शुद्ध होगा तो शरीर मेँ सात्विक गुण की वृद्धि होगी । सत्वगुण के बढने से सहनशक्ति भी बढती है और अन्त मेँ बुद्धि भी स्थिर होती है आहारशुद्धो सत्वशुद्धि , सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः। - **सुनिल शुक्ला**

ये एक भ्रम भर है की स्वप्न

ये एक भ्रम भर है की स्वप्न नयनो का विषय है। नयन तो केवल प्रतीक्षा के साधन भर है स्वप्नों को सत्य होता देखने के लिए किंतु सत्य ये है स्वप्न सत्य नहीं होते और हम स्वप्नों के सत्य होने की प्रतिक्षाओ में जीते है किंतु सत्य में मर जाते है। अवश्य ही हमारी आत्माएं अधूरी कामनाओं को लिए अनन्त की यात्रा करती है। सत्य ये ही कि सत्य कुछ भी नही और भ्रम ये है कि भ्रम कुछ भी नही। - **कुलदीप वर्मा**

दरिया है या ताल समझती है

दरिया है या ताल समझती है मछली मछुआरों की चाल समझती है मछली ऊपर बगुलों से खतरा ' गहराई में किसने डाला जाल समझती है मछली। - **जतिन शुक्ला**

मां की दुआ में असर होता है

मां की दुआ में असर होता है। जादू टोना बेअसर होता है। गुनाह भी गुनाह नहीं दिखते, इतना मासूम जिगर होता है। जुबान शहद जब भी बोले, मुख पे मुस्कान सबर होता है। चहकती हरदम दिखी हमको, आना जाना बेखबर होता है। सुख की चाबी सहेज इसको, गम का आना सिफर होता है। रख तसल्ली साया सिर पर, वरना वीरान नगर होता है। - **डॉ दीपा गुप्ता**

QUIZ TIME

1) 31वें दक्षिण पूर्व एशियाई खेलों का आयोजन कहाँ किया जाएगा?
2) मेलबर्न क्रिकेट क्लब नए कोड ऑफलॉ को कब से लागू करेगा?
3) किस देश ने सैन्य उपग्रह नूर 2 को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया है?
4) किस संस्थान के द्वारा फसलों को बचाने हेतु नैनोपार्टिकल समाधान विकसित किया गया है जो कृषि फसलों को फंगल और बैक्टीरियल संक्रमण से बचाने में सक्षम है?
5) भारतीय अमेरिकी राज सुब्रमण्यम को 29 मार्च, 2022 को किस संस्था का अध्यक्ष और सीईओ नामित किया गया?

Ramaquiz

उत्तरमाला- (1) वियतनाम (2) 1 अक्टूबर, 2022 (3) ईरान (4) आईआईटी कानपुर (5) फेडएक्स कॉर्प

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। 1543 : पोलैंड के खगोलविद निकोलस कापरनिकस का निधन। उन्होंने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि पृथ्वी समेत सभी ग्रह सूरज के चक्कर लगाते है और पृथ्वी अपनी धुरी पर भी घूमती है। 1689 : ब्रिटिश संसद ने प्रोटेस्टेंट इसाइयों को धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी दी। 1875 : सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ में मुहम्मदीन एंग्लो ओरिएंटल स्कूल की स्थापना की जो वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। 1883 : ब्रुकलिन और मैनहट्टन को जोड़ने वाले ब्रुकलिन ब्रिज को यातायात के लिए खोला गया। 1915 : थॉमस अल्वा एडिसन ने टेलीस्क्राइब का अविष्कार किया। 1931 : पहली वातानु?कूलित यात्री ट्रेन अमेरिका के वाल्टमोर ओहियो मार्ग पर चलाई गई। 1959 : साम्राज्य दिवस का नाम बदलकर राष्ट्रमंडल दिवस किया गया। 1985 : बांग्लादेश में चक्रवाती तूफान से दस हजार लोगों की मौत। 1986 : मार्गरेट थैचर इजरायल का दौरा करने वाली ब्रिटेन की पहली प्रधानमंत्री बनीं। 1994 : मीना (सऊदी अरब) में हज से जुड़े एक समारोह के समय भगदड़ मचने से 250 लोगों से भी अधिक हाजियों की मौत। 1994 : न्यूयार्क सिटी में 1993 में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर बम हमला करने वाले चार आरोपियों में से प्रत्येक को 240 वर्ष कैद की सजा सुनाई गई। 2001 : नेपाल के 15 वर्षीय शेरपा तेंबा शेरी माउंट एवरेस्ट की चोटी को फतह करने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोही बने। 2004 : उत्तर कोरिया ने मोबाइल फोन पर प्रतिबंध लगाया।

गोबर को लेकर सड़क पर सियासत

भाजपा के किसान नेताओं ने सहकारी समिति का किया घेराव, कहा- किसानों को दे रहे घटिया खाद

■ रायपुर में भाजपाइयों का पैदल मार्च

रायपुर/नवप्रदेश। हाथों में गोबर लिए भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चा के नेता सोमवार को सड़कों पर उतरे। यह सभी नेता जोरा स्थित सहकारी समिति के दफ्तर का घेराव करने पहुंचे। हाथों में गोबर लिए भाजपा नेताओं ने समिति दफ्तर के बाहर जमकर नारेबाजी की। किसान मोर्चा के नेता गौरीशंकर श्रीवास ने समिति के अफसरों पर भ्रष्टाचार करने का गंभीर आरोप लगाया। श्रीवास ने बताया कि किसानों को घटिया क्वालिटी की खाद दी जा रही है। इससे सीधा असर किसान की आमदनी पर पड़ रहा है। हंगामा करते हुए भाजपा नेताओं ने एक ज्ञापन भी सौंपा है, जिस पर कार्यवाही नहीं होने पर आने वाले दिनों में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी गई। भाजपा नेताओं का आरोप है कि छत्तीसगढ़ में किसान विरोधी नीतियां चलाई जा रही है। हालातों से परेशान होकर सैकड़ों किसान आत्महत्या कर चुके हैं।

केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार किसानों को यूरिया खाद 625 रूपए प्रति क्विंटल उपलब्ध करा रही है। वहीं प्रदेश में किसानों को अमानक और घटिया खाद रेत, मिट्टी मिला गोबर लेने के लिए प्रति एकड़ 3 बोरी (90किलो) 1000 रूपए क्विंटल में लेने के लिए बाध्यता कर किसानों को लूटने का काम हो रहा है।

भूपेश सरकार ने किसानों की दाना-दाना धान खरीदने वादा किया था। चूंकि छत्तीसगढ़ में रवि की फसल भी पर्याप्त में होती है अतः पूरे प्रदेश में किसानों से रवि फसल की खरीदी 2500 रूपए प्रति क्विंटल में तत्काल प्रारंभ की जाए। कांग्रेस के घोषणा पत्र में पूर्व सरकार के लंबित 2 वर्षों के धान बोनस देने का वादा किया था लेकिन आज साढ़े 3 वर्ष से अधिक हो गए है बकाया बोनस की राशि तत्काल किसानों को जारी की जावे।

प्रति वर्ष गिरदावरी के नाम पर किसानों के रकबे में लगातार कटौती हो रही है। कहीं मेढ़ काटे जा रहे है कहीं खेत ही कम कर दिया जा रहा है जिससे पूरे प्रदेश के किसान आक्रोशित है, किसान के संपूर्ण खेतीहर रकबे का 15 क्विंटल के हिसाब से धान की खरीदी की जाए।

भाजपा किसान मोर्चा की ये हैं मांगें

प्रदेश के सभी किसानों को प्रति एकड़ 3 बोरी (90 किलो) गोबर खाद खरीदी की बाध्यता समाप्त कर किसानों को एच्छिक रूप से वर्मी कंपोस्ट खरीदने की छूट दी जाए। वर्मी कंपोस्ट मानक हो तथा रेत व मिट्टी मिली हुआ न हो। राजीव गांधी न्याय योजना के अंतिम किस्त की राशि में 30 से 50 प्रतिशत तक की कटौती करते हुए करीब 470 करोड़ की राशि किसानों को कम जारी की गई है। इस अंतर की राशि को तत्काल किसानों को जारी किया जाए।

हसदेव नदी के तट पर फॉसिल्स पार्क बनाना प्रकृति और जनता के साथ मजाक : आप

रायपुर/नवप्रदेश। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की हसदेव नदी के तट पर फॉसिल्स पार्क बनाया की घोषणा को आम आदमी पार्टी ने छत्तीसगढ़ की जनता को गुमराह करने व मजाक करने के समान बताया है। आप ने कहा कि प्राकृतिक रूप से हरे भरे क्षेत्र हसदेव अरण्य में उद्योगपतियों के लाभ हेतु जंगल काटना, जिंदा जीव जंतुओं की सुरक्षा और सरंक्षण तो दूर फॉसिल पार्क बनाना पर्यावरण के साथ क्रूर मजाक है। यह जनमानस के साथ भी खिलवाड़ करने जैसा है कि जीवो और पर्यावरण को नुकसान पहुंचा कर नुकसान का संग्रहण करना और संग्रहालय बनाना। पर्यावरण के जानकर इससे होने वाली हानि को हजारों साल में भारपाई नहीं हो पाना बता रहे है। इसके बावजूद राज्य सरकार इस पर तनिक भी विचार नहीं कर रही है और तरह तरह से लोक लुभावन आडंबर कर कोयला खदान शुरू करने का षड्यंत्र रच रही है। आम आदमी पार्टी के खदान चालू करने के आदेश को रद्द करने के निवेदन के बाद भी यदि प्रदेश सरकार ऐसा करेगी तो आम आदमी पार्टी सत्याग्रह का मार्ग अपनाएगी और पूरे प्रदेश में सत्याग्रह करेगी।

राज्य प्रशासनिक सेवा के 56 अफसरों का तबादला

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य प्रशासनिक सेवा के 56 अफसरों का तबादला किया है। इसे लेकर मंत्रालय के सामान्य प्रशासन विभाग की तरफ से सोमवार देर शाम को दो अलग-अलग आदेश जारी किया। इस तबादला आदेश में नगर निगम के कमिश्नर, जनपद पंचायतों के सीईओ, जिलों के संयुक्त कलेक्टर, अपर कलेक्टर व डिप्टी कलेक्टर रैंक के अफसर प्रभावित हुए। कुछ अफसर एक ही जगहों पर लंबे अरसे से जमे हुए थे। नए आदेश से 2013 बैच के अफसर प्रेम कुमार पटेल को जगदलपुर नगर निगम के आयुक्त पद से हटाकर नवा रायपुर विकास प्राधिकरण का महाप्रबंधक बनाया गया है। जगदलपुर में उनकी जगह दिनेश कुमार नाग को आयुक्त की जिम्मेदारी दी गई है। 2014 बैच के नाग अभी तक बस्तर जिले में संयुक्त कलेक्टर की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। धमतरी नगर निगम से 2015 बैच के मनीष मिश्रा का तबादला रायगढ़ में संयुक्त कलेक्टर के पद पर कर दिया गया है। उनकी जगह पर 2015 बैच के ही विनय कुमार पोयाम को रायगढ़ नगर निगम का आयुक्त बनाया गया है। पोयाम अभी तक दुर्ग जिले में संयुक्त कलेक्टर थे। इसके अलावा अन्य अफसर शामिल हैं।

पूर्व प्रवक्ता अमीर अली फरिश्ता का निधन, कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता अमीर अली फरिश्ता के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम ने कहा है कि ईश्वर इस दुख की घड़ी में परिवारजनों को सहनशक्ति एवं पूण्य आत्मा को शांति प्रदान करें। श्री अमीर अली फरिश्ता कांग्रेस के निष्ठावान और मेहनती कार्यकर्ता थे। पार्टी के प्रति उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उनका निधन कांग्रेस पार्टी के लिये अपूरणीय क्षति है। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता अमीर अली फरिश्ता के निधन पर प्रदेश कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रामगोपाल अग्रवाल, प्रदेश कांग्रेस प्रभारी महामंत्री प्रशासन रवि घोष, प्रभारी महामंत्री संगठन अमरजीत चावला, वरिष्ठ नेता राजेंद्र तिवारी, गिरीश देवांगन, शैलेश नितिन त्रिवेदी, प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला, चंद्रशेखर शुक्ला, संचार विभाग सदस्य आर.पी. सिंह, सुरेंद्र शर्मा, प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता धनंजय ठाकुर, घनश्याम राजू तिवारी, विकास तिवारी, मोहम्मद असलम, सुरेंद्र वर्मा, वंदना राजपूत, नितिन भंसाली, प्रकाशमणी वैष्णव ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

फ्लैट्स व भूखंडों के विकास और निर्माण की गति बढ़ाएगा आरडीए

■ निजी क्षेत्र की तुलना में दो से तीन गुना कम कीमत होने के कारण

■ आरडीए के फ्लैट्स, भूखंडों की ब्रिक्री बढ़ी: वर्मा

रायपुर/नवप्रदेश। कमल विहार योजना में निर्माणाधीन फ्लैट्स के निर्माण की गति बढ़ाई जाएगी ताकि आवंटितियों को जल्द से जल्द फ्लैट्स का कब्जा दिया जा सके। रायपुर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी चन्द्रकांत वर्मा ने प्राधिकरण का कार्यभार संभालने के बाद आज तीसरी बार कमल विहार योजना का बृहद स्तर पर दौरा किया। उन्होंने सेक्टर 4 में निर्माणाधीन फ्लैट्स के निर्माण कार्य की गुणवता,फ्लैट्स कैम्पस की प्लॉनिंग और हर फ्लैट्स में दी जा रही सुविधाओं का अवलोकन किया और कार्य की गति बढ़ाए जाने के निर्देश दिया।

आरडीए के सीईओ श्री वर्मा ने कहा कि लोकहित में छत्तीसगढ़ सरकार के मार्गदर्शन एवं अध्यक्ष सुभाष धुप्पड़ के नेतृत्व में हो रहे गुणवत्तापरक विकास और निर्माण कार्यों के कारण कमल विहार योजना में ईडब्लूएस व एलआईजी फ्लैट्स की आवासीय इकाईयां बहुत की कम कीमत में उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि रायपुर में कई निजी निर्माण एजेंसियों व्दारा दो से तीन गुना अधिक कीमत पर फ्लैट्स का विक्रय किया जा रहा है। जबकि प्राधिकरण के कम कीमत के ईडब्लूएस व एलआईजी फ्लैट्स सबसिडी और कम ब्याज दर के कारण काफी लोकप्रिय हुए हैं। चूंकि प्राधिकरण की संपत्तियां अच्छी लोकेशन, अच्छी गुणवत्ता के बेहतर अधोसंरचना विकास के साथ कम कीमत मिल रहे हैं इस कारण पूरे प्रदेश के लोगों का रायपुर विकास प्राधिकरण की संपत्तियों लेने के प्रति बेहद आकर्षण बना हुआ है। इसी कारण प्राधिकरण ने अप्रैल माह में अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री का 79.71 करोड़ रुपए का एक रिकार्ड बनाया है।

भाजपा में साहस हो तो राहुल गांधी के उठाये सवालों का जवाब दे: कांग्रेस

रायपुर/नवप्रदेश। राहुल गांधी ने जो कहा है वह देश की चिंता है। भारतीय जनता पार्टी राहुल के सच से तिलमिला गयी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम ने कहा कि राहुल गांधी ने देश की बेरोजगारी, महंगाई, राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मसलो को उठाया है। यह देश की हकीकत है। सूचना क्रांति और इंटरनेट के इस वैश्विक युग में यह बाते अतार्किक और गौण हो जाती है कि कौन सी बात कहां कही गयी चाहे वह देश में कही जाये या विदेश में वर्तमान में समाचारों की संप्रेषण शक्ति इतनी व्यापक और तीव्र है कि वह हर तरह एक साथ फैलती है, भाजपा द्वारा राहुल गांधी की चिंताओं को देश की बात विदेश में क्यों कहे कह कर विषय के मूल से जनता का ध्यान हटाना चाहती है। क्योकिं राहुल गांधी की चिंता में भाजपा और मोदी सरकार की असफलता उजागर हो रही है। मोदी को इसका जवाब देश की जनता को देना चाहिये।

मोदी सरकार देश की सीमाओं की रक्षा में असफल साबित हो रही है। जो रूस यूक्रेन में कर रहा है ठीक वही पैटर्न चीन भारत में डोकलाम और लद्दाख में दिखा रहा है. चीन ने भारत में डोकलाम और लद्दाख में अपनी सेना तैनात कर रखी है और अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख को भारत का हिस्सा मानने से इंकार करता है.''चीन पैंगोंग झील पर पुल बना रहा है क्योंकि वो कुछ करना चाहता है. लेकिन भारत सरकार इस पर बात ही नहीं कर रही है। केन्द्रीय एजेंसियो का दुरूपयोग और भय पैदा करना मोदी सरकार का चरित्र बन गया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम ने कहा कि राहुल गांधी ने मोदी सरकार के बहुमत के अतिवाद पर प्रहार करते हुये कहा कि ÷भारत राज्यों का एक संघ है, भारत बना ही ऐसे जहां हर राज्य की अपनी पहचान है, धर्म और संस्कृति है और उनके पास अपनी बात रखने और बातचीत करने की क्षमता है. भारत ऐसे नहीं बना जहां शक्ति का केंद्र किसी एक सत्ता के हाथों में हो बल्कि ये राज्यों और उनकी शक्तियों के मूल्यों पर बना देश है. लेकिन अभी ये हो रहा है कि एक सुनियोजित हमला किया जा रहा है. केंद्रीय एजेंसी जैसे ईडी, सीबीआई का इस्तेमाल करके राज्यों को, संस्थानों को कमज़ोर किया जा रहा है. हालात ये हो गए हैं कि आज राज्य बातचीत करने की हालत में ही नहीं रह गए हैं।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम ने कहा कि भाजपा और मोदी में साहस है तो राहुल गांधी के उठाये गये सवालों को जवाब दे न कि उनके द्वारा कही गयी देशहित की बातों से लोगों का ध्यान भटकाने की निम्नस्तरीय कोशिश करें।

एक चिंगारी से बड़ी समस्या के बीच होंगे

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम ने कहा कि भाजपा की सांप्रदायिक चरित्र पर चिंता व्यक्त करते हुये राहुल गांधी ने कहा कि देश में धुव्रीकरण बढ़ता जा रहा है, बेरोज़गारी अपने चरम पर है, महंगाई बढ़ती जा रही है. बीजेपी ने देश में हर तरफ़ केरोसीन छिड़क दिया है बस एक चिंगारी से हम सब एक बड़ी समस्या के बीच होंगे, इसमें गलत क्या है। यह देश के हर प्रबुद्ध नागरिक की चिंता है।

व्यापारियों में योग चेतना जगाने हेतु योग शिविर का आयोजन

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तम गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी,विक्रम सिंहदेव,राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि आज दिनांक 21 मई 2022 को चेम्बर कार्यालय चै. देवीलाल व्यापार उद्योग भवन, बाम्बे मार्केट, रायपुर में विश्व योग दिवस के अवसर पर जीवन में योग के महत्व को परिलक्षित करते हुए योग गुरु प्रियंका उपाध्याय एवं जुम्बा विशेषज्ञ दीपमाला के सानिध्य में योग शिविर का आयोजन किया गया। योग शिविर के संयोजक एवं चेम्बर सांस्कृतिक प्रभारी श्री आलोक शर्मा ने बताया कि यह योग शिविर प्रत्येक शनिवार को सुबह 7.15 से 8.15 बजे तक चेम्बर भवन में आयोजित किया जायेगा एवं भविष्य में भी इसी प्रकार के आयोजन किये जाते रहेंगे।

चेम्बर कार्यकारी महामंत्री कपिल दोशी ने बताया कि सभी व्यापारियों में योग एवं स्वास्थ्य के प्रति नई ऊर्जा के संचार हेतु योग शिविर का आयोजन चेम्बर भवन में किया जा रहा है जो कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस तक चलेगा जिसमें सभी पदाधिकारीगण सहित एसोसियेशन व सभी व्यापारीगण आमंत्रित हैं।

योग शिविर में योग गुरु प्रियंका उपाध्याय ने जीवन में योग के महत्व एवं योग को कैसे आत्मसात करें इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि योग-अभ्यास का एक प्राचीन रूप जो भारतीय समाज में हजारों साल पहले विकसित हुआ था और उसके बाद से लगातार इसका अभ्यास किया जा रहा है। इसमें किसी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए और विभिन्न प्रकार के रोगों और अक्षमताओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल हैं। यह ध्यान लगाने के लिए एक मजबूत विधि के रूप में भी माना जाता है जो मन और शरीर को आराम देने में मदद करता है। दुनियाभर में योग का अभ्यास किया जा रहा है। विश्व के लगभग 2 अरब लोग एक सर्वेक्षण के मुताबिक योग का अभ्यास करते हैं।

प्रियंका उपाध्याय ने कहा कि शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है। प्रियंका उपाध्याय ने आगे बताया कि योग आंतरिक शांति प्राप्त करने और तनाव तथा अन्य समस्याओं के खिलाफलड़ाई में मदद करता है। योग एक व्यक्ति में शांति के स्तर को बढ़ाता है और उसके आत्मविश्वास को और अधिक बढ़ाने तथा उसे खुश रहने में मदद करता है। आजकल लोग आलस, थके हुए या नींद की कमी महसूस करते हैं जिसके कारण वे अपने जीवन में अधिकतर मौज-मस्ती से चूक जाते हैं और अपने काम को सही ढंग से पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। सक्रियता होने के नाते आप अपने आसपास होने वाली चीजों के बारे में अधिक जागरूक रहते हैं और अपने काम को अधिक कुशलतापूर्वक और जल्दी से पूरा कर पाते हैं यह सब करने का एक तरीका नियमित रूप से योग का अभ्यास करना है।

ए मां सेवा समिति में नई रोटी मशीन का लोकार्पण सत्यनारायण शर्मा द्वारा

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर शहर में एम्स हॉस्पिटल के मरीजो के परिजनों लिये रायपुर के 3 बड़े अस्पताल मेकाहारा डीकेएस एवं एम्स निःशूल्क भोजन दूत रूपी शहर की ए मां भोजन सेवा समिति जो विगत 3 वर्षो से प्रतिदिन बिना रुके भोजन व्यवस्था करते आ रही है , यह सेवा जरूरतमंदों के लिये किसी बहुमुल्य सहारे से कम नही है। जो उन्हे हालात से लड़ने के लिये हिम्मत देते है। किसी अनजान शहर में अपने परिजनों के लिये रुके लोंगो को दो समय के भोजन के लिये सहारा बनी यह संस्था दानदाताओ के सहयोग से 3 वर्ष से भोजन की निरन्तर सेवा निःशुल्क कर रही है और मां अन्नपूर्णा के आशीर्वाद से आगे भी करेगी, अब इसी कड़ी में समिति द्वारा अत्यंत गरीब, निर्धन वर्गो के मरीजों के लिये सेवा चालू रखेगी इसी कड़ी में आज फुल्ली ऑटोमैटिक रोटी मशीन का विधिवत पूजन के साथ लोकार्पण सत्यनारायण शर्मा के कर कमलों द्वारा किया गया.सत्तू भैया के द्वारा संस्था के सेवा से प्रभावित होकर 51000 हजार रुपये की राशि दान दी गई. इस अवसर पर संस्था के संरक्षक राममणि यादव, निर्मला गोयनका वरिष्ठ सहयोगी राधे राधे दीदी, रश्मि दीदी नीतू दीदी ब्रह्मा दीदी संजय मिश्रा नरेश नामदेव और दैनिक दबंग स्वर के प्रधान संपादक पंडित पीके तिवारी उपस्थित रहे।

फूड प्वाइजनिंग से नर्सिंग कॉलेज की 25 छात्रा बीमार

कोरबा/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ के कोरबा स्थित सृष्टि नर्सिंग कॉलेज की 25 छात्राओं की तबीयत सोमवार को अचानक बिगड़ गई। उन्हें आनन-फानन में कोरबा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिलहाल उनकी हालत ठीक बताई जा रही है। डॉक्टरों ने छात्राओं के फूड प्वाइजनिंग की आशंका जाहिर की है। हालांकि कॉलेज प्रबंधन का कहना है कि तेज गर्मी से तबीयत खराब हुई है। मेस का खाना ठीक है। जानकारी के मुताबिक, सृष्टि नर्सिंग कॉलेज के हॉस्टल में 45 छात्राएं रहती हैं। इनमें से 25 की सोमवार को तबीयत बिगड़ गई। एक साथ इतनी छात्राओं को उल्टी और बीमार होते देख कॉलेज में हड़कंप मच गया। उन्हें तत्काल ही मेडिकल कॉलेज भेजा गया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद 19 छात्राओं को छुट्टी दे दी गई। हालांकि अभी भी 6 छात्राएं अस्पताल में भर्ती हैं। बताया जा रहा है कि फूड प्वाइजनिंग के कारण छात्राओं की तबीयत बिगड़ी है। अस्पताल प्रबंधन भी इस बात को स्वीकार कर रहा है, लेकिन पूरी तौर पर नहीं।

पुलिस जवान को बदमाश ने मारा चाकू

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर पुलिस के ऑन ड्यूटी को जवान पर एक युवक ने चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। शहर के डीडी नगर थाने की पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। ये वारदात रविवार देर रात शहर के रायपुरा चौक पर हुई। यहां हरमन ढाबे पर आरक्षक गजेंद्र साहू चाय लेने के लिए गया था। यहीं बदमाश हर्ष शुक्ला खड़ा था। लौटते वक्त आरक्षक हर्ष से टकरा गया और दोनों के बीच बहस शुरू हो गई जो कुछ ही मिनटों में हाथापाई में बदल गई। गुस्से में आकर आरोपी हर्ष ने अपनी कमर में फंसा चाकू निकाला और आरक्षक गजेंद्र पर वार कर दिया। पहले वार में गजेंद्र बच गया, मगर दूसरे वार में चाकू गजेंद्र के हाथ की नस पर लगा। खून बहता देख बदमाश हर्ष भाग गया। कुछ देर बाद उसे पकड़ लिया गया। आरक्षक गजेंद्र का अस्पताल में इलाज जारी है।

पहले भी हो चुका है पुलिस के जवानों पर हमला-

कुछ महीने पहले रायपुर के दुर्गापारा इलाके में कुछ हमलावरों ने पुलिस जवान पर हमला कर दिया। आरक्षक हेमंत जगने पर बोतल और धारदार हथियार से प्राण घातक वार किया गया था। मामले में कुछ युवकों को पकड़ा गया था। इसी तरह शास्त्री बाजार में चाकू लेकर घूम रहे आकाश नाम के बदमाश ने डायल 112 के आरक्षक कुलदीप नेताम को चाकू मार दिया था। चोट लगने के बावजूद आरक्षक ने बहादुरी दिखाई और बदमाश को पकड़ लिया था।

दुर्घटना के बाद कार से तलवारें बरामद, जांच में जुटी पुलिस

रायपुर/नवप्रदेश। राजधानी रायपुर के डंगनिया अनुपम गार्डन के पास भीषण सड़क दुर्घटना का मामला सामने आया है। उक्त दुर्घटना के बाद कार से तलवारे और धारदार हथियार बरामद की गई है। मौके पर मौजूद लोगों की माने तो इस कार में एक बच्चा भी पाया गया जो काफी डरा हुआ था। साथ ही चालक और उसका साथी भी नशे की हालत में थे। संदिग्ध अवस्था बच्चे के मिलने से किडनैपिंग का भी शक जताया जा रहा है।

जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि यह गाड़ी कार चालक की नहीं है। साथ ही चोरी की कार का संदेह जताया जा रहा है, क्योंकि गाड़ी का नंबर प्लेट और चेचिस नंबर भी गलत है। जानकारी के अनुसार कार क्रमांक छ्त्त 04 HQ 1053 के चालक ने लापरवाही पूर्वक चलाते हुए CG 04 KR 9927 कार को इतनी जोर से ठोकर मारी कि कार के परखच्चे उड़ गए। इसके अलावा जिस कार से टक्कर हुई वह भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

वहां मौजूद लोगों की माने तो उक्त हादसे के बाद आरोपी कार चालक वहां से फरार होने की कोशिश कर रहा था किंतु उसे पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया है। इस हादसे में किसी के गंभीर रूप से चोटिल होने की खबर सामने नहीं आई है। किंतु कार में मिले हथियारों और डरे सहमे बच्चे के मिलने से मामला काफी बड़ा हो गया है। फिलहाल सरस्वती नगर थाना पुलिस उक्त मामले की जांच में जुट गई है।

उपलब्धि एम्स में आई बैंक की तैयारी पूरी, शीघ्र प्रारंभ हो सकता है कार्निया ट्रांसप्लांट

एम्स में जल्दी मिलेगी किडनी ट्रांसप्लांट की सुविधा

■ कार्निया के साथ आर्गन डोनेशन का सेंटर भी अंतिम चरण में

रायपुर/नवप्रदेश। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में आई बैंक की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। इसके पश्चात् नेत्र रोग विभाग में जल्द ही कार्निया ट्रांसप्लांट प्रारंभ हो सकता है। इसके साथ ही आर्गन डोनेशन सेंटर की तैयारियां भी अंतिम चरण में हैं। दोनों के लिए राज्य सरकार की टीम निरीक्षण के पश्चात् मंजूरी देगी। इसके तुरंत बाद किडनी और कार्निया का ट्रांसप्लांट संभव हो सकेगा।

निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने बताया कि एम्स के नेत्र रोग विभाग में आई बैंक बनाने की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। सी-ब्लॉक में इसके लिए सभी निर्माण कार्य पूरे हो गए हैं। औपचारिकताएं पूरी होने के तुरंत बाद आई बैंक प्रारंभ करके कार्निया ट्रांसप्लांट की सुविधा भी प्रारंभ कर दी जाएगी। इसके साथ ही नेफ्रोलॉजी विभाग में आर्गन डोनेशन सेंटर का कार्य भी अंतिम चरण में हैं। शासन की अनुमति मिलने के बाद अगले तीन महीने के अंदर एम्स में आर्गन डोनेशन सेंटर प्रारंभ कर दिया जाएगा।

नेत्र रोग विभाग के डॉ. अंकुर श्रीवास्तव ने बताया कि कार्निया डोनेशन और ट्रांसप्लांट के लिए नेत्र रोग विभाग में संपर्क किया जा सकता है। सामान्यतः मृत्यु के छह घंटे बाद तक कार्निया दान किया जा सकता है जबकि इसको प्रिजर्व करने के बाद चार दिन तक ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। इस संबंध में एम्स के नेत्र रोग विभाग में सभी सुविधाएं उपलब्ध करा दी गई हैं। नोडल ऑफिसर डॉ. विजया साहू ने बताया कार्निया की जरूरत वाले रोगियों का विवरण विभाग में उपलब्ध है। डोनर मिलने के बाद अमूमन दो से तीन लाभार्थियों को बुलाया जाता है और जिस रोगी से कार्निया मैच करता है उन्हें ट्रांसप्लांट कर दिया जाता है। इसके लिए 3सी3 में सारी सुविधाएं उपलब्ध करा दी गई हैं।

नेफ्रोलॉजी के डॉ. विनय राठौर ने बताया कि किडनी ट्रांसप्लांट के लिए शासन स्तर पर औपचारिकताएं शेष हैं। शीघ्र ही राज्य स्तरीय टीम निरीक्षण कर डोनेशन सेंटर को मंजूरी दे सकती है। विभाग इसके तुरंत बाद किडनी ट्रांसप्लांट की सुविधा प्रारंभ कर देगा।

न्यूज गैलरी

समय से पहले संपत्तिकर जमा करके पाए 6.25 प्रतिशत छूट का लाभ लें शहरवासी

भिलाई/नवप्रदेश। नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 की टैक्स वसूली शुरू हो गई है। महापौर नीरज पाल ने इस बार बजट में किसी भी प्रकार से टैक्स में बढ़ोत्तरी नहीं की है, बल्कि मई के माह में

टैक्स में भारी छूट लोगों को मिल रहा है। छूट का लाभ लेते हुए कर जमा करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। वहीं आयुक्त प्रकाश सर्वे ने भी करदाताओं को निर्धारित समय से पूर्व टैक्स जमा कराकर करदाताओं को छूट का लाभ दिलाने कहा है। अपर आयुक्त अशोक द्विवेदी एवं उपायुक्त ने जानकारी देते हुए बताया कि इस बार करदाता चालू वित्तीय वर्ष का 31 मई के भीतर देय संपत्तिकर जमा कर 6.25 प्रतिशत छूट का लाभ पा सकते हैं। वहीं 1 जून से 31 जुलाई के भीतर देय संपत्तिकर जमा कर 5 प्रतिशत, 1 अगस्त से 30 सितंबर के भीतर देय संपत्तिकर जमा कर 4 प्रतिशत की रियायत पा सकते हैं। इसी प्रकार 1 अक्टूबर से 30 नवंबर के भीतर देय संपत्ति कर जमा कर 2 प्रतिशत की छूट का लाभ ले सकते हैं। इस छूट का लाभ उठाकर क्षेत्र के करदाता संपत्तिकर जमा कर सकते हैं। कइयों ने ऑनलाइन संपत्तिकर जमा किया है। 6.25 छूट का लाभ 31 मई तक लिया जा सकता है। आयुक्त ने जोन के सहायक राजस्व अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि टैक्स कलेक्शन के लिए अपने-अपने क्षेत्रों की प्रगति की समीक्षा करते हुए और वसूली बढ़ाने के लिए स्पैरो से समन्वय बनाकर काम करें।

सेल मना रही है अपनी स्थापना के 50वें साल

नई दिल्ली/ भिलाई (नव प्रदेश)। देश की सार्वजनिक क्षेत्र की स्टील उत्पादक कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफइंडिया लिमिटेड (सेल), इस साल यानि 2022 में अपनी स्थापना के पचासवें साल का उत्सव मना रही है। सेल की स्थापना 24 जनवरी, 1973 हुई थी। सेल ने अपने पचास साल की इस महान विरासत को यादगार बनाने के लिए आज एक स्मारक लोगो लांच किया है, जिसके बाद देश भर में स्थित कंपनी के संयंत्रो और इकाइयों में पूरे साल अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर लांच किया गया स्मारक लोगो का डिजाइन, कंपनी के मूल लोगो को बरकरार रखने के साथ, कंपनी की पचास साल की इस यात्रा की भावनाओं को बड़ी खूबसूरती से संजोये हुए है। यह लोगो सेल अध्यक्ष श्रीमती सोमा मण्डल ने 23 मई, 2022 को कंपनी के निदेशकों की मौजूदगी में लांच किया। यह उपलब्धि सालों से देश के निर्माण में स्टेकहोल्डर्स की बेहतर भागीदारी और योगदान सुनिश्चित करने के लिए कंपनी के निरंतर प्रयासों और पहलों का प्रमाण है।

मर्चेंट मिल ने शिफ्ट रिकॉर्ड के साथ ही बनाया उत्पादन का दैनिक कीर्तिमान

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के मर्चेंट मिल में चैनल, एंगल सहित टीएमटी बार्स और लाइट स्ट्रक्चर्ल्स की रोलिंग की जाती है। मर्चेंट मिल ने प्रथम पाली में पाली प्रभारी महंत यादव की टीम ने 21 मई 2022 को 100 एमएम चैनल्स में 506 टन की रोलिंग कर एक नया पाली कीर्तिमान स्थापित किया है। एसएमएस-3 द्वारा उत्पादित बिलेट से 100 एमएम चैनल प्रोफाइल को रोल करना बेहद मुश्किल होता है परन्तु मर्चेंट मिल बिरादरी ने इस मुश्किल रोलिंग को भी सफ्लतापूर्वक अंजाम दिया है। मर्चेंट मिल की इसी टीम ने पुनः 22 मई 2022 को प्रथम पाली में 561 टन की रोलिंग कर फिर से एक नया पाली कीर्तिमान स्थापित किया है। इसी क्रम में 22 मई 2022 को मर्चेंट मिल ने 1502 टन का उत्पादन कर, एक नया सर्वश्रेष्ठ दैनिक रिकॉर्ड कायम किया। भिलाई इस्पात संयंत्र के उच्च प्रबंधन ने मर्चेंट मिल और संबंधित सहयोगी शॉप्स के पूरी टीम को नया रिकॉर्ड बनाने हेतु बधाई दी।

विद्युत विभाग और निगम की अनदेखी का मामला पहुंचा जनदर्शन में

फर्जी मास्टर रोल से हो रहा है शासकीय राशि का दुरूपयोग

नव प्रदेश संवाददाता

दुर्ग। ग्राम राखी के कृषक खरीफ की फसल को लेकर अभी से चिंतित हैं। यहां के कृषकों ने कलेक्टर के समक्ष इसी चिंता को लेकर आवेदन प्रस्तुत किया है। कृषक मौसम आधारित वर्षा पर निर्भर नहीं रहना चाहते, इसलिए उन्होंने अपने खेतों में पानी मोटर पंप को चलाने के लिए विद्युत विभाग एक वर्ष पूर्व ट्रांसफार्मर के लिए आवेदन लगाया था। विभाग को पोल लगाकर बिजली का कनेक्शन आवेदकों को मुहैया कराना था। आवेदक ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी के विद्युत केंद्र जामगॉव (एम) में उन्होंने 2021 में आवेदन किया था और विभाग द्वारा वांछित दस्तावेज व 24,430/- रूपए की राशि जमा भी की थी। लेकिन अभी तक न तो बिजली के पोल लगे हैं और न ही ट्रांसफार्मर। बिजली कंपनी द्वारा बताई गई सभी प्रक्रियों करने के बाद भी विभाग की निष्क्रियता से हम आने वाली फसल को लेकर चिंतित हैं। इसलिए आवेदक ने कलेक्टर से निवेदन किया कि शीघ्र से शीघ्र ट्रांसफार्मर लगाकर

बिजली पोलों के माध्यम से उन्हें विद्युत मुहैया कराई जाए ताकि वह सुनिश्चित होकर बेहतर खेती कर सकें और केवल वर्षा के जल पर निर्भर न रहें। कलेक्टर ने प्रकरण पर संज्ञान लेते हुए विद्युत विभाग के संबंधित अधिकारी को आवेदन प्रेषित किया।

इसी क्रम में ग्राम ढौर की महिला ने भी अपने परिवारिक कलह से संबंधित आवेदन कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया था। जिसमें उसने बताया कि उसका पति जो कि गोंडपेण्ड्री का निवासी है, ने उसे तलाक दिए बिना किसी दूसरी स्त्री के साथ विवाह कर लिया है जो कि कानून की दृष्टि से अपराध है इसलिए महिला चाहती है कि उसके पति के खिलाफ विधि अनुरूप कार्यवाही की जाए। कलेक्टर ने आवेदन पुलिस विभाग को प्रेषित किया।

फर्जी मास्टर रोल बनाकर 69 मजदूरों की 01 सप्ताह की मजदूरी के गबन का मामला जनदर्शन में सामने आया। जिसमें आवेदक का कथन है कि ग्राम घुघसीडीह में मनरेगा के अंतर्गत अम्हा तालाब के गहरीकरण का कार्य स्वीकृत है। जिसमें तालाब के पानी को खाली कराकर 01 माह के लिए गहरीकरण का कार्य मनरेगा के अंतर्गत कराया गया। जिसमें आवेदक के अनुसार सरपंच ने सुनियोजित तरीके से 69 मजदूरों का नाम एक सप्ताह के मास्टर रोल में बिना किसी कार्य के अंकित कराया। जो कि शासकीय राशि के गबन का मामला है। इसलिए आवेदक शासकीय राशि का दुरूपयोग करने वाले के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज कराना चाहता है। कलेक्टर ने मामले का संज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारी को आवेदन प्रेषित किया।

रामनगर उरला दुर्ग वार्ड क्रं. 57 के नागरिकों ने विगत 05 वर्षों से उनके क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं जैसे सड़क, नाली की कमी का मामला कलेक्टर के समक्ष जनदर्शन में प्रस्तुत किया। जिसमें आवेदक का कहना था कि इन मूलभूत सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पूर्व में भी इनके द्वारा नगर निगम को अवगत कराया गया था परंतु वर्तमान स्थिति तक न तो नगर निगम द्वारा निरीक्षण किया गया है न ही कोई बुनियादी कार्य जिससे आम नागरिकों को आवागमन कई प्रकार की दिक्कतों से सामना करना पड़ रहा है। बरसात के दिनों में स्थिति और विकट हो जाती है इसलिए आवेदक का निवेदन है कि जनहित को देखते हुए शीघ्र से शीघ्र इस दिशा में उचित कार्यवाही की जावे। कलेक्टर ने मामले का संज्ञान लेते हुए नगर निगम के संबंधित अधिकारी को आवेदन प्रेषित किया।

जिला स्तरीय निर्यात संवर्धन समिति का वर्चुअल बैठक का आयोजन

नव प्रदेश संवाददाता

दुर्ग। जिला स्तरीय निर्यात संवर्धन के संबंध में समिति के अध्यक्ष कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे की अध्यक्षता में वर्चुअल बैठक आयोजन किया गया था। बैठक में कलेक्टर डॉ. भुरे द्वारा केन्द्र सरकार द्वारा जिलों को उनके उत्पाद के आधार पर वर्गीकृत करते हुए क्षेत्रवार कार्ययोजना बनाए जाने के संबंध में जानकारी दी गई । उनके द्वारा बताया गया कि जिले में निर्यात संवर्धन की दिशा में केन्द्र सरकार द्वारा की गई नई पहल के तहत जिले से निर्यात की संभावना को और गति प्रदान करने हेतु सभी हितधारकों से इस दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया गया एवं विशेष रूप से दुर्ग जिले में स्टील, कास्टिंग, फोर्जिंग से संबंधित उद्योगों को निर्यात संवर्धन हेतु प्रभावी कदम उठाये जाने हेतु जोर दिया गया।

संपत कुमार, डीजीएफटी द्वारा केन्द्र सरकार की निर्यात संवर्धन की दिशा में किये गये इस पहल के संबंध में जानकारी प्रदान की गई । प्रत्येक जिले अपने आप में विशेष है और वहां की परिस्थितियों व संभवनाओं को ध्यान में रखते हुए जिले हेतु पृथक से कार्ययोजना बनाई जानी है। उनके द्वारा उपस्थित उद्योगपतियों एवं उद्योग प्रतिनिधियों से जिले की कार्ययोजना किस ढंग से और बेहतर और मौलिक बनाया जा सकता है, इस संबंध में सुझाव भी मांगा गया। अनिमा पाण्डेय, राज्य प्रभारी, ईईपीसी द्वारा इंजीनियरिंग उत्पादों के निर्यात की संभावना पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न शासकीय एजेंसियों से बेहतर समन्वय स्थापित कर निर्यात संवर्धन को और सार्थक बनाये जाने हेतु पहल किया गया। उपस्थित उद्योगपतियों एवं शासकीय अधिकारी के मध्य जिले में उद्योग संवर्धन हेतु अन्य पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई एवं अविलंब निर्यात संवर्धन हेतु जिले की इन कार्ययोजना तैयार करने हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान करने के संबंध में सहमति प्रदान की गई। शासन की औद्योगिक नीति 2019-24 के तहत निर्यात आधारित इकाईयों को दिये जाने वाले परिवहन अनुदान के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

इस अवसर पर डॉ. संपत कुमार, (आई. टी. एस.) संयुक्त महानिदेशक, डीजीएफटी, मुम्बई, कौशिक भट्टाचार्य, कौशिल्यनंदन, डीजीएफ टी मुम्बई, राजीव एस, निदेशक, एमएसएमई डीआई, रायपुर, अनिमा पाण्डेय, राज्य प्रभारी, ईईपीसी, एसएस राजपूत, उपसंचालक, मे. वासलोह बी. के. कास्टिंग लिमि., भिलाई, एम कामदार, मे. स्ट्रकराईट मेटल बिल्डिंग सिस्टम, भिलाई, मुन्ना सिंह, मे. शिवालिक इंजीनियरिंग, हथखोज, भिलाई 13. अंकित मेहता, ईईपीसीआई, दुर्ग उपस्थित थे।

निदान 40 : मेंटल चाइल्ड को हायर सेंटर रेफर

रिसाली (नव प्रदेश)। इंदिरा चौक के निकट रहने वालों की मोबाइल पर वीडियों देख आयुक्त आशीष देवांगन संवेदनशील होने का परिचय दिया। उन्होंने फुटेज देखने के बाद 3 अलग-अलग स्थानों पर 1.50 लाख की लागत से नाली बनाने निर्देश दिए। निदान 40 में वैसे तो अब तक के सार्वधीक 450 लोगों ने आवेदन कर पंजीयन कराया। इसमें से 115 आवेदनों का मौके पर ही निराकरण किया गया। सोमवार को स्टेशन मरोदा ओवर ब्रिज के नीचे शंकर पारा, विजय चैक और सूर्या नगर स्टेशन मरोदा वार्ड के नागरिकों के लिए निदान 40 जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान झग्गर सिंह साहू ने वार्ड 20 की तस्वीर को अपने मोबाइल पर कैद कर लाया था।

समर्पित ब्रह्माकुमारी बनकर लोगों से पैसा मांगने वालों पर कार्यवाही की मांग

नव प्रदेश संवाददाता

भिलाई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक अन्तराष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक ख्यातिनाम संस्थान है, जिसकी पूरे विश्व के 140 देशों में शाखायें फैली हुई हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरे विश्व में राजयोग मेडिटेशन एवं अपने आदर्श मूल्यों और उच्च संस्कारों के लिए जानी जाती है। यह दुनिया की पहली संस्थान है जिसकी बागडोर बहनों के हाथ में है। यह संस्थान लोगों में नैतिक मूल्यों के जरिये लोगों का जीवन श्रेष्ठ बना रही है। पूरे विश्व में संस्था के सभी कार्यक्रम एवं राजयोग मेडिटेशन व्यक्तित्व विकास एवं जीवन प्रबन्धन के सकारात्मक विभिन्न कोर्स पूर्णतया निशुल्क होते है

पिछ्ले कुछ महीनों से हमेशा हमें विभिन्न शेक्षणिक कार्यालयों एवं शहर के गणमान्य नागरिकों से प्राप्त जानकारियों के आधार से सुनने व देखने में आ रहा है कि शहर के विभिन्न स्थानों पर एम उषा नाम की महिला जो अपने को ब्रह्माकुमारी बताती है तथा ब्रह्माकुमारी बहनों की तरह सफेद साड़ी पहनकर और बैज लगाकर सेवा के नाम पर पैसे माँगती है। इसके साथ ही वह जगह जगह खाना, पीना भी करती है व अन्य गतिविधियां करती है जो कि संस्था के विपरीत है। जिससे ब्रह्माकुमारीज संस्था का नाम खराब हो रहा है। यह संस्था की गरिमा के विपरीत है।

भाजपा किसान मोर्चा ने किसानों की समस्याओं को लेकर किया प्रदर्शन

कुम्हारी। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में किसानों को वर्मी कंपोस्ट के रूप में खाद को लेने की बाध्यता समाप्त करने एवं किसान हित में अन्य मुद्दों को लेकर भाजपा किसान मोर्चा जिला भिलाई के आह्वान पर कुम्हारी धान मंडी परिसर में धरना प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर भाजपा किसान मोर्चा जिला भिलाई अध्यक्ष निश्चय बाजपेई ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार द्वारा विगत साढ़े तीन वर्षो से किसान विरोधी नीतियां चलाई जा रही है और प्रदेश में किसान अपनी विभिन्न समस्याओं को लेकर परेशान हैं। एक ओर केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार किसानों को यूरिया खाद 625 रुपए प्रति क्विंटल उपलब्ध करा रही है। वहीं प्रदेश की भूपेश बघेल सरकार

किसानों को अमानक और स्तरहीन खाद प्रति एकड़ 3 बोरी (90 किलो) एक हजार रूपए क्विंटल लेने के लिए बाध्य कर किसानों को लूटने का काम कर रही है । जिससे प्रदेश के किसानों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है एवं किसान आगामी सीजन में खेती कर पाने में असमर्थ नजर आ रहे हैं। अमानक वर्मी कंपोस्ट खाद की बाध्यता से प्रदेश भर के किसानों की गाढ़ी कमाई गोबर के साथ मिट्टी में मिल जायेगी जिसमें किसानों को अनुमानित 700 करोड़ रूपए की क्षति हो सकती है। जिलाध्यक्ष ने उपस्थित किसानों से आग्रह करते हुए कहा कि इस किसान विरोधी नीतियों का जमकर विरोध करने आगे आएं। उपरोक्त बिंदुओं पर भाजपा किसान मोर्चा जिला भिलाई अध्यक्ष निश्चय बाजपेई ने छवि यादव, अश्विनी देशलहरे, गीतेश्वर साहू, पन्नालाल साहू, अशोक शर्मा आदि के साथ मांगों के निराकरण करने हेतु राज्य सरकार को निर्देशित करने के संबंध में मांग पत्र का ज्ञापन सुश्री अनुसुईया उईके राज्यपाल छत्तीसगढ़ शासन, जिलाधीश दुर्ग, अनुविभागीय अधिकारी (रा .), तहसीलदार, राजस्व अधिकारी को संबोधित करते हुए सेवा सहकारी समिति कुम्हारी प्रबंधक आर.एस. चंदेल को सौंपा ।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई के न्यायालय में मामला
क्रमांकः 202205101000037/202205101000037
विषयः अ-6 सन्- 2021-2022
मामले की श्रेणी-राजस्व
कोहका प.ह.न. 00019 हे.
पक्षकारों का विवरण- आवेदक पक्षकार - /
हेमन्त साहू अनावेदक पक्षकार - आम जनता
ईश्तहार
आवेदक हेमन्त साहू पिता जीवन लाल साहू पता बालोद द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 19 रा. नि. मं. कोहका तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि पुराना खसरा नं. 284/3 रकबा 0.039 हे. है नया खसरा नं. 2406 रकबा 0.020 हे. आवेदक के पिता जीवन लाल साहू पिता बलिराम साहू के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी जीवन लाल साहू पिता बलीराम साहू की मृत्यु दिनांक 20/4/22 को हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर वैध वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने बाबत फौती नामांतरण आवेदन पत्र मय खसरा बी-1 मृत्यु प्रमाण की छाया की प्रति प्रस्तुत किया है।
अतः इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को उजर दावा हो सुनवाई तिथि दिनांक 26/4/22 तक या उसकेपूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा । यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 05/05/22 को जारी किया जाता है।
अति. तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र./अ-06/ वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक संतोष साहू पिता राजूलाल साहू अन्य-1 निवासी संगम चौक उरला मौजा ग्राम उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. सिकोला तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 501, 502/2, 172/1, 334, 666/3, 702/1 रकबा 0.016, 0.008, 0.336, 0.016, 0.548, 0.235 हे. आवेदक के पिता राजूलाल के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी दिनांक 23/12/2021 की मृत्यु हो जाने के कारण वारिसानों का नाम दर्ज करने आवेदन पेश किया गया है।
अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 13/6/22 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 17/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
ईश्तहार
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक लक्ष्मीनारायण बंजारे आ. स्व. शत्रुहन लाल बंजारे साकिन बोड़ेगांव द्वारा ग्राम बोड़ेगांव प.ह.न. 14 रा.नि.मं. दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 758, 762/1 रकबा 0.0900, 0.9500 हे. जो उसके स्व. शत्रुहन बंजारे/खुशीराम बंजारे के नाम पर दर्ज है की फौती दर्ज किए जाने के संबंध में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। जिस पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।
अतः उपरोक्त भूमि को आवेदक के नाम पर नामांतरण किए जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 6/6/22 तक या उसके पुर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 19/5/22 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
ईश्तहार
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक लक्ष्मीनारायण बंजारे आ. स्व. शत्रुहन लाल बंजारे साकिन बोड़ेगांव द्वारा ग्राम बोड़ेगांव प.ह.न. 14 रा.नि.मं. दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 476, 753 रकबा 0.0300, 0.6900 हे. जो उसके स्व. शत्रुहन बंजारे/खुशी राम के नाम पर दर्ज है की फौती दर्ज किए जाने के संबंध में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। जिस पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।
अतः उपरोक्त भूमि को आवेदक के नाम पर नामांतरण किए जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 6/6/22 तक या उसके पुर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 19/5/22 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अति. तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र
मा.क्र.//अ-06/ वर्ष 2020 -21
एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदिका लता देवांगन पति संतोष कुमार देवांगन निवासी ब्राम्हण पारा तह. व जिला दुर्ग के द्वारा अपने हक की क्रयशुदा भूमि ग्राम नगपुरा प.ह.नं. 02 तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नं. 1505/1 का टुकड़ा रकबा 2002.5 वर्गफीट भूमि को विक्रय पत्र के आधार पर विक्रेता राधेश्याम मैथिल पिता/पति बैसाखू सिंह अन्य-6 के नाम से पृथक कर आवेदक का नाम पटवारी अभिलेख में दर्ज करने हेतु आवेदन इस न्यायालय में विचाराधीन है।
अतः जिस किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को इस संबंध में आपत्ति दावा या उजर पेश करना हो तो दिनांक 30/5/22 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते है। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।
आज दिनांक 13/5/22 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया जाता है।
मुहर
अति. तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र-202205101200043/अ-06/ वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि शेखर लाल वर्मा पिता ईश्वरलाल निवासी सम्राट नगर वार्ड 03 सुकमा मौजा चंदखुरी प.ह.नं. 29 रा.नि.मं. अण्डा तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 1610/30 रकबा 0.030 हे. यमुना देवी के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी दिनांक 19/4/21 की मृत्यु हो जाने के कारण वारिसानों का नाम दर्ज करने आवेदन पेश किया गया है।
अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 27/5/22 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 13/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
नायब तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2021-22
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक प्रशांत कुमार मिश्रा पिता बद्री प्रसाद मिश्रा निवासी ग्राम मैत्री कुंज रिसाली भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम बोरसी तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 215/36 रकबा 0.019 हे. भूमि जो कि आवेदक/शामिलात सखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार बद्री प्रसाद मिश्रा की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 07/06/22 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 18/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2021-22
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक प्रशांत मिश्रा आ./पति स्व. बद्री प्रसाद मिश्रा निवासी ग्राम रिसाली भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम उमरपोटी तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 228/20 रकबा 0.030 हे. भूमि जो कि स्व. बद्रीप्रसाद पिता घनदेव प्रसाद के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूमि के भूमिस्वामी के मृत्यु 16/4/241 हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 8/6/22 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 18/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
इश्तहार
रा.प्र.क्र-202204100400469//अ-06/वर्ष 2021-22
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक अनोहर सोरी पिता फुलसिंह सोरी निवासी नयापारा दुर्ग तह. व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग प.ह.नं.24 स्थित भूमि खसरा नं. 21/7 रकबा 0.009 हे. भूमि जो कि वर्तमान राजस्व अभिलेख में आवेदक के नाम पर दर्ज है। आवेदित भूमि को आवेदक के द्वारा पंजीकृत बैनामा दिनांक 27/5/2003 के माध्यम सू क्रय किया गया था, उक्त विक्रय पत्र में आवेदक का नाम अनोहर सोरी के स्थान पर त्रुटिवश अनवर दर्ज हो जाने पर उक्त त्रुटि सुधार हेतु आवेदक द्वारा पंजीकृत सुधार प्रत्रक दिनांक 03/03/2022 निष्पादित कराया गया व अपना नाम अनवर के स्थान पर अनोहर सोरी दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग के समक्ष प्रस्तुत किया गया जो कि जांच एवं प्रतिवेदन हेतु इस न्यायालय में प्राप्त हुआ है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 06/06/2022 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 18/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र
रा.प्र.क्र.//अ-06/वर्ष 2021-22
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक महेश कुमार पिता स्व. दिलीप कुमार निवासी ग्राम डुन्डेरा दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम डुन्डेरा तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 71, 72 रकबा 0.0100, 0.0100 हे. भूमि जो कि आवेदक/शामिलात सखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार दिलीप कुमार की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 26/5/22 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 10/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार पाटन के न्यायालय में मामला
क्रमांकः 202205100900111/202205100900111
विषयः अ-74 सन्- 2020-2021
मामले की श्रेणी-राजस्व
पतोरा प.ह.न. 00026 (1458 (0.3100 हे.))
पक्षकारों का विवरण- आवेदक पक्षकार - /
धनउ राम ढीमर अनावेदक पक्षकार -
ईश्तहार
एतद द्वारा सर्वसाधारण एवं ग्राम पतोरा प.ह.नं. 26 तह. पाटन जिला दुर्ग के आम जनता को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक धनद राम ढीमर पिता स्व. कार्तिकराम निवासी ग्राम उतई तह. व जिला दुर्ग द्वारा ग्राम पतोरा प.ह.नं. 26 तह. पाटन जिला दुर्ग स्थित अपने नाम दर्ज शामिलात खाता की भूमि ख.नं. 1458 रकबा 0.31 हे. मूल ऋणपुस्तिका गुम हो जाने के कारण द्वितीय प्रति ऋणपुस्तिका प्रदाय किए जाने बाबत न्यायालय में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।
अतः आवेदक धनउ राम ढीमर पिता स्व. कार्तिकराम द्वारा प्रस्तुत आवेदन के आधार पर उपरोक्त भूमि का आवेदक को द्वितीय प्रति ऋण पुस्तिका प्रदाय किए जाने की कार्यवाही में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को उजर दावा हो सुनवाई तिथि दिनांक 31/5/22 तक या उसकेपूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा । यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 20/5/22 को जारी किया जाता है।
अति. तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई के न्यायालय में मामला
क्रमांकः 202205101000072/202205101000072
विषयः अ-74 सन्- 2020-2021
मामले की श्रेणी-राजस्व
बासीन प.ह.न. 00016 हे.
पक्षकारों का विवरण- आवेदक पक्षकार - /
मनोज अनावेदक पक्षकार -
ईश्तहार
एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मनोज पिता/पति/विभाग तिजुराम पता बासिन द्वारा ग्राम बासीन प.ह.नं.-16 रा.नि.मं. जामुल तह. व जिला दुर्ग स्थिति भूमिस्वामी हक की भूमि खसरा नं. 437 रकबा 0.8000 हे. भूमि मनोज पिता/पति/विभाग तिजुराम पता बासिन के नाम पर दर्ज है। उक्त भूमि की ऋणपुस्तिका गुम हो जाने के कारण द्वितीय प्रति ऋणपुस्तिका प्रदाय किए जाने बाबत न्यायालय में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।
अतः इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को उजर दावा हो सुनवाई तिथि दिनांक 30/5/22 तक या उसकेपूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा । यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 10/5/22 को जारी किया जाता है।
अति. तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा-पत्र
रा.प्र.क्र- 202205100700159//अ-06/वर्ष 2021-22
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका एस्तर दत्ता पति स्व. प्रदीपेरा दत्ता निवासी ग्राम न्यू आदर्श नगर दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम बोरसी तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 249/12 रकबा 0.026 हे. भूमि जो कि आवेदक/शामिलात सखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदित भूमि के खातेदार प्रदीपेरा दत्ता की मृत्यु हो जाने पर फौती दर्ज कर मृतक खातेदार के सभी विधिक वारिसानों का नाम राजस्व अभिलेख में दर्ज किए जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।
अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 30/5/22 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 12/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।
मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र-202205101200069/अ-06/ वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि संतोष कुमार पिता स्व. शिवकुमार निवासी अछोटी मौजा अछोटी प.ह.नं. 36 रा.नि.मं. अण्डा तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 106, 125 रकबा 0.050, 0.1300 हे. फगुवा के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी दिनांक 15/4/22 की मृत्यु हो जाने के कारण वारिसानों का नाम दर्ज करने आवेदन पेश किया गया है।
अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 31/5/22 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 13/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
नायब तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र-202205101200052/अ-06/ वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि हरिशचंद्र साहू पिता स्व. बिसेलाल निवासी रिसामा मौजा रिसामा प.ह.नं. 45 रा.नि.मं. अण्डा तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 330/1, 442/2, 626/4, 626/5, 626/9, 760/2, 788/2 रकबा 1.4000 हे. फगुवा के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी दिनांक 24/4/22 की मृत्यु हो जाने के कारण वारिसानों का नाम दर्ज करने आवेदन पेश किया गया है।
अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 26/5/22 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 11/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
नायब तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)
उद्घोषणा
रा.प्र.क्र-202205103300070/अ-06/ वर्ष 2020-21
एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक ओम प्रकाश साहू पिता स्व. लखन साहू निवासी बजरंग पारा दुर्ग मौजा उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. सिकोला तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 252/2, 254/21 रकबा 0.012, 0.007 हे. आवेदक के पिता लखन साहू के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी की मृत्यु दिनांक 6/8/22 हो जाने के कारण वारिसानों का नाम दर्ज करने आवेदन पेश किया गया है।
अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 6/6/22 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।
आज दिनांक 17/5/22 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।
मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

भाजपा किसान मोर्चा ने जिले की 50 सेवा सहकारी समितियों में किया धरना प्रदर्शन

■ किसानों की मांग को लेकर प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

कवर्धा/नवप्रदेश। वर्मी कंपोस्ट की बाध्यता को खत्म करने और किसानों को खरीफ फसल के लिए सभी सेसायटी में खाद भंडारण की मांग को लेकर भाजपा नेताओं ने सोमवार को धरना-प्रदर्शन किया। भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्यामबिहारी जायसवाल के आहवान पर, भाजपा जिलाध्यक्ष कबीरधाम अनिल ठाकुर के निर्देशानुसार व भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष भुनेश्वर चंद्राकर के नेतृत्व में सोमवार को जिला भाजपा किसान मोर्चा ने कबीरधाम जिले के सभी मंडल की 50 सोसायटियों केंद्रों में एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन किया। वर्मी कंपोस्ट की बाध्यता को समाप्त करने और किसानों को खरीफ फसल के लिए खाद की आपूर्ति की मांग को नेकर धरना प्रदर्शन किया। भाजपा नेताओं ने अपनी मांगों को लेकर प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। जिसमें प्रमुख रूप से पूर्व में घोषित 2 वर्ष का बकाया बोनस राशि को भुगतान किया जाए। जिले में संचालित दो शक्कर कारखाना संचालित हैं उसमें गन्ना किसानों को राशि भुगतान नहीं हुआ है, राशि का तत्काल भुगतान किया जाए। रबी फसल में असमय जो बारिश और ओला वृष्टि हुई है, उसमें जो फसलों की क्षति हुई है उसमें प्रधानमंत्री फसल योजना के माध्यम से किसानों को मुआवजा राशि प्रदान की जाए। प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में जारी राजीव गांधी न्याय योजना के अंतिम किश्त की राशि मे 30 से 50 प्रतिशत तक की कटौती करते हुए करीब 470 करोड़ की राशि किसानों को कम जारी की गई है, इस अंतर की राशि को तत्काल किसानों को जारी किया जाए। कांग्रेस ने राज्य में सरकार बनने से पहले किसानों का दाना-दाना धान खरीदने का वादा किया था, चूंकि छत्तीसगढ़ में रवि की फसल भी पर्याप्त मात्रा में होती है, अतः पूरे प्रदेश में किसानों की रवि की फसल की खरीदी 2500 रूपए प्रति क्विंटल में तत्काल प्रारंभ किया जाए।

जनता से छलावा कर रही सरकार

किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष भुनेश्वर चंद्राकर ने कहा कि ये भूपेश सरकार छत्तीसगढ़ की जनता के साथ छलावा कर रही है । आज किसानो को खाद के परमिट कटवाने के लिए वर्मी कंपोस्ट खाद के नाम से लूटा जा रहा है। आज जिले में ऐसे दो हजार से ऊपर प्रकरण है जिन्हें आज पर्यंत स्थाई पंप हेतु विद्युतीकरण नही किया गया। जबकि किसानो का डिमांड एक वर्ष से पूर्व सरकार द्वारा पटवा लिया गया है। भाजपा किसानो की आवाज बनके सड़क की लड़ाई लड़ेगी। इस अवसर पर सभी जिला प्रमुख पदाधिकारी एवं भाजपा मंडल के अध्यक्ष गजपल साहू, परमेश्वर चंद्रवंशी, मुकेश ठाकुर, नीलांबर चंद्राकर, राघवेंद्र वर्मा, जिला महामंत्री ओमप्रकाश वर्मा, जिला उपाध्यक्ष युवराज ठाकुर, कोषाअध्यक्ष निर्मालि दिवेदी, किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष गोवर्धन चंद्रवंशी, महामंत्री रामफल यादव, पवन पटेल, संजय मिश्रा, परमेश्वर साहू, राजेंद्र साहू, चंद्राप्रकाश सोनी, नवल किशोर पांडेय, विरेंद्र शर्मा, विरेंद्र सिंह ठाकुर, नकुल ठाकुर, सोनू ठाकुर, रविश राजपूत, पदमराज टंडन, रमेश केशरवानी, अमित चंद्रवंशी, काशीराम साहू, मनोज साहू, कमलेश दिवेदी एवं सभी भाजपा के कार्यकर्ता, एवं किसान धरना-प्रदर्शन में शामिल रहे।

एक जांच ऐसी भी! जिन पर भ्रष्टाचार व अनियमितता का आरोप वही साथ

■ गुपचुप तरीके से नल जल योजना की जांच करने पहुंचे अधिकारी, शिकायतकर्ता को सूचना तक नहीं

राजनांदगांव/नवप्रदेश। जिले में धीरी नल जल योजना में भारी भ्रष्टाचार व अनियमितता की जांच करने बिलासपुर से पहुंचे। बावजूद इसके यह जांच सवालों के घेरे में आ गई। दरअसल, जांच टीम औपचारिकता निभाने तक ही सीमित रही। गुपचुप तरीके से आने के बाद वही अफसर साथ रहे जिन पर गड़बड़ी का आरोप लगा है। मजे की बात यह है कि शिकायतकर्ता को जांच में आने की सूचना तक नहीं दी गई। ऐसे में समझा जा सकता है कि इस शिकायत को अफसर किस संजीदगी से ले रहे। जांच टीम जिले के तोरण कटा, सुंदरा, सोमनी और इंदा वाणी गांव गए यहां सबसे आश्चर्य की बात यह देखने को नजर आई जिस गांव में सबसे ज्यादा शिकायत थी, वहां गए ही नहीं। जांच में पहुंचे मुख्य अभियंता बिलासपुर एचआर मसकोले, एसी आरके गेंदले राजनांदगांव पीएचई के उप अभियंता वीरेंद्र वैष्णव, मयंक शर्मा आखिर में ग्राम इंदा वाणी में जांच करने पहुंचे थे।

28 करोड़ खर्च करने के बाद बूंद-बूंद को तरसे

प्रोजेक्ट धीरी नल जल योजना के नाम पर सर्वप्रथम लगभग 28 करोड़ प्रस्ताव किया था। 28 करोड़ रुपए खर्च करने के बाद भी यह योजना खुद आज भी पानी की तलाश कर रही है और तो और इसके बाद कार्यपालन अभियंता राजनांदगांव एसएन पांडे के द्वारा मेंटेनेंस के नाम पर 15 करोड़ पुनः स्वीकृत कराया गया। अब इस योजना की लागत लगभग 42 करोड़ हो गई। इनती रकम खर्च करने के बाद भी 24 गांव के ग्रामीणों को आज तक पानी नसीब नहीं हो रही। इसकी शिकायत विभाग के मंत्री को एवं विभागीय बड़े अधिकारियों को अवगत कराया था किंतु आज पर्यंत तक जिन अधिकारियों एसएन पांडे, ईश्वर दास वैष्णव, तारा देवी वैष्णव पर किसी प्रकार का कोई भी कार्यवाही नहीं हुई है और ना ही जांच हुई।

ग्रामीणों के समक्ष बनाया पंचनामा

इस संबंध में जब इंदा वाणी गांव में मुख्य अभियंता बिलासपुर एचआर मसकोले से चर्चा की गई तो उन्होंने कहा कि ग्रामीणों के समक्ष पंचनामा बनाया गया है। इसमें ग्रामीणों से हस्ताक्षर भी भी करवाया गया है। इस समस्या का समाधान जल्द निकाला जाएगा। ग्रामीणों को पानी उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की जाएगी।

यह एक गंभीर विषय

बिलासपुर से आए जांच अधिकारी आरके गेंदले ने कहा कि इस योजना के तहत 24 गांव के ग्रामीणों को दो वक्त पानी देने के लिए जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत कार्य किया जा रहा है जिस जगह पानी नहीं आ रहा है उसका सही तरीके से जांच कर ग्रामीणों को पानी उपलब्ध कराया जाएगा इतनी बड़ी योजना होने के बाद भी पानी उपलब्ध नहीं हो पाना एक गंभीर विषय है।

शासकीय राशि का गबन, डीईओ ने दिए जांच के आदेश

राजनांदगांव/नवप्रदेश। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला, अंबागढ़ चौकी में स्थानीय परीक्षा निधि में गबन का मामला प्रकाश में आया है। वर्तमान में पदस्थ प्राचार्य रमेश साहू के द्वारा इसकी दस्तावेजी साक्ष्य के साथ 21 मार्च को जिला शिक्षा अधिकारी आरएल ठाकुर को इसकी विधिवत् सूचना दे दिया गया था और बताया गया था कि तत्कालिक प्राचार्य श्याम धीवर जो वर्तमान में बीईओ अंबागढ़ चौकी के पद पर कार्यरत है, उनके द्वारा 3200 रूपये की राशि स्वयं के लिए व्यय कर दिया, लेकिन इस राशि का समायोजन नहीं किया गया, जो वित्तीय अनियमितता है। शिकायतकर्त्ता छग मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष प्रेमनारायण वर्मा ने आरोप लगाया है कि इस गबन की जानकारी संबंधित प्राचार्य के द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को दो माह पूर्व दे दिया जा चुका है और डीईओ ने जब इस इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं किया तो मुख्यमंत्री और कलेक्टर तक शिकायत हुई तो अब डीईओ ने जांच के आदेश जारी किया है, जबकि जिला शिक्षा अधिकारी के पास पर्याप्त दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध कराया गया था और मामला शासकीय राशि के गबन का है तो अब तक इस प्रकरण में प्राथमिकी दर्ज हो जाना चाहिए था, लेकिन इस गंभीर मामले में अब तक दोषी के विरूद्ध कोई कार्यवाही नही किया गया। शिकायतकर्त्ता श्री वर्मा ने यह भी आरोप लगाया है जिला शिक्षा अधिकारी दोषी व्यक्ति के साथ सांठगांठ कर उसे बचाने का प्रयास कर रहे है ऐसा प्रतित हो रहा है। श्री वर्मा का कहना है कि अनुकंपा नियुक्ति देने के एवज में 35000 रिश्वत लेने की शिकायत पर बालोद में आरएल ठाकुर को निलंबित कर दिया गया था और इस गबन के प्रकरण में भी अब तक दोषी श्याम धीवर को बचाने का प्रयास किया जा रहा है जो चिंता का विषय है। श्री वर्मा ने अब इस प्रकरण में मुख्यमंत्री को शिकायत कर तत्काल कार्यवाही करने की मांग की गई है।

संघ के अध्यक्ष पर मनमानी करने का आरोप, निर्वाचन समिति के सदस्य मिलेंगे कलेक्टर से

कवर्धा/नवप्रदेश। आगामी 12 जून को सर्व अधिकारी कर्मचारी महासंघ का विधिवत चुनाव कराने के लिए विभिन्न कर्मचारी संघों के जिलाध्यक्षों के द्वारा 7 सदस्यी निर्वाचन समिति का गठन किया गया। समिति में भवेंद्र शर्मा अध्यक्ष लिपिक वर्ग कर्मचारी संघ, नंद कुमार निर्मलकर अध्यक्ष लघु वेतन कर्मचारी संघ, व्यास नारायण तिवारी अध्यक्ष राज्य कर्मचारी संघ, सुभान अली हाशमी अध्यक्ष शिक्षक कांग्रेस, संतोष सोनी अध्यक्ष कर्मचारी कांग्रेस, प्रताप चंद्रवंशी अध्यक्ष तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ और जिले के सबसे वरिष्ठ व सर्वमान्य कर्मचारी नेता विद्याभूषण दुबे को शामिल किया गया है। निर्वाचन समिति के सदस्यों के द्वारा वर्तमान अध्यक्ष दिलीप चंद्रवंशी को 12 जून को 6 वर्षों का आय-व्यय की जानकारी और भवन संबंधित समस्त दस्तावेजों के साथ उपस्थित होने के लिए कहा गया है । सर्व अधिकारी कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष दिलीप चंद्रवंशी की कार्यशैली के विरोध में विभिन्न कर्मचारी संघों के पदाधिकारियों ने आकस्मिक बैठक ली। कर्मचारी भवन में आयोजित बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने एक स्वर में संघ के महासंघ के अध्यक्ष श्री चंद्रवंशी पर महासंघ के कर्मचारी भवन को निजी संपत्ति की तरह उपयोग करने, बिना कार्यकारिणी के अनुमोदन के भवन के कार्यक्रम हाल को एक निजी संस्था को कोचिंग के लिए किराए पर देने का आरोप लगाया है । इसके अलावा लगभग 6 वर्षों का आय-व्यय का विवरण नहीं देने, मनमाने ढंग से जिस दिन चाहे बैठक आहूत करने का भी आरोप लगाया गया है ।

स्वास्थ्य व जिला प्रभारी मंत्री के द्वारा महासंघ को कार्यक्रम में उपस्थिति के लिए समय देने के बाद भी कार्यक्रम तय नहीं करना, स्थानीय विधायक और पर्यावरण मंत्री को अपने मर्जी से जब चाहे जहां चाहे महासंघ के लेटर पैड पर ज्ञापन दे देना, महासंघ के लेटरपैड का दुरूपयोग करने का भी आरोप श्री चंद्रवंशी पर लगाया गया है।

बैठक में तमाम स्थितियों परिस्थितियों पर विचार विमर्श करने के बाद आगामी 12 जून को श्री चंद्रवंशी की उपस्थिति में महासंघ का चुनाव कराने का निर्णय लिया गया है। निर्वाचन प्रक्रिया में श्री चंद्रवंशी द्वारा बाधा उत्पन्न करने की स्थिति में निर्वाचन समिति के द्वारा कलेक्टर से भेंट कर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराने का भी निर्णय लिया गया।

शिवानी का नपाध्यक्ष ने किया सम्मान

भाटापारा/नवप्रदेश। जेसीज कान्वेंट स्कूल में अध्ययनरत छात्रा शिवानी पाण्डेय ने 12 वीं बोर्ड में पूरे जिले में द्वितीय स्थान व भाटापारा में प्रथम स्थान किया है। भाटापारा नगरपालिका अध्यक्ष सुनीता गुप्ता व शिक्षा विभाग सभापति श्वेता मिश्रा ने शिवानी को गुलदस्ता भेंट कर बधाई और शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष आलोक मिश्रा, जिला कांग्रेस सचिव सुनील गुप्ता और छात्रा के परिजन उपस्थित थे।

निधन

डॉ किशोरसिंह ठाकुर

भाटापारा। निकटवर्ती ग्राम फरहदा निवासी जनपद सदस्य वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ किशोर सिंह ठाकुर का 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। उनका अंतिम संस्कार स्थानीय रामसागरपारा स्थित मारवाड़ी श्मशान घाट में किया गया। वे आशीष सिंह और आदित्य सिंह के पिता थे। उनके निधन पर जनप्रतिनिधियों सहित अनेक लोगो ने दुख प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि दी है।

गृह मंत्री साहू ने भोरमदेव मंदिर में की पूजा-अर्चना

कवर्धा/नवप्रदेश। गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू ने आज भोरमदेव मंदिर में भगवान शिव की पूजा अर्चना की। उन्होंने भगवान शिव से प्रदेश एवं देशवासियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। उन्होंने प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि एवं खुशहाली के लिए प्रार्थना की। गृह मंत्री साहू के साथ परिवार के सदस्यों ने भी पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेंद सिंह, बोड़ला एसडीएम पीसी कोरी सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

यज्ञ व श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन से होता है क्षेत्र का कल्याण : पांडेय

कवर्धा/नवप्रदेश। राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के सांसद संतोष पांडेय बोड़ला ब्लाक अंतर्गत ग्राम बैजलपुर में आयोजित श्री विष्णु महायज्ञ व श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं वनवासी सामूहिक विवाह महोत्सव में शामिल हुए। उन्होंने भगवान की पूजा-अर्चना की व कथा श्रवण किया। सांसद पांडेय ने कहा कि वनांचल क्षेत्र में ऐसे आयोजन होते रहना चाहिए। यज्ञ व श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन से क्षेत्र व लोगों का कल्याण होता है। कथा श्रवण करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। वातावरण शुद्ध होता है। उन्होंने यज्ञ कुंड की परिक्रमा की। सांसद ने पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना। इस दौरान छग गौसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष बिसेसर पटेल, भाजपा के प्रदेश मंत्री विजय शर्मा, जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष विदेशीराम धुर्वे, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र चंद्रवंशी, जिला कोषाध्यक्ष अजीत चंद्रवंशी, मंडल अध्यक्ष बरसाती वर्मा, उपाध्यक्ष द्वय नरेश चंद्रवंशी, विजय पाटिल, महिला मोर्चा की जिला महामंत्री सुषमा चंद्रवंशी, सांसद प्रतिनिधि कांशीराम उइके, जयराम साहू, संतोष मानिकपुरी, अशोक चंद्रवंशी, अमित वर्मा, संदीप गुप्ता, सुनील मानिकपुरी, संजय साहू, कुलदीप चंद्रवंशी, अन्य पदाधिकारीगण, स्थानीय जनप्रतिनिधिगण, कार्यकर्तागण सहित ग्रामीणजन मौजूद थे।

रेडी टू ईट बनाने वाला समूह बेरोजगारी की कगार पर

■ अनुबंध के बाद भी नहीं मिल रहा सप्लाई का काम, बीज निगम भी दे दिया धोखा

बालोद/नवप्रदेश। बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए शुरू की गई सरकार की रेडी टू ईट की योजना गायब सी हो गई है। आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को इसका लाभ नहीं मिल रहा है ना ही हितग्राही महिलाओं को। आलम यह है कि रेडी टू ईट बनाने वाली महिला समूह बेरोजगार बैठी है। शासन के निर्देश के मुताबिक अब रेडी टू ईट बनाने का काम बीज निगम को दे दिया गया है। इसका विरोध महिला समूह द्वारा जब किया गया तो महिला एवं बाल विकास विभाग की मंत्री अनिला भेड़िया ने स्पष्ट कहा था कि महिला समूह इसमें बेरोजगार नहीं होंगी। बल्कि वह सप्लाई का काम कर सकेंगे। इसके लिए शासन के निर्देश के तहत ही बीज निगम और संबंधित महिला समूह के मध्य अनुबंध भी कराया गया। जिसमें विभिन्न शर्तो के पालन के साथ-साथ कहा गया कि समूह को रेडी टू ईट वितरण करवाने के बदले एकमुश्त 15000 महीना दिया जाएगा। चाहे समूह के क्षेत्र में कम हितग्राही हो या ज्यादा हो। इसके अलावा और भी कई शर्ते रखी गई। जिनके तहत पालन करते हुए समूह को काम करने की अनुमति दी गई। बीज निगम और महिला समूहों के बीच शासन के निर्देश पर ही अनुबंध करार हुआ लेकिन अब बीज निगम भी धोखा दे दिया है महिला समूह को सप्लाई का काम दिया ही नहीं दिया है और किसी एग्रो फूड कंपनी के जरिए सप्लाई करवाने की तैयारी की जा रही है।

अप्रैल से रेडी टू ईट नहीं मिल रहा

अप्रैल से आंगनबाड़ी केंद्रों में रेडी टू ईट की सप्लाई नहीं हो रही है। जिससे बच्चे और महिलाएं दोनों वंचित हैं। रेडी टू ईट में कई पोषक तत्व मिले होते हैं। जो बच्चों के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। तो वहीं महिलाओं के लिए भी पूरक पोषण आहार है। लेकिन इसकी सप्लाई ना होने से शासन की इस योजना का लाभ लगभग 2 माह से नहीं मिल पा रहा है। अभी भी ना अप्रैल का रेडी टू ईट बटा है ना ही मई का। और यह महीना भी समाप्त होने को आ गया है। किसी भी तरह से वितरण को लेकर कोई व्यवस्था नहीं बनाई गई है।

अनुबंध का हो रहा उल्लंघन : महिला समूह

महिला समूह को काम ना मिलने पर नाराजगी है। महिला समूह के पदाधिकारियों का कहना है कि अनुबंध का उल्लंघन किया जा रहा है। शासन ने खुद निर्देश दिया इसके बाद बीज निगम ने समूह के साथ अनुबंध किया। पूरी लिखा पढ़ी और शर्तो के साथ तय किया कि कैसे हमें सप्लाई करनी है और क्या-क्या नियमों का पालन करना है। लेकिन सप्लाई का काम दिए बगैर अनुबंध की शर्तो से दूर भागते हुए बीज निगम अब समूह से सप्लाई ही नहीं करवाई और दूसरी कंपनी को सप्लाई का काम दे दिया गया है।

हाई कोर्ट में याचिका दायर से पहले हुआ था अनुबंध

महिला समूह से जुड़े लोगों का कहना है कि शासन द्वारा जब महिला समूह का काम छीना गया तो इसके विरोध में सैकड़ों स्व सहायता समूह द्वारा सामूहिक रूप से हाई कोर्ट में याचिका दायर की गई थी। हालांकि शासन ने उनकी याचिका खारिज की लेकिन इस याचिका दायर करने से पहले ही बीज निगम और महिला समूहों के बीच सप्लाई करने को लेकर अनुबंध हो चुका था। इसके बावजूद बीज निगम इस अनुबंध की अनदेखी कर महिला समूह के साथ अन्याय कर रही है। तो वही बालोद जिले की रहने वाली महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री अनिला भेड़िया भी अपने वादे पर खरी नहीं उतर पा रही है। जिसके चलते महिला समूह में जन आक्रोश है। अब देखने वाली बात होगी कि जो सरकार महिला समूह को बढ़ावा देने की बात करती है, उन्हें रोजगार मुहैया करवाने का वादा करती है वह महिला समूहों को रेडी टू ईट के काम से क्या पूरी तरह वंचित करेगी या फिर उन्हें अनुबंध की शर्तो के अनुसार सप्लाई का काम दिया जाएगा।

मोहरेंगा में दिन दहाड़े चला बुलडोजर, मकान सहित सामान जमींदोज

■ मालगुजार के खिलाफ लामबंद हुए ग्रामीण

■ जमींदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर तहसील ऑफिस पहुंचे ग्रामीण

■ 35 साल से रह रहा था परिवार उस जगह

खरोरा/नवप्रदेश। खरोरा तहसील के ग्राम मोहरेंगा में गांव के मालगुजार ने 35 साल से रह रहे एक ग्रामीण के घर पर दिन दहाड़े बुलडोजर चला दिया। चंद मिनिटों में कच्चा घर जमींदोज हो गया और साथ में पूरा सामान भी। आरोपी जमींदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर ग्रामीण तहसील ऑफिस पहुंचे और प्रदर्शन किया। आरोपी मालगुजार ओमी गुप्ता व लक्ष्मी गुप्ता दोपहर में तोरण लाल के घर पहुंचे और सीधे बुलडोजर चलाकर कच्चे मकान को जमींदोज कर दिया। घर वाले कुछ समझ पाते तब तक घर में रखा सभी समान, खाने-पीने के बर्तन सब जमींदोज हो गए। गांव में इस बात की खबर लगते ही बड़ी संख्या मे ग्रामीणों ने एकत्रित होकर विरोध किया। ग्रामीणों के विरोध को देखते हुए मालगुजार वहां से चलता बना। मामले की शिकायत को लेकर ग्रामीण खरोरा थाने पहुंचे जहां पुलिस वालों ने राजस्व का मामला बताकर तहसील कार्यालय भेज दिया। तहसील ऑफिस पहुंचकर ग्रामीण मालगुजार ओमी गुप्ता व लक्ष्मी गुप्ता की गिरफ्तारी की मांग को लेकर घंटों डटे रहे।

ग्रामीणों के गुस्से को भांप एसडीएम टंडन व तहसीलदार खरोरा ने कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिया तब जाकर ग्रामीणों का गुस्सा शांत हुआ।

हमने मामले को संज्ञान में लिया है

तहसीलदार कृष्ण कुमार साहू ने बताया कि ग्रामीणों के शिकायत पर हमने मामले को संज्ञान में लिया है क्योंकि जमीन किसी की भी हो इस तरह की कार्रवाई करना गैरकानूनी है व नियम विरुद्ध है। हम शिकायत के आधार पर विधि सम्मत कार्रवाई करेंगे।

अचानक आया और मकान पर चला दिया बुलडोजर

पीड़ित तोरण साहू ने बताया कि ओमी गुप्ता अचानक आए और कच्चे मकान पर बुलडोजर चलाना शुरु कर दिया। जिसके चलते हमारा कीमती सामान सहित बर्तन, राशन सब जमीदोज हो गया। हम इस जगह पर 35 साल से काबिज थे। इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत मकान को बनाया था लेकिन जमीदार ने स्वयं की भूमि बताकर अचानक कच्चे मकान को बुलडोजर से तोड़ दिया। जिस की जानकारी हमने तहसीलदार के समक्ष की।

गरीब के कच्चे मकान को तोड़ा

सरपंच सरजू साहू ने बताया की अचानक जमीदार ओमी गुप्ता द्वारा गरीबों के कच्चे मकान को तोड़ा गया जो कानून के विरुद्ध है। इसकी शिकायत हमने तहसीलदार और थाने में की है और ओमी गुप्ता की गिरफ्तारी की मांग की है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता,
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड, राजनांदगांव (छ.ग.)
07744-224035 (O) E-mail-eeraj-phe-cg@nic.in
// ई-प्रोक्योरमेंट //
// निविदा आमंत्रण सूचना //

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र-''ए'' में जल जीवन मिशन अंतर्गत जल जीवन मिशन अंतर्गत एकल ग्राम नल जल प्रदाय योजनांतर्गत जिला राजनांदगांव के विभिन्न विकासखंडों के विभिन्न ग्रामों में UPVC/HDPE पाईप लाईन जोड़ने बिछाने, उच्चस्तरीय जलागार निर्माण, उच्चस्तरीय जलागार सुधार कार्य, स्वीच रूम, उच्चस्तरीय जलागार के चारों ओर बाउण्ड्रीबाल निर्माण, सबमर्सिबल पंप का प्रदाय एवं स्थापना कार्य, विद्युत विभाग (CSPDCL) से इलेक्ट्रिक कनेक्शन, इलेक्ट्रोक्लीनेटर स्थापना, क्लोरीनेटर रूम, घरों एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत नल कनेक्शन प्रदाय आदि एवं अन्य मरम्मत कार्य, टेस्टिंग, 03 माह का ट्रायल रन, 06 माह का संचालन संधारण का कार्य (सम्पूर्ण कार्य सामग्री सहित, संलग्न शेड्यूल अनुसार) की मुहरबंद निविदाएं दिनांक 18.05.2022 से आन लाईन पर आमंत्रित की जाती है। उपरोक्त कार्य के निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in से दिनांक 25.05.2022 से डाउनलोड की जा सकती है तथा निविदा डाउनलोड करने की अंतिम दिनांक 07.06.2022 (शाम 5.30 बजे) तक है।

क्रं.	निविदा क्रमांक	सिस्टम क्रमांक	विकासखण्ड योजना/ग्राम का नाम	अनुमानित लागत (रु. लाख में)
1	27	100032	डोंगरगांव बिजेभाठा	99.98
2	28	100033	डोंगरगांव गुंगेरी नवागांव	110.98
3	29	100034	राजनांदगांव डोम्हाटोला	56.17
4	30	100035	राजनांदगांव मकरनपुर	57.58
5	31	100036	राजनांदगांव भेड़ीकला	78.25
6	32	100037	राजनांदगांव बागतराई	92.79
7	33	100038	राजनांदगांव धर्मापुर, बरगाही (डी)	143.00
8	34	100039	राजनांदगांव कांकेतरा, घुमका	180.90
9	35	100040	राजनांदगांव पचपेड़ी	92.37

जी-91433/5

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड,
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय भूमि को उद्योग विभाग को हस्तांतरित करने का विरोध

■ **किसान नेता के नेतृत्व में ग्रामीणों ने सौंपा ज्ञापन, आंदोलन की दी चेतावनी**

बेमेतरा/नवप्रदेश। बेरला ब्लाक के ग्राम बोरसी में शासकीय भूमि को उद्योग विभाग को हस्तांतरित किए जाने को लेकर ग्रामीणों ने लिखित आपत्ति दर्ज कराई हैं। किसान नेता योगेश तिवारी के नेतृत्व में ग्राम बोरसी के ग्रामीणों ने बेरला एसडीएम संदीप ठाकुर को 11 बिंदुओं में ज्ञापन सौंपकर गांव की शासकीय भूमि को उद्योग विभाग को हस्तांतरित किए जाने पर आपत्ति दर्ज कराई हैं। इस संबंध में किसान नेता योगेश तिवारी ने बताया कि ग्राम बोरसी स्थित भूमि खसरा नंबर 614 रकबा 18.01 हेक्टेयर के हस्तांतरण उद्योयोग विभाग को करने रेवेन्यू विभाग की आम सूचना प्रकाशित कराई गई। उद्योग स्थापना के लिए इस भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा हैं, इसलिए ग्राम बोरसी के ग्रामीणों आपत्ति दर्ज कराई हैं। किसान नेता योगेश तिवारी ने कहा कि ग्रामीणों की मांग पूरा नहीं होने की स्थिति में आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। इस दौरान ओमप्रकाश पान्डे, राजु

वर्मा, डरतिराम साहू, नेम सिंह, संदीप वर्मा, शत्रुहन पारधी, विजय राम, रामपलट पाल, हीरा साहू, सतीश चंद्राकर, कलानाथ, रमेश साहू, मनोज निषाद, कमल संगीता पाटिल, संजू वर्मा, जानकी निर्मलकर लखण चक्रधारी मनोज पटेल आदि उपस्थित थे।

निस्तारी के लिए और कोई विकल्प नहीं

ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम बोरसी में लगभग 2 हजार 500 पशुधन हैं, जिनके चारागाह के लिए खसरा नंबर 614 रकबा 18.01 हेक्टेयर आरक्षित हैं। गांव में इसके अलावा निस्तारी के लिए और कोई शासकीय जमीन नहीं हैं। इस जमीन को उद्योग विभाग को हस्तांतरित किए जाने पर, उद्योग विभाग के द्वारा विभिन्न प्रकार के उद्योगों को स्थापित किया जाएगा। जिससे वायु और जल प्रदूषण बढ़ेगा। वैसे भी हम लोग पास स्थित उरला, सिलतरा के उद्योगों के द्वारा प्रदूषित वायु एवं जल से बहुत परेशान हैं। वायु एवं जल प्रदूषण से खेती पर विपरीत असर पड़ेगा। सभी खेती किसानी करके अपने जीवन यापन करते हैं। उद्योगों के प्रदूषण से हमारी खेती चौपट हो जाएगा।

भूजल दोहन से बढ़ेगा जल संकट

किसान नेता योगेश तिवारी के अनुसार उद्योग स्थापित होने से भूजल का दोहन बढेगा और वाटर लेवल नीचे जाने से कृषि कार्य प्रभावित होगा। जल संकट गहराने से पेयजल समस्या बढ़ेगी। भविष्य में ग्राम बोरसी में किसी भी प्रकार की विकास कार्य के लिए खसरा नंबर 614 रकबा 18.01 हे. भूमि के अलावा और जमीन नहीं हैं। इसलिए सभी ग्रामवासी बोरसी स्थित शासकीय भूमि को उद्योग विभाग को देने का विरोध करते हैं।

निषाद समाज ने स्वाभिमान के साथ बनाई अलग पहचान : आशीष

■ **सामुदायिक भवन निर्माण के लिए विधायक ने 10 लाख देने की घोषणा**

बेमेतरा/नवप्रदेश। जिला निषाद (केवट) समाज बेमेतरा द्वारा टाउन हाल बेमेतरा में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में मुख्य अतिथि संसदीय सचिव कुंवर सिंह निषाद सहित बेमेतरा विधायक आशीष छाबड़ा शामिल हुए। विधायक ने कहा कि बेमेतरा के पावन भुईया में जिला निषाद (केवट) समाज के द्वारा वार्षिक सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया है, प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में प्रदेश की सरकार समाज के हर वर्ग की खुशहाली के लिए काम कर रही है। सभी समाज के लोगों को आगे बढ़ने का अवसर मिले इसके लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। सरकार छत्तीसगढ़िया स्वाभिमान को बढ़ाने का कार्य कर रही है। यहां कि संस्कृति को पुर्नजीवित कर लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा हैं। प्रदेश सरकार निषाद समाज के उत्थान के लिए लगातार कार्य कर रही है, शिक्षा, रोजगार से लेकर समाज के परंपरागत मछली पालन के व्यवसाय के लिए शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण दिया जा रहा हैं, मछली पालकों को किसानों की भांति बिजली की सुविधाएं भी मुहैया कराई जा रही हैं। निषाद (केवट) समाज स्वाभिमान के साथ अपनी अलग पहचान बनाए हुए है, परम्परागत व्यवसाय के अलावा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज मजबूती से आगे बढ़ी हैं। समाजजनों के मांग के अनरूप विधायक श्री छाबड़ा ने जिला निषाद समाज सामुदायिक भवन निर्माण हेतु किए 10 लाख रुपए की घोषणा की। इस अवसर पर आनद निषाद प्रातीय अध्यक्ष, बोधिराम निषाद प्रांतीय महासचिव, दिलीप निषाद जिला अध्यक्ष, बंसी पटेल अध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी बेमेतरा, सुमन गोस्वामी अध्यक्ष शहर कांग्रेस कमेटी बेमेतरा, ललित विश्वकर्मा महामंत्री जिला कांग्रेस, रामअतार निषाद, टिकुराम निषाद, नेमा निषाद, लीलाराम निषाद, जेडी धीवर, बशीलाल निषाद, कमलेश निषाद, शिव निषाद, कंशराम निषाद, रेवाराम निषाद, नरेंद्र निषाद सहित बड़ी संख्या में समाज के पदाधिकारीगण उपस्थित रहें।

कोरोना योद्धा डॉ सूरज कोसरिया की प्रथम पुण्यतिथि आज

भटगांव। डॉ सूरज कोसरिया (आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी) का 24 मई 2021 का कोरोना से निधन हो गया था। आज 24 मई 2022 को उनकी प्रथम पुण्यतिथि है। उनके गृह ग्राम साजापाली (महासमुंद) में उन्हें याद करते हुए उनकी पुण्यतिथि पर वार्षिक श्राद्ध व श्रद्धांजलि दी जायेगी। डॉ सूरज कोसरिया का जन्म 14 मई 1967 को स्वर्गीय लक्ष्मण कोसरिया (शिक्षक) जी माता सुसीला ,फूलबाई कोसरिया के घर जन्म हुआ था वे बचपन से ही होनहार छात्र रहे। वे आयुर्वेद की पढ़ाई कर बीएएमएस की और 2007 में अपनी सेवा देना शुरू किया। वही 2009 -10 में कोल्हियादेवरी व वर्तमान 2021 में गडफुलझर में अपनी सेवा दे रहे थे। कोरोना काल के समय पिथौरा हॉस्पिटल में कोविड वार्ड में अपनी सेवा देते हुए कोरोना संक्रमित हो गए थे और कोरोना से उनका निधन हो गया। वे अपने पीछे पूरा भरा परिवार छोड़ गए। कोरोना योद्धा डॉ सूरज कोसरिया के निधन से सतनामी समाज को बड़ी क्षति हुई। उनके निधन से समाज स्तब्ध रहा जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। समाज उनकी अवदान को नहीं भूल सकेगी।

कलेक्टर ने ली बैठक : रेडी टू ईट का वितरण मंगलवार से शुरू करने के दिए निर्देश

■ **गौठानों में फेंसिंग कर चारागाह विकसित करने का भी जारी किया फरमान**

गरियाबंद/नवप्रदेश। कलेक्टर नम्रता गांधी ने समय सीमा की बैठक में गौठानो में 10 दिन के भीतर फेंसिंग करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि आगामी मानसून को ध्यान में रखते हुए चारागाह विकसित करने फेंसिंग आवश्यक है। साथ ही सभी जनपद सीईओ को कृषि, उद्यान विभाग अंतर्गत सब्जी बीज मिनी किट वितरण, मुर्गी पालन, मछली बीज वितरण और मछली पालन समूहों का पंजीयन करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा जिन गौठानों में गौठान समिति नही बन पाए हैं वहां समिति बनाने के निर्देश दिए हैं। वर्मी टंकी में शेड बनवाने और वर्मी कंपोस्ट की क्वालिटी चेक करने के लिए निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने समय-सीमा की बैठक में साप्ताहिक पत्रों की समीक्षा करते हुए कहा की समय सीमा के भीतर प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित हो। उन्होंने देवभोग में वनधन केंद्र इस सप्ताह तक पूर्ण करने और फिंगेश्वर और छुरा में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी मीडियम स्कूल को तत्काल पूर्ण करने के निर्देश आरईएस विभाग को दिए हैं। कमार भुंजिया जनजाति शिविर के दौरान प्राप्त प्रकरणों का 15 दिवस के भीतर निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। पात्र आवेदनों पर कार्रवाई करते हुए वन अधिकार पट्टा भी प्रदान करने के निर्देश कलेक्टर द्वारा दिए गए। राजस्व विभाग के लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने समय सीमा अंतर्गत प्रकरणों की सुनवाई करने और यदि समय सीमा के बाहर हुई तो कारण दर्ज करने कहा गया है। अनुविभागीय अधिकारियों को अवैध कॉलोनियों पर कार्रवाई करते हुए उस स्थल पर सूचना बोर्ड प्रदर्शित करने के निर्देश दिए गए है। बैठक में महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि जिले में रेडी टू ईट का वितरण मंगलवार से किया जाएगा, सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में मई माह के 2 सप्ताह का रेडी टू इट प्रदान किया जाएगा। कलेक्टर ने सभी ग्राम पंचायतों में मुनादी कराने के निर्देश दिए हैं। बैठक में जाति प्रमाण पत्र, धनवंतरी मेडिकल, मुख्यमंत्री मोबाइल यूनिट पर समीक्षा की गई।

अंतर्राज्यीय महिला चोर गिरोह का पर्दाफास

बेमेतरा। थाना बेमेतरा स्टाफ को पेट्रोलिंग के दौरान 23 मई को मुखबिर से सूचना मिली कि दो महिलाएं चोरी के सोने के आभूषण बेचने के लिए ग्राहक की तलाश राम मंदिर सदर बाजार बेमेतरा के पास में कर रही हैं। सूचना पर बेमेतरा पुलिस मौके पर पहुंचकर दोनों महिलाओं ने नाम ममताज बेगम एवं मरीयम बीवी बताया। दोनों महिलाओं से पूछताछ करने पर 16 मई को शाम में कोरबा की सोनार दुकान से एक सोने का हार चोरी करना स्वीकार किया। उक्त सोने की हार वजनी 25 ग्राम 280 मिली ग्राम कीमत करीबन 1.40 लाख रूपये आंकी गई है। आरोपी ममताज बेगम पति आयुब खान उम्र 36 साल साकिन बोरामरी बेलपुर थाना देगंगा जिला उत्तर 24 परगना राज्य पश्चिम बंगाल, मरीयम बीवी पति गफर अली उम्र 58 साल साकिन देउली थाना देगंगा जिला उत्तर 24 परगना राज्य पश्चिम बंगाल को 23 मई को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना बेमेतरा प्रभारी निरीक्षक प्रेम प्रकाश अवधिया, सउनि जितेद्र कश्यप, सउनि अरविंद शर्मा, प्रधान आरक्षक रविन्द्र तिवारी, हेमंत साहू, रामेश्वर मांडले, महिला आरक्षक प्रधान आरक्षक बालमती नायक, आरक्षक विनोद पात्रे, इंद्रजीत पांडेय, शिव कुमार सेन, राहूल यादव, महिला आरक्षक नंदनी यादव, एवं अन्य थाना स्टाफ की सराहनीय भुमिका रही।

कर्मचारी संघ बालोद ने दी आर्थिक मदद

बालोद। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अर्जुन्दा में पदस्थ वाहन108 के युवा कर्मचारी कोमल चौधरी की ड्यूटी के दौरान 20 मई को आकस्मिक मृत्यु हो गई थी। जिससे स्वास्थ्य विभाग में शोक व्याप्त है। कोमल चौधरी के ऊपर अपने संपूर्ण परिवार का दायित्व था। जिसे देखते हुए स्वास्थ्य एवं बहुउद्देशीय कर्मचारी संघ ने पीड़ित परिवार की यथासंभव मदद करने का निर्णय लिया। स्वास्थ्य एवं बहुद्देश्यीय कर्मचारी संघ बालोद के जिलाध्यक्ष घनश्याम पुरी एवं संघ के पदाधिकारियों द्वारा उनके परिजनों से मिलकर सांत्वना राशि 11 हजार रुपये नगद आर्थिक मदद की। जिससे परिवार को तात्कालिक राहत मिल सके। इस हेतु विभाग से परिवार को और भी मदद दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। स्वास्थ्य एवं बहुद्देशीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष ने मृत कर्मचारी की पत्नी को अनुकम्पा नियुक्ती देने की मांग मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से की है। जिससे गरीब व दुःखी परिवार को जीवन यापन करने हेतु सहायता मिले। इस दुःख की घड़ी में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कुर्दी,प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रनचिरई ,प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गुरेदा ,प्राथमिक स्वास्थ्य केन्दे देवरी के सभी कर्मचारी एवं संगठन के सदस्यगण महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष मीता चटर्जी,कोषाध्यक्ष कु. अंजना राठौर, सुनील देवांगन(आर एम ए प्रकोष्ट के जिलाध्यक्ष), पी जोशी (आर एम ए), गौतम वर्मा (आर एम ए), मुनमुन सरकार (आर एम ए),नेत्र सहायक अधिकारी मोकेस्वर दास हिरवानी, के,बी,पाल, रोशन प्रजापति, सीएमएचओ ऑफिस के कर्मचारी सुरेंद्र सोनकर , श्रीमती पी नायडू ,पुष्पा तारम वार्ड आया,नंदकुमार वार्डबॉय, गायकवाड़ वार्डबॉय ,मनीष वार्डब्वाय,रिकू देवरणकर जेएसए,अनुपमा देवांगन, वैशाली बारले एमएल टी के द्वारा दुखी परिवार को आर्थिक मदद करते हुए शासन प्रशासन से तत्काल पीड़ित परिवार को हर संभव मदद देने का आह्वान किया गया है।

शादी की सालगिरह के दूसरे दिन हुई थी मौतः ज्ञात हो कि 1 साल पहले ही मृतक की शादी हुई थी। मृत्यु के 1 दिन पहले ही उसने शादी की सालगिरह मनाई थी लेकिन वह भी ड्यूटी पर रहते। वह पत्नी के साथ कहीं घूमने नहीं जा पाया ना उनके साथ समय बिता पाया। क्योंकि वह ड्यूटी को महत्व देता था। मिलनसार व्यक्तित्व का था।उनके इस तरह आकस्मिक मौत से लोगों ने शोक जताया। स्वास्थ्य विभाग ही नहीं अर्जुंदा व आसपास क्षेत्र के लोगों ने इस घटना से दुखी होकर मृत आत्मा को श्रद्धांजलि दी।

पीजीएमओ को सिविल सर्जन ने जारी किया नोटिस

गरियाबंद/नवप्रदेश। जिला चिकित्सालय गरियाबंद में पदस्थ पीजीएमओ डॉ. महावीर प्रसाद अग्रवाल को सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. जीएल टंडन द्वारा नोटिस देकर 7 दिवस के भीतर स्पष्टीकरण मांगा गया है। जारी नोटिस में उल्लेखित है कि वायरल वीडियों में उनके द्वारा ड्यूटी रूम में नर्सिंग स्टाफ के साथ अभद्रतापूर्वक व्यवहार करते देखा गया है। इस कृत्य के कारण शासकीय कार्य में व्यवधान उत्पन्न हुआ एवं अस्पताल की छवि धूमिल हुई। यह कृत्य छग सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के नियम 23 के कदाचरण की श्रेणी में आता है।

प्रथम पेज का शेष

बॉलीवुड फिल्म में मछली....

शुरुआत करते हैं। ये सीन उसी पर आधारित था। रोचक बात यह है कि घोटिया में निषाद समाज के अधिवेशन में मुख्यमंत्री का आगमन हुआ था। कार्यक्रम स्थल से लगभग 500 मीटर दूर मुख्यमंत्री को एक तालाब में ले जाया गया। जहां उन्होंने फिल्म का हिस्सा बनते हुए तालाब में जाल फेंक कर इसमें अभिनय किया।

दंतेवाड़ा नेक्स्ट, अब बनेगा...

भर में विख्यात है और अब कटेकल्याण यूनिट के माध्यम से भी इसका कार्य आगे बढ़ेगा। इस मौके पर अपने बीच मुख्यमंत्री को पाकर उनसे आटोग्राफ भी महिलाओं ने चाहा, मुख्यमंत्री ने जैसे ही आटोग्राफ दिये, यूनिट की महिलाओं में खुशी छा गई। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर सांसद दीपक बैज को डेनेक्स की बनी शर्ट भी गिफ्ट की। उल्लेखनीय है कि डेनेक्स के माध्यम से दंतेवाड़ा वस्त्र व्यवसाय के एक नये केंद्र के रूप में स्थापित हुआ है। यहां के कपड़ों की गुणवत्ता की वजह से देश भर में इनकी माँग बढ़ी है और देश भर की व्यापारिक संस्थाएं इनसे एप्रोच कर रही हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि अब तक डेनेक्स के चार यूनिट हारम, बारसूर, कारली, कटेकल्याण में आरंभ हो चुके हैं और पांचवे यूनिट छिंदनार के लिए एमओयू हुआ है। डेनेक्स की यूनिटों के तेजी से प्रसारित होने की वजह से न केवल महिलाओं को रोजगार मिला है अपितु देश भर में संस्थान के कपड़ों की डिमांड होने से अपने कौशल संवर्धन का कार्य भी हो रहा है। उल्लेखनीय यह भी है डेनेक्स की महिलाओं ने ग्यारह किमी लंबी चुनरी का निर्माण भी किया है। जिसे मुख्यमंत्री दंतेश्वरी माई जी को अर्पित करेंगे।

16 महीने पहले ...

देती है।'हारम' में स्थापित पहली डेनेक्स फैक्टरी ने सफलता के कीर्तिमान गढ़ना शुरू कर दिया जिसके बाद बारसूर,कारली और कटेकल्याण ग्राम में भी डेनेक्स यूनिट स्थापित हो चुकी हैं।

मुख्यमंत्री ने लिया...

गया। इड़हर की सब्जी को इस क्षेत्र में सैगोड़ा कहा जाता है, यह कोचई के पत्ते से बनाई जाती है, यह भी परोसा गया। इसी प्रकार जोंदरा (मक्का) का पेज भी परोसा गया।

16 महीने में 50...

स्थापित डेनेक्स की चार यूनिट से कपडों का लाट बंगलुरू भेजा जा रहा था, लेकिन अब डेनेक्स ब्रांड की गूंज विदेशों में भी सुनायी देगी. मुख्यमंत्री के निरीक्षण के दौरान ही डेनेक्स एफ्पीओ (किसान उत्पादक संघ) ने एक्सपोर्ट हाउस, तिरपुर से डेनेक्स की पांचवी यूनिट 'छिंदनार' से अगले 3 वर्षों के लिए एमओयू साइन किया है. इस एमओयू के बाद डेनेक्स की पांचवी यूनिट छिंदनार से तैयार होने वाले कपड़े यूके और यूएस के बाजार में भी नजर आएंगे।

कटेकल्याण में की ...

में एनीकट का निर्माण करने की घोषणा।

कुंआकोंडा में पोस्ट मैट्रिक छात्रावास खोलने की घोषणा।

जापान के चार शीर्ष ...

उत्पादकता लिंक इन्सेंटिव योजना के अंतर्गत निवेश के अवसरों की चर्चा की तथा औद्योगिक विकास, अवसंरचना, कराधान एवं श्रम सुधारों के क्षेत्रों में सुधारों और विदेशी निवेशकों के लिए कारोबारी सुगमता की जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने यूनीक्लो को भारत में वस्त्र विनिर्माण हब बनाने की दिशा में अधिक भागीदारी का आह्वान किया। श्री मोदी ने यूनीक्लो को पीएम मित्र योजना का लाभ लेने का भी प्रस्ताव किया।

सुजुकी के भारत में योगदान को मोदी ने किया याद-

ओसामु सुजुकी के साथ मुलाकात में ने सुजुकी मोटर्स के भारत में योगदान का याद किया और कहा कि इससे भारत में ऑटोमोबाइल्स उद्योग में परिवर्तन आ गया। उन्होंने कहा कि सुजुकी मोटर गुजरात प्राइवेट लिमिटेड और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ऑटोमोबाइल्स और ऑटो कंपोनेंट क्षेत्र में उत्पादकता लिंक इंसेंटिव योजना के पहले लाभार्थी रहीं हैं। उन्होंने भारत में इलेक्टिक वाहनों एवं बैटरियों के उत्पादन एवं रिसाइकिलिंग केन्द्रों की स्थापना एवं निवेश की संभावनाओं पर भी चर्चा की। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत में स्थानीय नवान्वेषण प्रणाली स्थापित की जाये।

जापानी अखबार में ...

वाली हमारी इस विशेष मित्रता की यात्रा को और परिपुष्ट बनाने के लिए मैं भी इसका अनुगमन करता हूं। उन्होंने कहा, कोविड के पश्चात दुनिया में भारत-जापान सहयोग महत्वपूर्ण है। हमारे राष्ट्र लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम दोनों स्थिर एवं सुरक्षित हिंद-प्रशांत के अहम स्तंभ हैं। मुझे प्रसन्नता है कि हम विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर भी साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। श्री मोदी ने कहा-मुझे गुजरात का मुख्यमंत्री होने के दिनों से ही जापान के लोगों के साथ नियमित रूप से संवाद करने का अवसर मिलता रहा है। जापान की विकासात्मक प्रवृत्ति हमेशा प्रशंसनीय रही है। जापान बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी, नवान्वेषण, स्टार्ट-अप सहित कई अहम क्षेत्रों में भारत के साथ भागीदारी कर रहा है।

ताइवान को धमकाने पर ...

लेकिन बलपूर्वक कुछ भी हथियाने का काम चीन करता है तो वह ठीक नहीं होगा। इससे पूरे क्षेत्र में अशांति होगी और यहां भी वैसा ही एक्शन होगा, जैसा यूक्रेन में लिया जा रहा है।' इस तरह जो बाइडेन ने बता दिया कि कैसे पश्चिमी देशों की यूक्रेन को मदद की गई है। इसके चलते रूस को बड़ा झटका लगा है। यदि चीन की ओर से ताइवान को लेकर हमले जैसी हरकत की जाती है तो फिर उसके खिलाफ भी ऐसा ही एक्शन लिया जाएगा।

चीन के इकनॉमिक वारफेयर की कमर तोड़ेगा यह फ्रेमवर्क, पीएम मोदी होंगे शामिल इस दौरान जो बाइडेन ने रूस को लेकर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा, 'यह महत्वपूर्ण है कि यूक्रेन में बर्बरता की कीमत व्लादिमीर पुतिन को चुकानी होगी। रूस को लंबे वक्त तक इसकी कीमत अदा करनी होगी।' उन्होंने कहा कि यह बात सिर्फ यूक्रेन को लेकर ही नहीं है। चीन भी यह देख रहा है कि कैसे पश्चिमी देशों के दखल के चलते रूस को पीछे हटना पड़ा है। चीन को इससे ज्यादा क्या संकेत दिया जा सकता है कि यदि उसने ताइवान पर हमला किया तो फिर क्या कीमत चुकानी पड़ सकती है। उन्होंने कहा कि चीन के पास यह अधिकार नहीं है कि वह ताइवान पर जबरन कब्जा कर ले।

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन
प्रक्षेत्र-4, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)
email ID: eocghbzone5@gmail.com

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी गातापार (अभनपुर) जिला रायपुर में निर्मित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत एलआईजी भवन क्र.-293 श्री राकेश कुमार पिता स्व. श्री ईश्वर नारायण सिंह के नाम पर इस कार्यालय का आबंटन आदेश क्र. 7770 दिनांक 11.07.2011 के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 16.05.2013 को लीजडीड पंजीकृत करा लिया गया है। दिनांक 06.01.2019 को मूल आबंटी श्री राकेश कुमार पिता स्व. श्री ईश्वर नारायण सिंह का निधन होने के उपरांत उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीणा सिंह पति स्व. श्री राकेश कुमार के नाम से उक्त भवन का नामांतरण इस कार्यालय का आदेश क्र. 421 दिनांक 20.04.2022 के द्वारा किया गया है। वर्तमान में आबंटी श्रीमती वीणा सिंह पति स्व. श्री राकेश कुमार निवासी-डी.के. शर्मा एडव्होकेट के घर के पास, शिवानंद नगर सेक्टर-4 खमतराई तह. व जिला रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्री राजेश सिंह ठाकुर पिता श्री टीकम सिंह ठाकुर निवासी- मकान नं. 238, तिलक नगर वार्ड नं. 18, गुढ़ियारी रायपुर तह. व जिला रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में विक्रय करना चाहती है। विक्रय अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारानामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन को क्रेता श्री राजेश कुमार ठाकुर पिता श्री टीकम सिंह ठाकुर के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखंड/भवन के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-04, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन
प्रक्षेत्र-4, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)
email ID: eocghbzone5@gmail.com

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी सेजबहार रायपुर में निर्मित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत एलआईजी भवन क्र.-689 श्रीमती नीरजा शुक्ला पति श्री अमित शुक्ला के नाम पर इस कार्यालय का नामांतरण आदेश क्र. 87 दिनांक 06.01.2018 के माध्यम से भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा दिनांक 26.03.2014 को सेलडीड पंजीकृत करा लिया गया है। वर्तमान में आबंटी श्रीमती नीरजा शुक्ला पति श्री अमित शुक्ला निवासी- 551 च/145 ख नई सरदारी खेडा आलमबाग लखनऊ (उ.प्र.) के द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्रीमती अंकिता पाण्डेय पति श्री मनीष तिवारी निवासी- म.नं. 978 आफिसर्स कालोनी गेट नं. 02, चक्र नगर देवेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.) के पक्ष में विक्रय करना चाहते हैं। विक्रय अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन को क्रेता श्रीमती अंकिता पाण्डेय पति श्री मनीष तिवारी के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखंड/भवन के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अंदर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-04, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पालिक निगम, जोन क्र. 5 रायपुर
ईदगाह भाठा, पानी टंकी, रायपुर (छ.ग.)
ph.No. 0771-40455819 Email rmczone5@gmail.com

ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना

नामांतरण प्र.क्र.-39 दिनांक 12.05.2022
वार्ड का नाम वार्ड- ठाकुर प्यारे लाल-40

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-40 स्थित भूमि RPR759A00127 जो कि निगम अभिलेख में श्रीमती भीमा बाई w/o मदनलाल गजभिये के नाम से दर्ज है जिसको श्रीमती कमला देवांगन w/o श्री जयकुमार 2. जय कुमार देवांगन s/o स्व. परमानंद ने रजिस्ट्री/शपथ पत्र/ लिखित द्वारा वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी।

जोन कमिश्नर
जोन क्रमांक-5
नगर पालिक निगम, रायपुर

कार्यालय, कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग दुर्ग (छ.ग.)
संक्षिप्त मैन्युअल निविदा सूचना क्रमांक-12

ज्ञा.क्र. 1407/व.ले.लि./ग्रा.यां.से./2022-23 — दुर्ग, दिनांक 20/05/2022

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से जोनल निविदा जनपद पंचायत अंतर्गत विभिन्न मदों में वर्ष 2022-23 हेतु स्वीकृत रुपए 10.00 लाख से कम लागत के छोटे-छोटे विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्य का संपादन करने हेतु मैनुअल जोनल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्रं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)
1	2	3
1	जोनल निविदा ग्रुप क्र. 03- जनपद पंचायत दुर्ग अंतर्गत विभिन्न कार्य	20.00
2	जोनल निविदा ग्रुप क्र. 04- जनपद पंचायत दुर्ग अंतर्गत विभिन्न कार्य	20.00

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि विस्तृत निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी http://cg.nic.in/resworks में दिनांक 20/05/2022 से देखी जा सकती है एवं डाउनलोड करने की अंतिम तिथि 03.06.2022 तक है।

कार्यपालन अभियंता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग दुर्ग (छ.ग.)

जी-91435/3

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा मीनल पब्लिकेशन एंड प्रोडक्शन प्रा.लि. शेड नं. 74 सरोरा रोड उरला इंडस्ट्रीयल एरिया से मुद्रित कर ब्रिस्टल चौक छोटापारा रायपुर से प्रकाशित, प्रबंध संपादक - चन्द्रशेखर धोटे, फोन : 0771-4035602, डाक पंजीयन क्रमांक CG/RYP/DN/ 40/2019-2021

'भूल भुलैया2' ने वीकेंड में 56 करोड़ की कमाई की

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी स्टारर हॉरर कॉमेडी फिल्म 'भूल भुलैया 2' ने अपने पहले वीकेंड के दौरान 56 करोड़ की कमाई कर ली है।

कार्तिक आर्यन- कियारा आडवाणी स्टारर 'भूल भुलैया 2' ने अपने पहले वीकेंड यानी सिर्फ तीन दिनों में ही करीब 56 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई कर ली है।ट्रेड एनालिस्ट तरण आर्दश ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर बताया कि लगभग 75 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'भूल भुलैया-2' ने भारत में तीसरे दिन (रविवार) को 23.51 करोड़ रुपए का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया है। फिल्म ने दूसरे दिन (शनिवार) 18.34 करोड़ और पहले दिन (शुक्रवार) 14.11 करोड़ रुपए की कमाई की थी। इस हिसाब से फिल्म ने फर्स्ट वीकेंड यानी सिर्फ तीन दिन में ही अब तक 55.96 करोड़ रुपए का बिजनेस कर लिया है। तरण का मानना है कि यह फिल्म जल्द ही 100 करोड़ का आंकड़ा भी पार कर लेगी।

'भूल भुलैया-2' कार्तिक आर्यन के करियर की हाईएस्ट ग्रॉसिंग ओपनिंग वीकेंड फिल्म बन गई है।

कंगना रनौत ने 'भूल भुलैया 2' की सफलता के लिये कार्तिक आर्यन-कियारा आडवाणी को दी बधाई

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत ने 'भूल भुलैया 2' की सफलता के लिये कार्तिक आर्यन-कियारा आडवाणी को बधाई दी है। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की फिल्म 'भूल भुलैया 2' को बॉक्स ऑफिस पर शानदार ओपनिंग मिली है। वहीं, इस फिल्म के साथ रिलीज हुई कंगना रनौत की 'धाकड़' की बॉक्स ऑफिस पर बहुत खराब शुरुआत हुई है।कंगना ने 'भूल भुलैया 2' की सफलता को लेकर सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है और कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी को बधाई दी है।

कंगना ने इंस्टा स्टोरी पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, ÷हिंदी बॉक्स ऑफिस पर सूखा खत्म करने के लिए भूल भुलैया 2 को बधाई। कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी और फिल्म की पूरी टीम को बधाई।

वरूण - कियारा की फिल्म'जुग जुग जियो' का ट्रेलर रिलीज

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता वरुण धवन और अभिनेत्री कियारा आडवाणी की फिल्म 'जुग जुग जियो' का ट्रेलर रिलीज हो गया है।

राज मेहता द्वारा निर्देशित 'जुग जुग जियो' का ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है।'जुग जुग जियो' में वरुण धवन के पिता अनिल कपूर और मां नीतू कपूर बनी हैं। कियारा आडवाणी इस परिवार की बहू है। लेकिन कहानी में ट्विस्ट तब आता है जब कुकू (वरुण धवन) और नैना (कियारा आडवाणी) अपनी शादी तोड़ना का फैसला लेते हैं। दोनों ने तलाक का डिसीजन लिया है लेकिन दोनों तय करते हैं कि छोटे भाई की शादी के बाद वह घर में इस बारे में सबको बताएंगे वर्ना सब चिंता में आ जाएंगे। लेकिन जब दोनों घर लौटते हैं तो पता चलता है कि कीकू के पिता भीम (अनिल कपूर) का अफेयर चल रहा है और वह भी गीता (नीतू कपूर) से तलाक लेने का सोच रहे हैं। फिर इस कहानी में इमोशनल मोड़ आता है। 'जुग जुग जियो' एक कॉमेडी ड्रामा फिल्म है। करण जौहर के धर्मा प्रॉडक्शन तले बनी इस फिल्म में वरुण धवन, अनि्ल कपूर, कियारा आडवाणी, नीतू कपूर, प्राजक्ता कोहली और मनीष पॉल मुख्य किरदार में नजर आएंगे। यह फिल्म 24 जून को रिलीज होगी।

पूनम ढ़िल्लो की बेटी पालोमा बॉलीवुड में करेगी डेब्यू

मुंबई (वार्ता)। जानीमानी अभिनेत्री पूनम ढ़िल्लो की बेटी पालोमा बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही है।

पूनम ढिल्लों की बेटी पालोमा जल्द ही बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही हैं। पालोमा की पहली फिल्म राजश्री प्रॉडक्शंस की अगली फिल्म होगी, जिससे सनी देओल के बेटे राजवीर भी डेब्यू करने जा रहे हैं। इस फिल्म का निर्देशन सूरज बड़जात्या के बेटे अवनीष बड़जात्या करने जा रहे हैं।

पूनम ढिल्लों ने सोशळ मीडिया पर अपनी बेटी के लिए खास पोस्ट शेयर की है। उन्होंने पालोमा की कुछ तस्वीरें भी शेयर की हैं। इस पोस्ट में पूनम ने लिखा, 'बेहद प्रतिष्ठित राजश्री फिल्म्स, सूरज बड़जात्या, अवनीष बड़जात्याके साथ तुम्हारे लॉन्च के लिए बधाई प्यारी पलोमा ठकेरिया ढिल्लों। इस खूबसूरत लॉन्च के जरिए तुम्हारी मेहनत, कमिटमेंट और टैलंट को ईनाम मिला है। भगवान तुम्हें खूब सफलता दे। लव यू, मुझे तुम पर गर्व है।

मस्तानी एप पर हिंदी में रिलीज हुई डॉनी येन की फिल्म 'ड्रैगन'

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड फिल्मकार हैदर काजमी ने अपने ओटीटी प्लेटफॉर्म मस्तानी पर हॉलीवुड एक्शन आइकन डॉनी येन की फिल्म 'ड्रैगन' हिंदी में रिलीज कर दी है। हैदर काजमी ने बताया कि एक्शन आइकन डॉनी येन की फिल्म 'ड्रैगन' एक मनोरंजक मार्शल आर्ट थ्रिलर है। उन्होंने बताया कि इसकी कहानी एक ऐसे गैंग की है, जिससे एक जासूस क्रूर गैंग से न्याय दिलवाता है। शीर्षक का तात्पर्य है, ड्रैगन वर्तमान में संघर्ष के बारे में नहीं है, यह एक पीरियड एक्शन-ड्रामा है, जिसका आनंद दर्शक केवल मस्तानी ऐप पर ले सकते हैं। गौरतलब है कि हैदर काजमी के 'मस्तानी' एप पर अब तक कई फ़िल्में और वेब सीरिज रिलीज हो चुकी है।

न्यूज गैलरी

अकासा एयर सेवा शुरू करने को तैयार

नई दिल्ली (वार्ता)। अरबपति निवेशक राकेश झुनझुनवाला की अकाशा एयर ने सोमवार को अपने पहले विमान के चित्र का अनावरण करते हुए संकेत दिया है कि कंपनी जल्द ही भारतीय विमानन सेवा क्षेत्र में अपना परिचालन शुरू करने जा रही है। यह बोइंग 737 श्रेणी का विमान है। कंपनी ने एक तस्वीर के साथ ट्विटर पर लिखा,''अब सब्र नहीं रख सकते, हमारे क्यूपी-पाई का स्वागत कीजिए।''

अकासा एयरलाइन इस वर्ष के जुलाई में अपनी पहली वाणिज्यिक उड़ान शुरू करने की योजना बना रही है। इससे पहले कहा गया था कि एयरलाइन का कोड 'क्यूपी' होगा। एसएनवी एविएशन के ब्रांड अकासा एयर ने नवंबर 2021 में करीब 9 अरब डॉलर में 72 बोइंग 737 मैक्स हवाईजहाजों की खरीद का ऑर्डर दिया था। वह एयरलाइन ने 737 मैक्स के दो मॉडलों- 737-8 और उच्च क्षमता वाले 737-8-200 विमान खरीदने वाली है।

ज्योति ने 100 मीटर बाधा दौड़ में तोड़ा अपना ही रिकॉर्ड, जीता स्वर्ण

लीसेस्टरशायर (इंग्लैंड), (वार्ता)। भारत की 100 मीटर बाधा धावक ज्योति याराजी ने ब्रिटेन में लोफ्बोरो अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स की 100 मीटर बाधा दौड़ में अपना ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता। 22 वर्षीय ज्योति ने रविवार को आयोजित 100 मीटर बाधा दौड़ को 13.11 सेकंड में पूरा किया। इससे पहले ज्योति ने 10 मई को साइपरस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में यह दौड़ 13.23 सेकंड में पूरी करते हुए स्वर्ण पदक जीता था। ज्योति से पहले यह रिकॉर्ड अनुराधा बिस्वाल के नाम था जिन्होंने 20 साल पहले 2002 में 13.38 सेकंड में 100 मीटर बाधा दौड़ पूरी की थी। पिछले महीने आयोजित फेडरेशन कप में, ज्योति ने 13.09 सेकंड में यह दौड़ पूरी की थी, लेकिन उनके इस प्रयास को गिना नहीं गया क्योंकि हवा 2.0 की वैध सीमा से ऊपर (2.1+) थी। साथ ही भारतीय स्प्रिंटर अमलान बोरगोहेन ने पुरुष 200 मीटर प्रतियोगिता में 21.27 सेकंड की टाइमिंग के साथ पांचवा स्थान हासिल किया। अप्रैल में हुए कोझिकोड फेडरेशन कप में असम के बोरगोहेन ने मुहम्मद असद के पोलैंड (2018) में बनाये गये 20.62 सेकंड के रिकॉर्ड को तोड़ते हुए 20.52 सेकंड में 200 मीटर दौड़ पूरी की थी।

शेयर बाजार में गिरावट

मुंबई (वार्ता)। वैश्विक बाजार की तेजी के बावजूद ऊंचे भाव पर धातु, बेसिक मैटेरियल्स, ऊर्जा, हेल्थकेयर, दूरसंचार, यूटिलिटीज, रियल्टी और तेल एवं गैस समेत 11 समूहों में हुई बिकवाली से आज कारोबार के पहले दिन शेयर बाजार में गिरावट रही।

धातु समूह में आठ प्रतिशत से अधिक के भूचाल ने शेयर बाजार में दबाव बनाया, जिससे बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 37.78 अंक फिसलकर 54288.61 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 51.45 अंक टूटकर 16214.70 अंक पर आ गया। इस दौरान छोटी और मझौली कंपनियों में अधिक बिकवाली हुई, जिससे बीएसई का मिडकैप 0.26 प्रतिशत गिरकर 22,449.32 अंक और स्मॉलकैप 0.64 प्रतिशत उतरकर 26,182.06 अंक पर रहा।

बीएसई में कुल 3577 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1988 में गिरावट जबकि 1420 में तेजी रही वहीं 169 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह एनएसई में 25 कंपनियों में बिकवाली जबकि शेष 25 में लिवाली हुई। इस दौरान बीएसई के 11 समूह लुढ़क गए। धातु समूह में सबसे अधिक 8.33 प्रतिशत की गिरावट रही। इसके अलावा बेसिक मैटेरियल्स 4.08, ऊर्जा 1.47, हेल्थकेयर 1.03, दूरसंचार 1.03, यूटिलिटीज 1.12, तेल एवं गैस 1.74, पावर 0.95 और रियल्टी समूह के शेयर 1.15 प्रतिशत गिर गए।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेजी का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफ्टीएसई 0.85, जर्मनी का डैक्स 0.49, जापान का निक्केई 0.98 प्रतिशत और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.01 प्रतिशत चढ़ गया जबकि हांगकांग के हैंगसेंग में 1.19 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 134 अंक की तेजी के साथ 54,459.95 अंक पर खुला लेकिन बिकवाली के दबाव में आ गया। लिवाली शुरू होने से यह लगातार बढ़ता हुआ दोपहर बाद 54,931.30 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। हालांकि कारोबार के अंतिम चरण में अचानक हुई बिकवाली से यह 54,191.55 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। अंत में पिछले दिवस के 54,326.39 अंक के मुकाबले 0.07 प्रतिशत फिसलकर 54,288.61 अंक पर रहा। निफ्टी भी 25 अंक बढ़कर 16,290.95 अंक पर खुला और कारोबार के दौरान 16,414.70 अंक के उच्चतम जबकि 16,185.75 अंक के न्यूनतम स्तर पर रहा।

केटीएम की दिल्ली में एडवेंचर एकेडमी

नई दिल्ली (वार्ता)। भारत की सबसे तेजी से बढ़ रहे प्रीमियम मोटरसाइकिल ब्रांड केटीएम ने दिल्ली में केटीएम एडवेंचर एकेडमी का आयोजन किया है।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि केटीएम एडवेंचर एकेडमी एक क्लोज्ड-सर्किट कार्यक्रम है, जिसे केटीएम अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के मार्गदर्शन में विशेष रूप से डिजाइन किया गया है और इसका संचालन केटीएम के उस्ताद प्रशिक्षकों द्वारा किया जाता है। इस कार्यक्रम का लक्ष्य केटीएम एडवेंचर रेंज के मालिकों को महत्वपूर्ण ट्रेल राइडिंग और ऑफ-रोडिंग कौशल का प्रशिक्षण प्रदान करना है। एडवेंचर एकेडमी के इस संस्करण का संचालन थ्रोटल शोटल मोटो रैंच, दिल्ली में किया गया। उत्कृष्ट और बाइकिंग-पक्षीय

अनुभव प्रदान करने के लक्ष्य के साथ आयोजित इस कार्यक्रम को जबरदस्त समर्थन मिला। इस कार्यक्रम में केटीएम एडवेंचर के ग्राहकों ने भाग लिया। उनसे अपनी ऑफ-रोडिंग कुशलताओं को बेहतर बनाने और खुद में छिपे एडवेंचर की खोज करने के लिए अनेक प्रकार के अभ्यास कराये गए। केटीएम एडवेंचर एकेडमी की संकल्पना भारतीय राइडिंग समुदाय में एडवेंचर राइडिंग की संस्कृति फैलाने के उद्देश्य से की गई है। यह आयोजन कुछ सर्वश्रेष्ठ ऑफ-रोडिंग अभ्यासों और राइड्स के साथ अनुभवी राइडर्स को नियुक्त करेगा जबकि नौसिखिए राइडर्स को अपनी ऑफ-रोड कुशलताएं विकसित करने की दिशा में पहला कदम बढ़ाने का अवसर प्राप्त होगा। दिल्ली में इस आयोजन में ग्राहकों को विभिन्न ऑफ-रोड अभ्या सों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया। अगले कुछ महीनों में पूरे देश में प्रमुख शहरों में नियमित रूप से केटीएम एडवेंचर एकेडमी का संचालन किया जाएगा।

वेस्ट इंडीज़ के खिलाफ एकदिवसीय श्रंखला के लिये शादाब की टीम में वापसी

इस्लामाबाद (वार्ता)। पाकिस्तान के शीर्ष लेग स्पिनर शादाब खान को वेस्ट इंडीज़ के खिलाफ होने वाली एकदिवसीय श्रंखला के लिये 16-सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। ग्रोइन चोट के कारण शादाब ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हुई एकदिवसीय श्रंखला से बाहर हो गये थे, मगर अब वह ऑल-राउंडर मोहम्मद नवाज़ के साथ टीम में वापसी कर रहे हैं।

पाकिस्तान ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चुनी गयी 21-सदस्यीय टीम की तुलना में इस बार 16-सदस्यीय टीम का चयन किया है। जिन खिलाड़ियों को बाहर रखा गया है उनमें आसिफ़ अफ़रीदी, आसिफ़ अली, हैदर अली और उस्मान कादिर का नाम शामिल है। सऊद शकील की साइनसाइटिस की सर्जरी होनी है, जिस कारण उन्हें भी टीम में शामिल नहीं किया गया है।

पाकिस्तान के मुख्य चयनकर्ता मोहम्मद वसीम ने कहा, ÷वेस्ट इंडीज़ के खिलाफ होने वाले मैच आईसीसी क्रिकेट विश्व कप 2023 क्वालिफिकेशन के लिये महत्वपूर्ण हैं, इसलिये हमने फैसला किया है कि हम अपनी टीम को ज्यादा से ज्यादा पॉइंट हासिल करने का मौका देंगे और विश्व कप में पहुंचने की अपनी दावेदारी मज़बूत करेंगे।

भारत और अमेरिका ने किया निवेश प्रोत्साहन करार

टोक्यो (वार्ता)। भारत और अमेरिका ने आज यहां निवेश प्रोत्साहन करार (आईआईए) किया।

भारत के विदेश सचिव विनया क्वात्रा और अमेरिका के यूएस इंटरनेशनल डेवलपमेंट फाइनेंस कार्पोरेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी स्कॉट नाथन ने इस करार पर हस्ताक्षर किये। आज का यह करार वर्ष 1997 में किये गये आईआईए का स्थान लेंगा। वर्ष 1997 में किये गये करार के बाद से बहुत से बदलाव आये हैं और इसको ध्यान में रखते हुये पुराने करार में कुछ अहम बदलाव किये गये हैं।

अमेरिका के नये डीएफसी के साथ फिर से करार करने की वैधानिक बाध्यता थी और भारत को निवेश सहयोग जारी करने के लिए भी यह जरूरी था। डीएफसी या उसकी पुरानी एजेंसियों वर्ष 1974 से भारत में सक्रिय है और अब तक 5.8 अरब डॉलर का सहयोग किया जा चुका है।

सोनी पेश कर रहा है नया ईएफ 24-70mm एफ 2.8 जीएम II

दुनिया का सबसे छोटा और सबसे हल्का [i] एफ2.8 स्टैंडर्ड जूम लेंस

नई दिल्ली। सोनी इंडिया ने आज अपने मिररलेस ई-माउंट लाइनअप में 67वें बहुप्रतीक्षित लेंस ईएफ24-70mm एफ 2.8 जीएमII (मॉडल SEL2470GM2) की घोषणा की। सोनी की जी मास्टर सीरीज़ के लिए जाना जाने वाला शानदार रिज़ॉल्यूशन और सुंदर बोकेह देने के लिए सोनी ने1 अपनी प्रमुख लेंस तकनीक को इस्तेमाल करके दुनिया का सबसे हल्का F2.8 स्टैंडर्ड जूम लेंस विकसित किया है। ईएफ 24-70mm एफ2.8 जीएमII लाइन-अप में सबसे अधिक उपयोगी लेंसों में से एक है और इसे फोटोग्राफ़र्स, वीडियोग्राफ़र्स और हाइब्रिड कॉन्टेंट क्रिएटर्स के लिए बनाया गया था। सोनी इंडिया के डिजिटल इमेजिंग हेड मुकेश श्रीवास्तव ने कहा कि, सोनी ने ईएफ 24-70mm एफ 2.8 जीएमII से स्टिल इमेजेस और वीडियो के लिए एक्सप्रेशन और यूजेबिलिटी को नए लेवल पर पहुंचा दिया है। हम अपने ग्राहकों को सबसे अच्छी इमेजिंग तकनीक देने के लिए हमेशा सुधार करने की कोशिश कर रहे हैं। हमने ईएफ 24-70mm एफ 2.8 जीएम II को क्रिएटर्स के फीडबैक के आधार पर डिज़ाइन किया है।

एचडीएफसी बैंक ने को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च करने के रिटेलियो के साथ की साझेदारी

मुंबई (वार्ता)। निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक और बी2बी फार्मा मार्केटप्लेस रिटेलियो ने आज को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड की एक नई रेंज लॉन्च करने की घोषणा की ।

बैंक ने यहां जारी बयान में कहा कि ये बी2बी क्रेडिट कार्ड मुख्य रूप से मर्चेंट सेगमेंट में केमिस्ट और फार्मेसी के लिए बनाए गए हैं। ये बी2बी क्रेडिट कार्ड रिटेलियो के एक लाख से भी अधिक मौजूदा ग्राहकों के साथ-साथ नए ग्राहकों के लिए भी उपलब्ध होंगे। इस साझेदारी के द्वारा पहले चरण में 1.4 लाख से भी अधिक व्यापारियों को कवर किया जाएगा। इस बी2बी क्रेडिट कार्ड रेंज के जरिए दोनों भागीदारों की साख एवं शक्ति का लाभ उठाते हुए ग्राहकों को बेहतर मूल्य और अनुभव प्रदान किया जाएगा। एचडीएफसी बैंक के पास 6 करोड़ से अधिक क्रेडिट डेबिट और प्रीपेड कार्ड्स का आधार है और ये बैंक हर तरह के मार्केट सेगमेंट के अंदर 'पेमेंट इकोसिस्टम' में अग्रणी है।

सराहना... वह अभी भी बहुत कम उम्र के हैं, उसे अपने खेल को समझना होगा-रवि

वॉशिंगटन सुंदर भारतीय क्रिकेट के भविष्य हैं : शास्त्री

मुंबई (वार्ता)। रविवार को घोषित किए गए टी20 और टेस्ट दल में वॉशिंगटन सुंदर जगह बनाने में कामयाब नहीं हो पाए हैं। इसके बावजूद पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री का मानना है कि वॉशिंगटन भविष्य में भारत के तीनों प्रारूपों के हरफ़नमौला खिलाड़ी बनेंगे। वॉशिंगटन का टेस्ट डेब्यू शास्त्री के कोचिंग कार्यकाल के दौरान ही हुआ था। साल 2021 में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर उन्होंने भारतीय टीम की जीत में एक अहम भूमिका निभाई थी।

शास्त्री ने क्रिकइंफ़ो के शो टी20 टाइम आउट में कहा, ÷वह भविष्य में भारत के प्रमुख ऑलराउंडरों में से एक होने जा रहे हैं। वह भारतीय क्रिकेट का भविष्य हैं। आपके पास रवींद्र जडेजा आज हैं। तीन साल बाद अगर वह फ़िट रहे तो खेलेंगे, अक्षर पटेल भी हैं लेकिन यह खिलाड़ी आने वाले समय में तीनों प्रारूपों का प्रमुख ऑलराउंडर होगा। उन्होंने कहा, वॉशिंगटन एक गंभीर क्रिकेटर है। वह अभी भी बहुत कम उम्र के हैं, उसे अपने खेल को समझना होगा। सफ़ेद गेंद की प्रारूप में शॉट चयन में वह जल्द ही सुधार करेंगे। उन्हें अपनी फ़िटनेस पर काम करना होगा ताकि वह चोट से ग्रस्त न हो। कोई बहाना नहीं। वह एक्स, वाई, जेड पर निर्भर नहीं हो सकता। उसे खुद को आईने में देखना होगा और कहना होगा कि मैं कड़ी मेहनत करना चाहता हूं और मैं अगले तीन वर्षों में भारतीय क्रिकेट में अग्रणी ऑलराउंडर बनना चाहता हूं और वह आसानी ऐसा कर सकता है।

शास्त्री ने कहा कि 22 वर्षीय वॉशिंगटन टेस्ट टीम में आसानी से फ़िट हो सकते हैं, लेकिन उन्हें टी20 में अपनी बल्लेबाज़ी पर काम करने की ज़रूरत है। शास्त्री ने कहा, 'टी20 में शॉट्स के चयन में पर उन्हें काम करना होगा। टेस्ट क्रिकेट में वह भविष्य में नंबर 6 के स्थान पर कब्ज़ा कर सकते हैं। विदेशों में वह आपको एक विशेषज्ञ स्पिनर के तौर पर गेंदबाज़ी करते हुए टीम को संतुलन देते हैं। भारत में वह नंबर 6 पर बल्लेबाज़ी कर सकते हैं। टी20 क्रिकेट में वह गेंदबाज़ी कर सकते हैं। उसकी गेंदबाज़ी में कोई समस्या नहीं है। उन्हें सिर्फ़ यह समझना है कि किस खिलाड़ी को कौन से लेंथ पर गेंदबाज़ी करनी है। वहीं इसी शो में डेनियल वेटोरी ने कहा, ÷वॉशिंगटन को नंबर 6 बल्लेबाज़ बनने के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट में और समय चाहिए। वेटोरी ने कहा, ÷कभी-कभी उनके पास किसी ऐसी तकनीक होती है जो बड़ी गेंदों को हिट करने के लिए कभी पीछे नहीं हटते। मेरे हिसाब से रवि सही कह रहे हैं, उनके पास वह कौशल है। हालांकि वॉशिंगटन को नंबर 6 बल्लेबाज़ बनने के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट में और समय चाहिए। वेटोरी ने आगे कहा, ÷मेरे पास एक सवाल है कि आप जडेजा जैसे किसी खिलाड़ी को देखें जिसे प्रथम श्रेणी ने निपुण बनाया, उन्होंने वहां हज़ारों गेंदों का सामना किया है।

बायर ने लांच किया एंटी फंगल उत्पाद

नई दिल्ली (वार्ता)। बायर के उपभोक्ता स्वास्थ्य इकाई ने केनेस्टेन नाम से भारत में अपने एंटी-फंगल समाधानों को पेश कर अपने डर्मेटोलॉजी पोर्टफोलियो के विस्तार की घोषणा की है।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि यह उत्पाद पाउडर और क्रीम फॉर्मेट में उपलब्ध है और इसमें अनेक एंटी-फंगल गुण मौजूद हैं, जो त्वचा के संक्रमणों की रोकथाम और इलाज में मदद करते हैं। केनेस्टेन त्वचा के संक्रमण को नियंत्रित करने वाला एक फुल-साइकल फार्मूलेशन है, जो खुजली से राहत देता है और संक्रमण को फैलने से रोकता है।20 से 35 वर्ष की आयु की भारतीय महिलाओं में फंगल इंफेक्शंस के मामलों को समझने के लिये केनेस्टीन ने एक अध्ययन शुरू किया था।

इस अध्ययन को ब्राण्ड ईजन इनसाइट्स ऐंड एनालीटिक्स ने भारत के सभी भागों में शहरी महिलाओं पर अप्रैल-मई 2022 में संचालित किया था। इसमें पाया गया कि पिछले एक साल में 94 प्रतिशत महिलाओं को कोई-न-कोई फंगल इंफेक्शन हुआ था। सबसे आम तौर पर 61 प्रतिशत महिलाओं को खुजली के रूप में एंटी-फंगल इंफेक्शन हुआ था और इन पीड़िताओं में से 67 प्रतिशत इसे सबसे ज्यादा प्राथमिकता देना चाहती हैं। लगभग 50 प्रतिशत महिलाओं ने इस इंफेक्शन के तुरंत उपचार के तौर पर प्रिकली हीट / टेलकम पाउडर का इस्तेमाल किया। हालाँकि, 75 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी फंगल संक्रमणों के समाधान के तौर पर साबुन या एंटीसेप्टिक लिक्विड या घरेलू नुस्खों को अपनाया।

महानदी में तेज आंधी से नदी में नाव पलटने से महिला की मौत

■ **गहरे पानी में डूबी महिला, मौत, पति की बची जान, पानी से बाहर कर मदद की लगाई गुहार**

रायगढ़/नवप्रदेश। तेज आंधी तूफान की वजह से मछुवारे दंपत्ति की नाव नदी में पलट गई। इस हादसे में महिला की गहरे पानी में डूब जाने की वजह से मौत हो गई। जबकि पति की जान बच गई। नदी से बाहर आकर अपनी पत्नी को बचाने के लिए लोगों से गुहार लगाई, लेकिन जब तब पुलिस व लोग मदद के लिए पहुंचते, बहुत देर हो चुका था। घटना छत्तीसगढ़ रायगढ़ जिले के सरिया थाना क्षेत्र की है। पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच कर रही है। सरिया पुलिस के मुताबिक, 22 मई की शाम थाना सरिया में बरगांव के ग्रामीणों ने थाने में एक महिला महानदी कमला बैराज के पास नदी के गहरे पानी में डूब जाने की सूचना दी।

जिस पर थाना प्रभारी कमल किशोर पटेल एवं स्टाफ गांव के लोगों के साथ कमला बैराज जमड़ी घाट पहुंचे और गोताखारों की मदद से रेसक्यू ऑपरेशन शुरू किया। अंधेरा होने की वजह से रेसक्यू बंद कर दिया गया। सोमवार सुबह दोबारा रेसक्यू शुरू किया गया तो महिला की लाश बीच नदी पर मिला जिसे स्टीमर बोट के जरिए नदी से बाहर लाया गया।

पति ने बाहर निकालने की कोशिश

सरिया पुलिस ने बताया कि बरगांव निवासी संतोष मांझी 22 मई की शाम करीब 5 बजे नाव पर अपनी पत्नी जनता मांझी (26 साल) के साथ मछली मारने कमला बैराज पहुंचा। करीब 6 बजे तेज आंधी आने से नाव जमड़ी घाट के पास नदी में पलट गई दोनों पति पत्नी अलग-अलग दिशा में पानी पर गिरे। दोनों तैरकर पानी से बाहर आने का प्रयास किया। अपनी पत्नी की साड़ी को खींचकर उसे पानी से निकालने का काफी प्रयास किया पर गहरे पानी में जाने से उसे निकाल नहीं पाया और गांव जाकर घरवालों और गांववालों को बताया। जिस पर पुलिस व ग्रामीण मौके पर पहुंचे।

खाना खाने पर विवाद, पति ने की पत्नी की हत्या

रामानुजगंज/नवप्रदेश। त्रिकुंडा थाना अंतर्गत ग्राम पलगी में पति-पत्नी के बीच खाने पीने को लेकर मामूली झगड़ा इतना बढ़ गया कि पति ने पत्नी पर लकड़ी से सिर पर इतना जोरदार वार किया कि मौके पर ही पत्नी की मौत हो गई। घटना पर आरोपी पति के विरुद्ध धारा 302 के तहत मामला पंजीबद्ध कर आरोपी पति को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया जहां से उसे जेल भेज दिया गया। जानकारी के मुताबिक, रविवार के शाम 3 बजे के करीब गुड़ल पंडो उम्र 50 वर्ष का अपने पत्नी फुलबसिया उम्र 46 वर्ष से खाने पीने के बाद को लेकर मामूली कहासुनी होने लगा कहासुनी इतना बढ़ गया कि गुड़ल इतना उग्र हो गया कि डंडे से अपने पत्नी के सिर पर जोरदार वार कर दिया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। पत्नी की हत्या करने के बाद आरोपी पति अपने घर के कमरे में ही छुप गया था जब पुलिस पहुंची तो पूरे घर के कमरों की तलाशी करने लगे तो घर के कमरे में छुपा हुआ मिला जिसे गिरफ्तार कर लिया गया एवं पूछताछ करने पर अपना जुर्म कबूल कर लिया।

स्वाधीनता सेनानियों व शहीदों को सम्मान

मिशन अमृत सरोवर अंतर्गत तालाब निर्माण के लिए इनके गांवों को दी जाएगी प्राथमिकता

■ **हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवर बनाए जाएंगे**

रायपुर/नवप्रदेश। वर्षा जल संरक्षण, भू-जल स्तर में वृद्धि, सिंचाई एवं मत्स्य पालन जैसे बहुआयामी उद्देश्यों को लेकर शुरू किए गए मिशन अमृत सरोवर के अंतर्गत मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) से जारी राशि या अन्य योजनाओं के अभिसरण से राज्य के प्रत्येक जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवरों (तालाबों) के निर्माण या जीर्णोद्धार की कार्यवाही प्रारंभ हो गई है। सभी जिलों में स्थल चयन की कार्यवाही से लेकर प्रशासकीय स्वीकृति जारी करने की प्रकिया मिशन मोड में पूर्ण की जा रही है। गांवों में अमृत सरोवर के निर्माण को ऐतिहासिक बनाने इसके लिए स्थल चयन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और शहीदों के गांवों को प्राथमिकता दी जा रही है। राज्य मनरेगा आयुक्त मोहम्मद कैसर अब्दुलहक ने बताया कि अमृत सरोवर के निर्माण के लिए सभी जिलों के कलेक्टर-सह-जिला कार्यक्रम समन्वयक (मनरेगा) को जारी दिशा-निर्देशों में यह रेखांकित किया गया है कि मिशन अमृत सरोवर में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और शहीदों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कम से कम एक एकड़ क्षेत्रफल में बनाए जाने वाले अमृत सरोवर के लिए चिन्हांकित किए जा रहे गांवों में उन गांवों को प्राथमिकता देनी है जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी या शहीदों से संबंधित हों। मिशन में नागरिकों की सहभागिता बढ़ाने के लिए स्वाधीनता सेनानियों या उनके पारिवारिक सदस्यों या आजादी के बाद शहीद हुए सैनिकों के परिजनों या पद्म पुरस्कार से सम्मानितों द्वारा अमृत सरोवर के कार्य का शुभारंभ कराया जाएगा।

आधारशिला रखने लगाए जाएंगे पौधे

मनरेगा आयुक्त ने बताया कि अमृत सरोवर की आधारशिला रखने, कार्यस्थल पर नीम, पीपल, बरगद जैसी प्रजाति के वृक्षों का पौधरोपण करने एवं प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण का नेतृत्व संबंधित गांव के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी या उनके परिवार के सदस्य, शहीद के परिवार या पद्म पुरस्कार से सम्मानित स्थानीय व्यक्ति के द्वारा कराया जाएगा। यदि अमृत सरोवर के निर्माण के लिए चयनित गांव में ऐसा कोई नागरिक उपलब्ध नहीं है, तो उस ग्राम पंचायत के सबसे वरिष्ठ नागरिक के द्वारा यह कार्य कराया जाएगा।

वर्षों की समस्या की दूर, विधायक के प्रयास से गांव में अब खुलेगा राशन दुकान

■ **ग्रामीणों को राशन के लिए 10 किमी का करना पड़ता था सफर**

छुरिया/नवप्रदेश। राजनांदगांव जिले के खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत मरकाकसा के आश्रित ग्राम कटेंगाटोला ग्रामवासियों को पिछले कई वर्षों की समस्या से अब मुक्ति मिल गई। ग्राम कटेंगाटोला के ग्रामवासी अपनी जरुरत के लिए राशन लेने दस किमी का सफर कर उचित मूल्य की दुकान मरकाकसा जाने को मजबूर थे। पिछले कुछ दिनों से ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से खुज्जी विधायक छन्नी साहू को अवगत कराया जिसके बाद तत्काल प्रभाव से मामले को संज्ञान में लेते हुए विधायक के निर्देश पर अनुविभागीय दंडाधिकारी द्वारा तत्काल आदेश जारी अब कटेंगाटोला में शासकीय ऊचित मूल्य की दुकान खोलने का निर्णय लिया गया है। इस बड़ी समस्या से मुक्त होने के पश्चात कटेंगाटोला के ग्रामवासियों ने विधायक के निज निवास पैरिटोला जा कर उनका आभार व्यक्त एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान प्रमुख रूप से ग्राम पटेल रामसुख, बिसनाथ, संतोष, रामफल, हरसिंह, उदय कुमार, कलेश कुमार, नरेश जयपाल, शिवकुमार, बली, बलेसर, गुड्डु, राजू,मोहित डेरहाराम, बसंत, शिशुपाल सलामे सहित अन्य ग्रामवासी उपस्थित रहे।

बाल संप्रेक्षण गृह से बच्चे भागे, कलेक्टर ने अधीक्षक को निलंबित करने के दिए निर्देश

कोरबा/नवप्रदेश। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित शासकीय बाल संप्रेक्षण गृह (बालक) रिस्दी चौक कोरबा के संचालन में लापरवाही बरतने के कारण संप्रेक्षण गृह के अधीक्षक ी विकास सिंह को निलंबित करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर रानू साहू ने बाल गृह संचालन के देखरेख और सुरक्षा में लापरवाही बरते जाने के कारण अधीक्षक को निलंबित करने के निर्देश कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को दिए हैं।अधीक्षक द्वारा बच्चों के देखरेख और सुरक्षा में चूक के कारण आज सुबह बालगृह से 2 बच्चे भाग गए थे। बच्चों का बाल गृह से भागना अधीक्षक की शासकीय दायित्वों के प्रति लापरवाही दर्शाता है। महिला बाल विकास विभाग कार्यक्रम अधिकारी एमडी नायक ने बताया कि उक्त बाल गृह में कुल 41 विधि से संघर्षरत् किशोर निवासरत् है। जिनमें से दो बच्चे प्रातः 7:30 बजे दीवाल को फांद कर भाग गये । इसकी सूचना पुलिस को दी गई। जिसमें से एक बच्चे की बरामदगी कर लिया गया है तथा दूसरे बच्चे की खोजबीन जारी है। अतः देखरेख एवं सुरक्षा चूक की वजह से दोनो बच्चे भागे। इस मामले में संप्रेक्षण गृह के संचालन में गंभीर लापरवाही बरतने के कारण कलेक्टर ने प्रभारी अधीक्षक बाल संप्रेक्षण गृह को निलंबित करने के निर्देश दिये हैं।

सामाजिक संगठन से की मुलाकात, समीक्षा बैठक में हुए शामिल मंत्री सिंहदेव

■ **कांग्रेस कार्यकर्ताओं के परिजनों और समाज के प्रतिनिधियों ने किया उत्साहपूर्ण स्वागत**

रायगढ़/नवप्रदेश। रायगढ़ जिले के दूसरे दिन के दौरे पर स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव दिन की शुरुआत में स्टेशन चौक स्थित नटवर स्कूल प्रांगण में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व महाशांति यज्ञ में पहुंचे। जहां उन्होंने जैन समाज के मुनि श्री 108 सुयश सागर महाराज और मुनि श्री 108 सद्भाव सागर महाराज का आशीष प्राप्त कर उन्होंने मुनि श्री की प्रतिमा का अनावरण करते हुए दीप प्रज्वलित किया और जैन समाज के साथियों के साथ विश्व शांति की कामना की। इसके उपरांत विश्राम भवन में पत्रकार वार्ता में चर्चा करने के बाद टीएस सिंहदेव कलेक्ट्रेट परिसर में समीक्षा बैठक के लिए रवाना हुए जहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं के परिजनों और सिंधी समाज, रायगढ़ के प्रतिनिधियों से उनकी सौजन्य मुलाकात हुई, इस दौरान कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के परिजनों ने रक्षासूत्र बांधकर तिलक-आरती के साथ श्री सिंहदेव का स्वागत किया और समाज के प्रतिनिधियों के साथ सामाजिक विषयों पर चर्चा की। इसके बाद सिंहदेव चक्रधर नगर स्थित अंबेडकर चौक पहुंचे सतनामी समाज के युवा साथियों ने स्व. लखीराम अग्रवाल स्मृति शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय रायगढ़ के प्रांगण में नवनिर्मित अस्पताल का नाम बाबा गुरु घासीदास के नाम पर समर्पित करने के लिए आभार व्यक्त किया। इसके साथ ही बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर श्री सिंहदेव ने सतनामी समाज के युवा साथियों के साथ पुष्पहार अर्पित कर उन्हें सादर नमन किया।

मंकी पॉक्स का खतरा: छत्तीसगढ़ में भी सभी जिलों को अलर्ट जारी

रायपुर/नवप्रदेश। विदेशों में तेजी से फैल रही बीमारी मंकीपॉक्स को लेकर छत्तीसगढ़ में भी अलर्ट जारी किया गया है। कोरोना का खतरा खत्म भी नहीं हुआ है कि मंकीपॉक्स नाम की एक नई बीमारी ने दस्तक दे दी है। दुनिया भर के 11 देशों में चेचक जैसे लक्षणों वाली इस नई बीमारी से संक्रमित मरीज मिले हैं। नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल और इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने राज्य सरकारों को मंकीपॉक्स की स्थिति पर नजर रखने के लिए कहा है। इसके बाद छत्तीसगढ़ में भी सभी जिलों को सतर्क कर दिया गया है।

छत्तीसगढ़ में महामारी नियंत्रण विभाग के संचालक डॉ. सुभाष मिश्रा ने बताया, अभी अपने देश में मंकीपॉक्स का एक भी केस नहीं मिला है। फिर भी सावधान का स्तर बढ़ा दिया गया है। सभी जिलों को सतर्क कर विस्तृत दिशा-निर्देश भेजे जा रहे हैं। इसके तहत मंकीपॉक्स के लक्षणों वाले हर संदिग्ध मरीज की

शत-प्रतिशत रिपोर्ट करने को कहा गया है। जिलों को कहा गया है कि संदिग्ध मरीज मिलने पर उसे आइसोलेट करने को कहा गया है। उसका नमूना लेकर जांच की जानी है। वहीं मरीज के संपर्क में आए सभी लोगों को ट्रेस कर उनकी जांच की जानी है। यह बीमारी संपर्क में आने से फैल रही है, इसकी वजह से ऐसा करना जरूरी है। हवाई अड्डों पर भी निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। इस बीमारी की जांच प्रदेश में मौजूद वायरोलॉजी लैब में की जा सकती है। कुछ संदिग्ध मरीजों के नमूने पुणे की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वॉयरोलॉजी भेजने को भी कहा है।

मंकीपॉक्स की वजह भी एक वायरस ही है

डॉक्टरों के मुताबिक मंकीपॉक्स एक डबल-स्ट्रैंडेड डीएनए वायरस है जो पॉक्स विरिडे परिवार के ऑर्थोपॉक्स वायरस जीनस से संबंधित है। 1970 में कांगो के एक नौ साल के बच्चे में सबसे पहले यह वायरस मिला था। तबसे पश्चिम अफ्रीका के कई देशों में इसे पाया जा चुका है। इसके लिए कई जानवरों की प्रजातियों को जिम्मेदार माना गया है। इन जानवरों में गिलहरी, गैम्बिया पाउच वाले चूहे, डर्मिस, बंदर आदि शामिल हैं।

चेचक से कम खतरनाक है लेकिन कोई खास दवा भी नहीं

डॉ. सुभाष मिश्रा के मुताबिक अभी तक यही देखा गया है कि यह संक्रमण स्मॉलपॉक्स और चिकनपॉक्स जैसे मिलते-जुलते लक्षणों वाली बीमारियों से कम खतरनाक है। इसकी फिलहाल कोई खास दवा नहीं है। बुखार की दवा दी जाती है। शरीर में पानी का स्तर बनाए रखने की कोशिश होती है। वहीं अन्य संक्रमण से बचाने के लिए एंटीबॉयोटिक की खुराक दी जाती है। तीन-चार दिनों में बीमारी ठीक हो जाती है।

ऐसे लक्षण दिखें तो तुरंत डॉक्टर को बताएं-

मंकीपॉक्स के संक्रमण से लक्षणों की शुरुआत तक आमतौर पर 6 से 13 दिनों तक होती है। कभी-कभी यह 5 से 21 दिनों तक हो सकती है। बुखार, तेज सिरदर्द, लिम्फनोड्स की सूजन, पीठ दर्द, मांसपेशियों में दर्द और थकान जैसे लक्षण आते हैं। शुरुआत में यह चेचक यानी स्मॉलपॉक्स जैसा ही दिखता है। एक से तीन दिन के भीतर त्वचा पर दाने उभरने लगते हैं, वह फटते भी हैं। ये दाने गले के बजाय चेहरे और हाथ-पांव पर ज्यादा केंद्रित होते हैं। यह चेहरे और हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवों को ज्यादा प्रभावित करता है।

अनियंत्रित होकर पलटी बस,12 यात्री घायल, 4 की हालत गंभीर

■ **खरसिया की तरफ से आ रही थी बस, बस पलटने के बाद रोड किनारे चले गई।**

जशपुर। छत्तीसगढ़ के जशपुर में एक बस अनियंत्रित होकर पलट गई है। जिसके कारण 12 यात्री घायल हुए हैं। इनमें से 4 की हालत गंभीर बनी हुई है। बताया जा रहा है कि बस खरसिया से जशपुर की तरफ जा रही थी। इसी दौरान ये हादसा हो गया है। हादसा पत्थलगांव थाना क्षेत्र में हुआ है। बस हादसे के बाद उसका ड्राइवर फरार है। मिली जानकारी के मुताबिक, दोपहर के वक्त एक यात्री बस रायगढ़ जिले के खरसिया से जशपुर के लिए आ रही थी। ये अभी कटनी गुमला सड़क पर डुमरबहार पहुंची थी की ये

हादसा हो गया। आस-पास के लोगों ने बताया कि बस काफी तेज रफ्तार में थी। जबकि रास्ता काफी खराब था। इसके बावजूद बस ड्राइवर गाड़ी को तेज रफ्तार से चला रहा था। इसी कारण गाड़ी अनियंत्रित होकर रोड किनारे चले गई थी।

अफरा-तफरी के बीच अंदर फंसे लोगों को निकाला-

बस पलटने के बाद ड्राइवर गाड़ी छोड़कर ही भाग गया है। बस के अंदर बच्चे और महिलाएं भी सवार थीं। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। आस-पास के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और घायलों को निकालने का काम शुरू किया गया है। वहां से निकालने के बाद घायलों को अस्पताल भेजा गया है। जहां उनका उपचार किया जा रहा है। घायल होने वालों में कुछ महिलाएं भी शामिल हैं। खबर मिलते ही पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची है।

गोबर को लेकर सड़क पर सियासत रायपुर में भाजपाइयों का पैदल मार्च

■ **सहकारी समिति का किया घेराव,कहा-किसानों को दे रहे घटिया खाद**

रायपुर। हाथों में गोबर लिए भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चा के नेता सोमवार को सड़कों पर उतरे। यह सभी नेता जोरा स्थित सहकारी समिति के दफ्तर का घेराव करने पहुंचे। हाथों में गोबर लिए भाजपा नेताओं ने समिति दफ्तर के बाहर जमकर नारेबाजी की। किसान मोर्चा के नेता गौरीशंकर श्रीवास ने समिति के अवसरों पर भ्रष्टाचार करने का गंभीर आरोप लगाया। श्रीवास ने बताया कि किसानों को घटिया क्वालिटी की खाद दी जा रही है। इससे सीधा असर किसान की आमदनी पर पड़ रहा है। हंगामा करते हुए भाजपा नेताओं ने एक ज्ञापन भी सौंपा है, जिस पर कार्यवाही ना हुई तो आने वाले दिनों में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी गई है। भाजपा नेताओं का आरोप है कि छत्तीसगढ़ में किसान विरोधी नीतियां चलाई जा रही है। प्रदेश में किसान अपने विभिन्न समस्याओं को लेकर परेशान है। हालात ये है कि सैकड़ों किसान आत्महत्या कर चुके है। केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार किसानों को यूरिया खाद 625 रूपए प्रति क्विंटल उपलब्ध करा रही है। वहीं प्रदेश में किसानों को अमानक और घटिया खाद रेत, मिट्टी मिला गोबर लेने के लिए प्रति एकड़ 3 बोरी (90किलो) 1000 रूपए क्विंटल में लेने के लिए बाध्यता कर किसानों को लूटने का काम हो रहा है।